RNI NO. DELHIN/2015/61881

www.srojvarta.in

मूल्य : 10 रूपये

सरोज वार्ता

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका | वर्ष-12 | अंक- 06 | पृष्ठ- 44 | जून 2026

गृहिणी राष्ट्रनिर्माता है तो हिंसा की शिकार क्यों?



मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

शक्ति से समृद्धि



नारी
उत्तर प्रदेश
के विकास
की धुरी

नवनिर्माण के 9 वर्ष

सुरक्षा से समझौता नहीं
सभी थानों में 'मिशन शक्ति' केंद्र

मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना
26.81 लाख+
बेटियां सशक्त

निराश्रित महिलाओं को पेंशन

लखपति दीदी योजना
18.55 लाख+
महिलाएं बनीं लखपति

महिला श्रम बल भागीदारी
13% से बढ़कर 36%

1 करोड़+
ग्रामीण महिलाएं बनीं आत्मनिर्भर

मेधावी छात्राओं को स्कूटी का उपहार

कामकाजी महिलाओं के लिए
श्रमजीवी महिला छात्रावास

महिला उद्यमी क्रेडिट कार्ड
ब्याज मुक्त ऋण

10,400+
स्टार्ट-अप का नेतृत्व



विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

BREAKING NEWS

www.srojvarta.in



RNI NO. DELHIN/2015/61881
राष्ट्रीय
सरोज वार्ता
हिन्दी मासिक पत्रिका
मूल्यः 10 रूपये
वर्ष-12 । अंक - 06 । जून 2026
संरक्षक : रामकुमार सिंह
प्रधान संपादक : जगत किशोर सोलंकी
संपादक : अनुराग प्रताप
विधि सलाहकार : ललित पराशर
ग्राफिक डिजाइनर : सहदेव माहौर
मार्किटिंग मेनेजर : कृष्ण कुमार (उत्तर प्रदेश)

ब्यूरो प्रमुख
उत्तर प्रदेश : कृष्ण कुमार
राजस्थान : सौमेंद्र सिंह
दिल्ली : रिचा जोशी
छत्तीसगढ़ : विजय कुमार

संपादकीय, विज्ञापन एवं प्रसार कार्यालय
सरोज वार्ता, आर जेड ए 3/73 गली न. 3ए दुर्गा पार्क नई दिल्ली-110045

फोनं,: 09456004121, 09555253051, 9899864010

www.srojvarta.in
sarojvartanews@gmail.com
srojvartanews@gmail.com

क्षेत्रिय कार्यालय (उत्तर प्रदेश)
नियर हनुमार मंदिर, अमापुर सिद्धपुर रोड़, सिद्धपुर जिला, कासगंज

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। सभी पद अवैतनिक हैं। विज्ञापन की सत्यता की जांच स्वयं कर लें। इसकी जिम्मेदारी उनकी है, एवं इसके प्रकाशक एवं संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायलय के अधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अनुराग प्रताप द्वारा मैसर्स जवाद लीठोफराफर (M/s Jawaad Lithofrapher) 3622, दीनाबेग, लाल कुंआ, दिल्ली : 6 द्वारा मुद्रित व आर.जेड. ए : 3/73, गली नं. 3ए दुर्गा पार्क नई दिल्ली : 45 से प्रकाशित
संपादक : अनुराग प्रताप

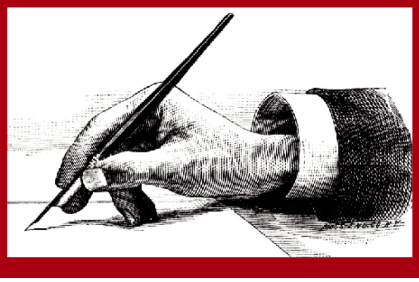
महिलाओं के खिलाफ हिंसा

यूं तो भारतीय समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने के तमाम दावे गाहे-बगाहे किए ही जाते हैं। आधी दुनिया को पूरा हक देने की बात होती है। किंतु-परंतु के बीच उन्हें जनप्रतिनिधि संस्थाओं में 33 फीसदी आरक्षण देने पर प्रतिबद्धता जतायी जाती है। लेकिन इन दावों के बीच सामने आया एक कड़वा सच हमें वास्तविक स्थिति से रूबरू करा देता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6 की रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि देश में ग्रामीण इलाकों में हर चौथी और शहरी क्षेत्र में हर छठी महिला किसी न किसी रूप में हिंसा का शिकार होती रही है। यह विडंबना ही है कि शहरों की तुलना में ज्यादा शांत व सुरक्षित माने जाने वाले ग्रामीण इलाकों में स्त्रियों को घरेलू एवं यौन हिंसा का ज्यादा सामना करना पड़ता है। वीरवार को सुप्रीम कोर्ट ने गृहिणियों के योगदान को राष्ट्र के उत्थान में महत्वपूर्ण बताते हुए उन्हें नेशन बिल्डर तक कह दिया। यहां तक कि घर और परिवार की देखभाल में गृहिणियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों के कल्पित आर्थिक मूल्य का निर्धारण करते हुए उसे नजरअंदाज न करने की सलाह दी। यह विडंबना ही है कि जिन महिलाओं को सुप्रीम कोर्ट नेशन बिल्डर बता रहा है, उन्हें हम सुरक्षा नहीं दे पा रहे हैं। आखिर महिला सशक्तीकरण के सारे विशेष प्रयास सिर्फ कागजों तक ही क्यों सिमट जाते हैं? आखिर क्या वजह है कि महिलाओं की रक्षा-सुरक्षा हेतु तमाम विशेष कानून बनाये जाने के बावजूद जमीनी हकीकत नहीं बदलती है। इसमें दो राय नहीं कि समय-समय पर महिला उत्थान के लिये तमाम महत्वपूर्ण योजनाएं और अभियान चलाये जाते रहे हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि विकासात्मक कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। जीवन के हर क्षेत्र में वे अपना आकाश तलाश रही हैं। विधायिका में तैंतीस प्रतिशत आरक्षण देने के मुद्दे पर सभी राजनीतिक दल सहमत नजर आते हैं। सवाल यही है कि जीवन व्यवहार में स्थिति क्यों नहीं बदलती। देश के नीति-नियंताओं को इस गंभीर मुद्दे पर विचार करना होगा कि महिलाओं की सुरक्षा के लिये तमाम विशेष कानून बनाये जाने के बावजूद क्यों ग्रामीण क्षेत्रों में हर चौथी व शहरी क्षेत्र में हर छठी स्त्री को हिंसा व यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ रहा है। आखिर क्या वजह है कि घर से लेकर बाहर तक वे खुद को सुरक्षित नहीं महसूस कर पा रही हैं? क्या कहीं इसमें पितृसत्ता प्रधान समाज की मानसिकता कारण है? दरअसल, आज लड़कियों व महिलाओं के खिलाफ हिंसा कई रूपों में मौजूद है। आजादी के सात दशक बाद भी हम दहेज के कलंक से मुक्त नहीं हो पाये हैं। हाल के दिनों में दहेज हत्या के कई बहुचर्चित मामले प्रकाश में आए। एक लड़की की पढ़ाई से लेकर शादी तक मां-बाप काफी खर्च करते हैं, फिर दहेज देने की जरूरत क्यों? छोटी-छोटी बातों में महिलाओं से मारपीट की खबरें आती हैं। वहीं अदिवासी व पिछड़े इलाकों में महिलाओं को डायन बताकर मारने की घटनाएं सामने आती हैं। हमारा समाज आज भी अंधविश्वासों और जादू-टोने के भय से मुक्त नहीं हुआ है। जिसके चलते महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मामले सामने आते हैं। सर्वेक्षण का यह तथ्य चौंकाता है कि 18 से 49 आयु वर्ग की विवाहिताओं में बाईस फीसदी को वैवाहिक जीवन में घरेलू हिंसा का शिकार होना पड़ा है। हालांकि, समय के साथ हिंसा के आंकड़ों में गिरावट आई है, लेकिन ?इसके बावजूद स्थिति चिंता पैदा करती है। जो किसी सभ्य समाज के माथे पर एक दाग की तरह ही है। हमारी व्यवस्था की विसंगतियां, पुरुष प्रधान सोच और हिंसा रोकने के लिये बनाए गए कानूनों के क्रियान्वयन में खामियां महिलाओं को पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध कराने में बाधक हैं। जो सामाजिक विसंगति की ओर इशारा करता है। यदि समय रहते कानून प्रवर्तन एजेंसियां संवेदनशील ढंग से कदम उठायें तो महिलाएं खुद को घर-बाहर सुरक्षित महसूस कर सकती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर अवस्था के दौरान यौन-हिंसा का शिकार होने का प्रतिशत शहरों के मुकाबले अधिक होना, ग्रामीण समाज में विद्रूपताओं को दर्शाता है। जरूरी है कि ग्रामीण समाज में महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजग किया जाए।

● अनुराग प्रताप



जगत किशोर सोलंकी



निरंकुशता के निशाने

खाड़ी में ईरान की नाकेबंदी की कवायद के दौरान अमेरिकी हमलों में तीन भारतीय नाविकों का मारा जाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। जिसको लेकर देश में गम व गुस्सा व्याप्त है। यूं तो कहा जाता रहा है कि भारत अमेरिका का रणनीतिक साझेदार है और क्वॉड जैसे संगठनों में भूमिका निभा रहा है, तो फिर लगातार भारत के हितों पर कुठाराघात क्यों किया जा रहा है? भले ही अमेरिका ईरान की तेल निर्यात से होने वाली आय रोकने व युद्ध समाप्त करने हेतु समझौते के लिये दबाव बनाने हेतु ये आक्रामक नीति अपना रहा हो। लेकिन जिन देशों का युद्ध से कोई लेना-देना नहीं है, उनके नागरिकों को क्यों निशाना बनाया जा रहा है? हाल में भारतीय चालक दल वाले तीन टैंकरों को अमेरिकी सेना द्वारा निशाना बनाया गया है। इसमें से, ओमान की खाड़ी में एक जहाज पर हुए हमले में भारतीय चालक दल के तीन सदस्य मारे गये हैं। जिससे भारत व अमेरिका के बीच कूटनीतिक तनाव बढ़ने की आशंका बढ़ गई है। वैसे औपचारिक विरोध दर्ज करते हुए भारत ने दिल्ली में एक अमेरिकी राजनयिक को तलब भी किया है। इसके बावजूद भारत के खिलाफ लगातार नकारात्मक रवैया दर्शाने वाले अमेरिका के खिलाफ सख्त स्टैंड लेने की मांग की जा रही है। इसके बावजूद कि भारत क्वॉड में अमेरिका का साझेदार है। विडंबना यह भी है कि जो सूत्रधार संगठन के जरिये समुद्री आवाजाही को स्वतंत्र बनाने की बात करता है, वही अमेरिका इसमें बाधक बना है। भले ही अमेरिका इन जहाजों के प्रतिबंधित होने की बात कहे, या जहाज भारतीय न हों, लेकिन उनमें चालक दल के सदस्य तो भारतीय थे। इसकी जानकारी स्वाभाविक रूप से अमेरिका के खुफिया तंत्र को जरूर रही होगी। अमेरिका को सार्वजनिक रूप से भारतीय नाविकों के मारे जाने पर खेद जताना चाहिए। निश्चय ही भारत के निकट के समुद्री क्षेत्र में अमेरिका का निरंकुश व्यवहार निंदनीय है। कूटनीतिज्ञ विशेषज्ञ कह रहे हैं कि भारत को इस मुद्दे को सख्ती से अमेरिका के सामने उठाना चाहिए था। तमाम भारतीयों को इस मामले में विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया उदार लगती है। सवाल पूछा जा रहा है कि यदि तीन अमेरिकी नागरिक मारे जाते तो क्या अमेरिका चुप बैठता? कहा जा रहा है कि भारत का कड़ा विरोध सामने न आने के कारण होर्मुज स्ट्रेट के पास पलाऊ के झंडे वाले टैंकर पर अमेरिकी हमले में तीन भारतीय के मारे जाने की घटना की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कम चर्चा हुई है। विडंबना है कि अमेरिकी सेना ने एक सप्ताह में भारतीय चालक दल वाले तीन टैंकरों को निशाना बनाया। हालांकि, सोमवार को हुए हवाई हमले के बाद ओमानी अधिकारियों ने 24 भारतीयों को सुरक्षित निकाल लिया था। दरअसल, ट्रंप प्रशासन की निरंकुशता के चलते ही अमेरिका रवैया वैश्विक व्यवस्था को चुनौती दे रहा है। आखिर अंतर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में कारोबारी जहाजों को निशाना बनाने का क्या औचित्य है? अमेरिका को यह अधिकार किसने दे दिया कि वह तटस्थ देशों के नागरिकों को निशाना बनाये? क्यों भारतीय नागरिक अमेरिका व ईरान के बीच जारी संघर्ष की कीमत चुकाएं? इस तरह का शक्ति प्रदर्शन संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सीधा उल्लंघन है तथा स्वतंत्र नौवहन के मार्ग में बाधक है। भारतीयों का गुस्सा तब कम हो जाता यदि अमेरिका मरने वाले नाविकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त कर देता। सही मायने में अमेरिका भारत को अपने कारोबारी हितों के साधन के रूप में तो इस्तेमाल करना चाहता है, लेकिन भारतीय आत्मसम्मान व संप्रभुता का मान नहीं रखता। भारत को बदलती अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप ही अपनी कूटनीति का निर्धारण करना चाहिए। हमें दुनिया को बताना चाहिए कि भारत एक उभरता बाजार ही नहीं है, बल्कि सबसे बड़ी आबादी वाला दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी है। दुनिया को संदेश जाना चाहिए कि हम अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमाओं में अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम हैं। अब चाहे सामने अमेरिका हो या चीन जैसे कोई अन्य देश। भले ही अंतर्राष्ट्रीय सीमा में कई जहाज भारत के स्वामित्व वाले न हों, लेकिन चालक दलों में शामिल भारतीय नागरिकों की सुरक्षा हर कीमत पर की जानी चाहिए।



गृहिणी राष्ट्रनिर्माता है तो हिंसा की शिकार क्यों?

सरोज वार्ता/ब्यूरो

भारतीय समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने के दावे लंबे समय से किए जाते रहे हैं। उन्हें 'आधी आबादी' और विकास की समान भागीदार कहा जाता है। शिक्षा, रोजगार, राजनीति और नेतृत्व के क्षेत्र में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए अनेक योजनाएं बनाई जाती हैं। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की प्रतिबद्धता जताई जाती है। सरकारें महिला सशक्तीकरण को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल करती हैं और समाज भी महिलाओं की उपलब्धियों पर गर्व व्यक्त करता है। लेकिन इन सबके बीच कुछ ऐसे तथ्य सामने आते हैं, जो हमें इस सशक्तीकरण के वास्तविक स्वरूप पर पुनर्विचार करने के लिए विवश करते हैं। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने गृहिणियों के योगदान को राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए उन्हें 'नेशन बिल्डर' अर्थात् राष्ट्रनिर्माता कहा। न्यायालय ने यह भी माना कि घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले श्रम का आर्थिक मूल्य है और उसे

> ● न्यायालय ने मोटर दुर्घटना मुआवजा मामले में गृहिणी की सेवाओं का मूल्यांकन न्यूनतम 30 हजार रुपये प्रतिमाह के आधार पर करने की बात कही। यह केवल एक कानूनी निर्णय नहीं, बल्कि उस सामाजिक मानसिकता को चुनौती है जो घरेलू श्रम को महत्वहीन समझती रही है। वास्तव में महिलाओं का यह अदृश्य श्रम देश की अर्थव्यवस्था की नींव है।

नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दूसरी ओर राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के आंकड़े बताते हैं कि देश में ग्रामीण क्षेत्रों की प्रत्येक चौथी तथा शहरी क्षेत्रों की प्रत्येक छठी महिला किसी न किसी रूप में हिंसा का शिकार होती है। यह स्थिति एक गहरे विरोधाभास को उजागर करती है। जिस महिला को राष्ट्रनिर्माता कहा जा रहा है, वही महिला अपने घर, परिवार और समाज में असुरक्षा और हिंसा का सामना करने को विवश है। सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय भारतीय समाज में महिलाओं के अवैतनिक श्रम को मान्यता देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। सदियों से गृहिणियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को केवल कर्तव्य या प्रेम का विस्तार मान लिया गया। घर की सफाई, भोजन बनाना, बच्चों का पालन-पोषण, बुजुर्गों की सेवा, परिवार के स्वास्थ्य और संस्कारों की रक्षा, घरेलू प्रबंधन और सामाजिक संबंधों का निर्वहन-इन सभी कार्यों को महिलाओं का स्वाभाविक दायित्व माना गया। परिणामस्वरूप उनके श्रम को कभी आर्थिक दृष्टि से नहीं आंका गया। वास्तव में यदि किसी परिवार में गृहिणी द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों के लिए अलग-अलग व्यक्तियों को नियुक्त किया जाए, तो उस पर भारी आर्थिक व्यय आएगा। इसके बावजूद गृहिणी के श्रम को न तो वेतन मिलता है और न ही सामाजिक मान्यता। वह चौबीस घंटे और वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन कार्यरत रहती है। उसका कोई अवकाश

नहीं होता, कोई पदोन्नति नहीं होती और कोई सेवानिवृत्ति नहीं होती। इसलिए सर्वोच्च न्यायालय का यह कहना कि गृहिणी केवल परिवार नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी योगदान देती है, सामाजिक चेतना को नई दिशा देने वाला विचार है। न्यायालय ने मोटर दुर्घटना मुआवजा मामले में गृहिणी की सेवाओं का मूल्यांकन न्यूनतम 30 हजार रुपये प्रतिमाह के आधार पर करने की बात कही। यह केवल एक कानूनी निर्णय नहीं, बल्कि उस सामाजिक मानसिकता को चुनौती है जो घरेलू श्रम को महत्वहीन समझती रही है। वास्तव में महिलाओं का यह अदृश्य श्रम देश की अर्थव्यवस्था की नींव है। यदि इस श्रम का आर्थिक मूल्यांकन किया जाए और उसे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में शामिल किया जाए, तो भारत की अर्थव्यवस्था की तस्वीर काफी बदल सकती है। लेकिन इसी संदर्भ में दूसरा पक्ष और भी अधिक चिंता पैदा करता है। जिस महिला के योगदान को सर्वोच्च न्यायालय राष्ट्र निर्माण का आधार मान रहा है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने सफल 12 वर्ष के रिकार्ड प्रधानमंत्री शासन की आयोजनाओं के अवसर पर महिलाओं के सर्वांगीण विकास एवं सम्मान की अधिकारी मान कर रहे हैं, क्या उसे वह सम्मान, सुरक्षा और गरिमा प्राप्त है जिसकी वह अधिकारी है? दुर्भाग्य से इसका उत्तर संतोषजनक नहीं है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं के विरुद्ध हिंसा आज भी एक गंभीर सामाजिक समस्या बनी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक चौथी महिला और शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक छठी महिला हिंसा का सामना करती है। 18 से 49 वर्ष आयु वर्ग की विवाहित महिलाओं में लगभग 22 प्रतिशत ने स्वीकार किया है कि उन्हें वैवाहिक जीवन में घरेलू हिंसा झेलनी पड़ी। यह स्थिति एक गहरे विरोधाभास को उजागर करती है। जिस महिला को राष्ट्रनिर्माता कहा जा रहा है, वही महिला अपने घर, परिवार और समाज में असुरक्षा और हिंसा का सामना करने को विवश है। यह स्थिति तब है जब महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक कानून बनाए जा चुके हैं और महिला अधिकारों को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि यदि कानून मौजूद हैं, योजनाएं चल रही हैं और महिला सशक्तीकरण को राष्ट्रीय एजेंडा बनाया जा चुका है, तो फिर महिलाओं के खिलाफ हिंसा क्यों नहीं रुक रही? आखिर क्यों घर से लेकर कार्यस्थल तक महिलाएं स्वयं को पूर्णतः सुरक्षित महसूस नहीं कर पातीं? इसका उत्तर केवल कानूनी व्यवस्था में नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता में छिपा है। भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा आज भी पितृसत्तात्मक सोच से प्रभावित है। महिलाओं को परिवार की धुरी तो माना जाता है, लेकिन निर्णय लेने की स्वतंत्रता और समान अधिकार देने में संकोच किया जाता है। एक ओर उनके श्रम पर परिवार की पूरी व्यवस्था निर्भर रहती है, दूसरी ओर उनके योगदान को पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता। यही



मानसिकता कई बार घरेलू हिंसा, आर्थिक शोषण और सामाजिक भेदभाव का कारण बनती है। आज भी दहेज प्रथा समाज पर कलंक बनी हुई है। अनेक शिक्षित परिवारों में भी दहेज की मांग और उससे जुड़े अपराध सामने आते हैं। हाल के वर्षों में दहेज हत्या और उत्पीड़न के अनेक मामले राष्ट्रीय चर्चा का विषय बने हैं। यह विडंबना ही है कि एक लड़की की शिक्षा, पालन-पोषण और विवाह पर भारी व्यय करने वाले माता-पिता को विवाह के समय अतिरिक्त आर्थिक बोझ उठाने के लिए मजबूर किया जाता है। यह केवल सामाजिक कुरीति नहीं, बल्कि महिलाओं के सम्मान पर सीधा आघात है। इसके अतिरिक्त कई क्षेत्रों में महिलाओं को डायन बताकर प्रताड़ित करने, यौन हिंसा, बाल विवाह, मानव तस्करी और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएं भी मौजूद हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में अंधविश्वासों तथा सामाजिक पिछड़ेपन के कारण महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाएं अधिक दिखाई देती हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि आर्थिक विकास के बावजूद सामाजिक चेतना का विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच पाया है। महिला सशक्तीकरण को केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व या आर्थिक अवसरों तक सीमित नहीं किया जा सकता। सशक्तीकरण का वास्तविक अर्थ है- सम्मान, सुरक्षा, समान अवसर और स्वतंत्र निर्णय क्षमता। यदि कोई महिला आर्थिक रूप से सक्षम है, लेकिन घर में हिंसा का शिकार है, तो उसे पूर्णतः सशक्त नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार यदि उसे राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिल जाए, लेकिन सामाजिक सम्मान न मिले, तो भी सशक्तीकरण अधूरा रहेगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि महिला सशक्तीकरण को बहुआयामी दृष्टि से देखा जाए। महिलाओं के घरेलू श्रम को मान्यता देने के साथ-साथ उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है। विद्यालयों और परिवारों में लैंगिक समानता के संस्कार विकसित किए जाएं। पुरुषों और लड़कों को भी इस परिवर्तन प्रक्रिया का भाग बनाया जाए। केवल महिलाओं को जागरूक करने से समस्या का समाधान नहीं होगा, समाज की सोच में परिवर्तन लाना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने, शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा कानूनी सहायता उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। पुलिस और प्रशासन को महिलाओं से जुड़े मामलों में अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनाना होगा। कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना होगा ताकि अपराधियों में दंड का भय उत्पन्न हो और पीड़ित महिलाओं को न्याय प्राप्त हो सके। साथ ही यह भी आवश्यक है कि महिलाओं के अवैतनिक श्रम को राष्ट्रीय आर्थिक विमर्श का हिस्सा बनाया जाए। समय आ गया है कि घरेलू कार्यों को केवल निजी दायित्व न मानकर सामाजिक और आर्थिक योगदान के रूप में स्वीकार किया जाए। इससे न केवल महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि समाज में उनके प्रति सम्मान की भावना भी सुदृढ़ होगी। सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय हमें यह संदेश देता है कि राष्ट्र निर्माण केवल संसद, उद्योग, सेना या प्रशासन तक सीमित नहीं है। परिवार का निर्माण और उसका संरक्षण भी राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है और इस कार्य की सबसे बड़ी वाहक महिला है। लेकिन यदि वही महिला हिंसा, भेदभाव और असुरक्षा का सामना करती रहे, तो राष्ट्र निर्माण का यह सपना अधूरा ही रहेगा। इसलिए आज आवश्यकता केवल महिलाओं के श्रम का मूल्यांकन करने की नहीं, बल्कि उनके जीवन का मूल्य समझने की है।



मोदी सरकार के 12 वर्षों में लिखी गई विकास की नई गाथा

हरियाणा भी बना आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति का मॉडल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने पिछले 12 वर्षों में भारत के विकास को नई गति प्रदान की है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ देश के प्रत्येक राज्य को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया गया है। हरियाणा भी इस परिवर्तनकारी यात्रा का एक महत्वपूर्ण सहभागी रहा है। केंद्र की मोदी सरकार और हरियाणा की नायब सैनी सरकार के समन्वित प्रयास से हरियाणा अब आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति का अग्रणी मॉडल बनकर उभरा है। आज हरियाणा में सड़क, रेल, मेट्रो, स्वास्थ्य, शिक्षा, ऊर्जा, कृषि, पर्यटन और जनकल्याण के क्षेत्र में जो अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई दे रहा है, उसके पीछे केंद्र सरकार की दूरदर्शी नीतियां और निरंतर सहयोग प्रमुख कारण हैं। मोदी सरकार ने राज्यों को आर्थिक रूप से अधिक सक्षम बनाने के लिए केंद्रीय करों में राज्यों की हिस्सेदारी बढ़ाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। 14वें वित्त आयोग की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए राज्यों का हिस्सा 32 प्रतिशत से बढ़ाकर 42 प्रतिशत किया गया, जिसे बाद में 15वें वित्त आयोग में भी लगभग उसी स्तर पर बनाए रखा गया। इसका सीधा लाभ हरियाणा को मिला। वर्ष 2004-14 के दौरान हरियाणा को कर हस्तांतरण के रूप में लगभग 19,575 करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे, जबकि 2014 से 2024 के बीच यह बढ़कर 76,915 करोड़ रुपये हो गया। जून 2026 तक यह राशि 1.07 लाख करोड़ रुपये से अधिक पहुंच चुकी है, जो लगभग 447 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। इसी प्रकार भारत सरकार से मिलने वाले अनुदानों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2004-14 में जहां हरियाणा को लगभग 21,564 करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे, वहीं जून 2026 तक यह राशि 94,170 करोड़ रुपये से अधिक हो चुकी है।



अरविंद सैनी
प्रदेश मीडिया प्रभारी, भाजपा हरियाणा

● मोदी सरकार और नायब सैनी सरकार के समन्वित प्रयास से आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति का अग्रणी मॉडल बना हरियाणा

● **आत्मनिर्भर हरियाणा के लिए विशेष सहायता:** कोविड महामारी के दौरान शुरू की गई 'विशेष सहायता योजना' के तहत राज्यों को 50 वर्ष के लिए ब्याज-मुक्त ऋण उपलब्ध कराया

गया। हरियाणा को 2020-21 से 2025-26 के बीच लगभग 5,576 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई, जिससे विभिन्न पूंजीगत परियोजनाओं को गति मिली।

•**रेलवे क्षेत्र में ऐतिहासिक परिवर्तन:** मोदी सरकार के कार्यकाल में रेलवे के आधुनिकीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। हरियाणा का रेलवे नेटवर्क मार्च 2023 तक 100 प्रतिशत विद्युतीकृत हो चुका है। 2009-14 के दौरान जहां हरियाणा के लिए रेलवे का वार्षिक औसत बजट आवंटन मात्र 315 करोड़ रुपये था, वहीं 2024-25 में यह बढ़कर 3,383 करोड़ रुपये हो गया, जो लगभग 11 गुना वृद्धि है। राज्य में 14 नई रेलवे परियोजनाओं पर कार्य जारी है, जिनकी कुल लंबाई 1,195 किलोमीटर और अनुमानित लागत 15,875 करोड़ रुपये है। इसके अतिरिक्त 34 रेलवे स्टेशनों का अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत आधुनिक स्वरूप में विकास किया जा रहा है। पश्चिमी समर्पित माल गलियारा जैसी महत्वपूर्ण परियोजना को भी मोदी सरकार ने गति देकर राष्ट्र को समर्पित किया।

•**मेट्रो और शहरी परिवहन का विस्तार:** गुरुग्राम, फरीदाबाद, बहादुरगढ़ और बल्लभगढ़ में मेट्रो सेवाएं आज लाखों लोगों की जीवनरेखा बन चुकी हैं। गुरुग्राम में 28.5 किलोमीटर लंबी नई मेट्रो परियोजना निर्माणाधीन है, जबकि रिठाला-कुंडली मेट्रो कॉरिडोर का भी शिलान्यास किया जा चुका है। इससे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और हरियाणा के बीच संपर्क और मजबूत होगा।

•**सड़क और एक्सप्रेसवे नेटवर्क में क्रांति:** हरियाणा आज देश के सबसे बेहतर सड़क नेटवर्क वाले राज्यों में शामिल है। जून 2025 तक राज्य में 3,347 किलोमीटर से अधिक राष्ट्रीय राजमार्ग विकसित किए जा चुके हैं। द्वारका एक्सप्रेसवे, दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे, दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे और अंबाला-कोटपुतली कॉरिडोर जैसी परियोजनाएं हरियाणा को देश की आर्थिक धुरी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। रेवाड़ी बाईपास जैसी परियोजनाओं ने यातायात को सुगम और तेज बनाया है।

•**हवाई संपर्क का विस्तार:** उड़ान योजना के तहत हरियाणा को नई उड़ान मिली है। हिसार हवाई अड्डे का विस्तार किया जा रहा है और यहां से अयोध्या, जम्मू, अहमदाबाद, जयपुर तथा चंडीगढ़ जैसी महत्वपूर्ण जगहों के लिए उड़ान सेवाएं शुरू की गई हैं।

•**स्वास्थ्य क्षेत्र में नई पहचान:** मोदी सरकार के कार्यकाल में स्वास्थ्य अवसंरचना को अभूतपूर्व मजबूती मिली है। फरीदाबाद में 2,600 बिस्तरों वाला अत्याधुनिक अमृता अस्पताल शुरू हुआ है। रेवाड़ी में एम्स की स्थापना और झज्जर में केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान का उद्घाटन स्वास्थ्य सेवाओं को नई ऊंचाई प्रदान कर रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर भी मोदी सरकार ने आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सुरक्षा योजना लागू की है।



•**शिक्षा और कृषि अनुसंधान को बढ़ावा:** करनाल में महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय का विकास कृषि अनुसंधान और आधुनिक खेती को नई दिशा देगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया है।

•**ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक विकास:** यमुनानगर में 800 मेगावाट की आधुनिक तापीय विद्युत इकाई, संपीड़ित बायोगैस संयंत्र और मुंद्रा-पानीपत कच्चा तेल पाइपलाइन जैसी परियोजनाएं हरियाणा को ऊर्जा क्षेत्र में नई शक्ति प्रदान करेंगी।

•**पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:** कुरुक्षेत्र और पंचकूला जैसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। ज्योतिसर अनुभव केंद्र, पंचजन्य स्मारक, माता मनसा देवी मंदिर और नाड़ा साहिब गुरुद्वारा के विकास से धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिला है।

•**जनकल्याण योजनाओं का व्यापक लाभ**

मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ हरियाणा के करोड़ों नागरिकों तक पहुंचा है।

- 1.09 करोड़ से अधिक जनधन खाते
- 1.38 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड
- 11 लाख से अधिक उज्ज्वला गैस कनेक्शन
- 30 लाख से अधिक ग्रामीण घरों में नल से जल
- 16 लाख से अधिक किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि
- 81 हजार करोड़ रुपये से अधिक मुद्रा ऋण वितरण
- 126 लाख से अधिक लाभार्थियों को मुफ्त राशन

इन योजनाओं ने गरीब, किसान, महिला, युवा और मध्यम वर्ग के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है।

राष्ट्रीय स्तर पर मोदी सरकार की 12 वर्षों की प्रमुख उपलब्धियां

- दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से आगे बढ़कर शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में भारत की मजबूत स्थिति।
- अनुच्छेद 370 का निरसन।
- राम मंदिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा।
- जी-20 की सफल अध्यक्षता।
- डिजिटल इंडिया और यूपीआई क्रांति।
- मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान।
- रिकॉर्ड राजमार्ग, एक्सप्रेसवे और रेलवे विकास।
- चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता।
- वंदे भारत ट्रेनों का विस्तार।
- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता।
- स्वच्छ भारत मिशन के तहत 11 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण।
- प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 4 करोड़ से अधिक घरों का निर्माण गरीबों के लिए कराया गया।
- जल जीवन मिशन के माध्यम से 15 करोड़ से अधिक परिवारों तक नल से जल पहुंचाना।
- करोड़ों लोगों के जन-धन योजना के तहत बैंकों में खाते खोलना एक एतिहासिक कदम है।
- करोड़ों लोगों को आयुष्मान कार्ड से मुफ्त इलाज उपलब्ध कराया जा रहा है।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 12 वर्षों में देश में लगातार विकास, विश्वास और जनकल्याण के लिए कार्य हुए ही हैं, साथ ही हरियाणा ने भी विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ है। केंद्र सरकार द्वारा बढ़ाए गए वित्तीय संसाधन, आधुनिक अवसंरचना परियोजनाएं, जनकल्याणकारी योजनाएं और सुशासन की पहलें राज्य को विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर कर रही हैं। आज का हरियाणा केवल विकास का साक्षी नहीं, बल्कि मुख्यमंत्री नायब सैनी के नेतृत्व में विकसित भारत के संकल्प का सशक्त सहभागी भी है। आने वाले वर्षों में केंद्र की मोदी सरकार और राज्य की नायब सैनी सरकार के समन्वित प्रयास हरियाणा को आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति का अग्रणी मॉडल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

दिविता जुनेजा को मिला 'बिग इम्पैक्ट अवॉर्ड 2026'

सरोज वार्ता/ब्यूरो

बिजनेस एंटरप्रेन्योर एवं फिल्म 'हीर एक्सप्रेस' से अपनी अलग पहचान बनाने वाली अभिनेत्री दिविता जुनेजा को एक और बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। चंडीगढ़ में बिग एफएम द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित 'बिग इम्पैक्ट अवॉर्ड्स 2026 में उन्हें अभिनय के क्षेत्र में योगदान के लिए बिग इम्पैक्ट अवॉर्ड 2026' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके उभरते अभिनय करियर, प्रभावशाली व्यक्तित्व और दर्शकों के बीच बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए प्रदान किया गया। गत दिनों आयोजित इस भव्य समारोह में विभिन्न क्षेत्रों की उत्कृष्ट प्रतिभाओं और प्रभावशाली हस्तियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बॉलीवुड अभिनेत्री 'नेहा धूपिया' विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुईं। यह आयोजन

- **फिल्म 'हीर एक्सप्रेस' के बाद नई ऊंचाइयां छू रहीं दिविता जुनेजा**
- **दिविता जुनेजा लक्जरी फ्रेग्रेंस ब्रांड 'डिजाने अत्तर' की हैं फाउंडर नई पीढ़ी की प्रेरणादायक युवा हस्ती बन गई हैं दिविता जुनेजा**



उत्कृष्टता, नवाचार और उल्लेखनीय उपलब्धियों का उत्सव था, जिसमें बिजनेस, एंटरटेनमेंट व अन्य क्षेत्रों की कई बड़ी हस्तियों ने भाग लिया। दिविता जुनेजा ने हाल ही में रिलीज हुई अपनी डेब्यू फिल्म 'हीर एक्सप्रेस' में दिग्गज कलाकार आशुतोष राणा, संजय मिश्रा, गुलशन ग्रोवर और प्रीत कमानी के साथ स्क्रीन साझा कर अभिनय की दुनिया में कदम रखा है। फिल्म में उनके अभिनय को सराहना मिली और अब यह सम्मान उनके करियर में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में जुड़ गया है। इससे पहले भी दिविता जुनेजा को चंडीगढ़ में आयोजित 'द एजलेस वूमेन सोइरे' में उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व, नई सोच और प्रेरणादायक कार्यों के लिए 'टच वूमेन ऑफ सब्स्टेंस अवॉर्ड' से सम्मानित किया जा चुका है। लगातार मिल रहे सम्मान उनकी बढ़ती लोक प्रियता व बहुआयामी प्रतिभा को दर्शाते हैं। गौरतलब है कि अभिनय के साथ-साथ दिविता जुनेजा एक सफल बिजनेस एंटरप्रेन्योर के रूप में भी अपनी पहचान मजबूत कर रही हैं। उन्होंने अपने लक्जरी फ्रेग्रेंस ब्रांड 'डिजाने अत्तर' के साथ फ्रेग्रेंस इंडस्ट्री में कदम रखा है। जिसे मुंबई के वल? स्थित एक स्टूडियो में आयोजित वेडिंग-थीम्ड पॉप-अप इवेंट के माध्यम से उन्होंने इस ब्रांड को पेश किया था। यह ब्रांड विशेष रूप से शादियों और बड़े समारोहों से जुड़े हाई-वैल्यू गिफ्टिंग सेगमेंट को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। सिनेमा और व्यवसाय, दोनों क्षेत्रों में मजबूती से कदम बढ़ाते हुए दिविता जुनेजा नई पीढ़ी की ऐसी युवा हस्ती के रूप में उभर रही हैं, जो आत्मविश्वास, आधुनिक सोच व रचनात्मकता के साथ लगातार नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर हैं।

आरईसीपीडीसीएल ने कर्नाटक की इंट्रा-स्टेट ट्रांसमिशन परियोजना की एक विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी), हम्पापुरा पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड, को मेसर्स रेसोनिया लिमिटेड को सौंपा

सरोज वार्ता/ब्यूरो

आरईसी पावर डेवलपमेंट एंड कंसल्टेंसी लिमिटेड (आरईसीपीडीसीएल), जो विद्युत मंत्रालय के तत्वावधान में महारत्न सीपीएसयू, आरईसी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, ने 30 मई 2026 को टीबीसीबी मार्ग के तहत कर्नाटक की इनएसटीएस ट्रांसमिशन परियोजना के लिए एक परियोजना-विशिष्ट एसपीवी (विशेष प्रयोजन वाहन), हम्पापुरा पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड, सफल बोलीदाता मैसर्स रेसोनिया लिमिटेड को सौंप दी। मेसर्स रेसोनिया लिमिटेड, आरईसीपीडीसीएल (बिड प्रोसेस कोऑर्डिनेटर) द्वारा आयोजित टैरिफ-आधारित प्रतिस्पर्धी बोली (टीबीसीबी) प्रक्रिया के माध्यम से सफल बोलीदाता के रूप में उभरा, ताकि बिल्ड, ओन, ऑपरेट एंड ट्रांसफर (बूट) आधार पर ट्रांसमिशन परियोजना का विकास किया जा सके। एसपीवी को श्रीमती मोनिशा बरुआ, जीएम और एचओडी, आरईसीपीडीसीएल द्वारा श्री तुषार छाबड़ा, हेड (बिजनेस एक्विजिशन), रेसोनिया लिमिटेड को प्रबंध निदेशक, केपीटीसीएल,



आरईसीपीडीसीएल के वरिष्ठ अधिकारियों और कर्नाटक पावर ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारियों की उपस्थिति में सौंपा गया। परियोजना की कार्यान्वयन अवधि 24 महीने है। इस योजना में मुख्य रूप से हम्पापुरा में 400/220/33 केवी जीआईएस सब-स्टेशन की स्थापना, जगलूर से कडाकोला तक लगभग 299 किमी की 400 केवी डबल सर्किट लाइन, हम्पापुरा से नागमंगला, मदुर, तुबिनाकेरे और हुयगोनाहल्ली तक लगभग 125 किमी की 220 केवी डबल सर्किट लाइन और जगलूर-कडाकोला से प्रस्तावित 765/400 केवी सीएन'हाली स्टेशन तक 400 केवी डीसी क्वाड मूस लाइन का एलआईएलओ और अन्य संबंधित कार्य शामिल हैं।

आरईसी ने भारत एनबीएफसी और फिनटेक समिट और अवार्ड्स 2026 में 'एनबीएफसी ऑफ द ईयर' पुरस्कार जीता

सरोज वार्ता/ब्यूरो

आरईसी लिमिटेड को भारत के बुनियादी ढांचे और बिजली क्षेत्र के वित्तपोषण और मजबूती में कंपनी के महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देते हुए, तीसरे वार्षिक भारत एनबीएफसी और फिनटेक शिखर सम्मेलन और पुरस्कार 2026 में 'एनबीएफसी ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार श्री आलोक कुमार, सीपीएम, आरईसी ने आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई की ओर से पुरस्कार समारोह के दौरान प्राप्त किया। यह सम्मान आरईसी की ज़िम्मेदार वित्तपोषण, सतत विकास और परिचालन उत्कृष्टता के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह राष्ट्र निर्माण की पहल में योगदान देने, हितधारकों का विश्वास बनाए रखने और वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में दीर्घकालिक मूल्य प्रदान करने के लिए संगठन के अटूट समर्पण को भी रेखांकित करता है। आरईसी ने अभिनव वित्तीय समाधानों और राष्ट्र की विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप रणनीतिक निवेशों के माध्यम से भारत के



बिजली और बुनियादी ढांचे के विकास में सहायता करने में लगातार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह सम्मान आरईसी के भारत की अग्रणी एनबीएफसी में से एक के रूप में स्थिति को और मजबूत करता है, जो उत्कृष्टता, पारदर्शिता और सतत विकास के लिए समर्पित है।

SAIL और EdCIL ने समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए किया समझौता



सरोज वार्ता/संवाददाता

भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अधीन, देश की सार्वजनिक क्षेत्र की सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक और महारत्न कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड और शिक्षा मंत्रालय के तहत सार्वजनिक क्षेत्र की उपक्रम एडसिल (इंडिया) लिमिटेड ने सेल के निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 26 मई, 2026 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत, SAIL के परिचालन क्षेत्रों के आसपास स्थित स्कूलों में 'स्मार्ट डिजिटल क्लासरूम्स' स्थापित किए जाएंगे। इस सहयोग का उद्देश्य समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना और सीखने के परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) को और आगे ले जाना है। यह परियोजना सीधे तौर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल विकास लक्ष्य-4 (SDG-4) के उद्देश्यों के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य अन्य बातों के साथ-साथ सभी के लिए समावेशी, न्यायसंगत, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सीखने के अवसर सुनिश्चित करना है। SAIL और EdCIL के बीच इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर SAIL के निदेशक , श्री के. के. सिंह की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर SAIL और एडसिल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री धामी ने 'अपनापन-नरेंद्र मोदी संग मेरे अनुभव' पुस्तक के लोकार्पण में किया प्रतिभाग

सरोज वार्ता/संवाददाता

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने नई दिल्ली में आयोजित केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चैहान की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'अपनापन-नरेंद्र मोदी संग मेरे अनुभव' के लोकार्पण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। यह गरिमामयी समारोह भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू तथा पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। 'अपनापन' एक प्रेरणादायी कृति है, जिसमें श्री शिवराज सिंह चैहान द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ विभिन्न भूमिकाओं में प्राप्त अनुभवों का सजीव वर्णन किया गया है। पुस्तक में नेतृत्व, सेवा, सुशासन एवं राष्ट्र-निर्माण से जुड़े महत्वपूर्ण विचारों को सरल एवं प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है। मुख्यमंत्री ने पुस्तक के प्रकाशन पर श्री शिवराज सिंह चैहान को शुभकामनाएं दीं तथा इसे समाज के लिए प्रेरणादायी बताया। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री, भारत सरकार के अनेक मंत्री, विधायक, सांसद, समाजसेवी, लेखक-पत्रकार एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।



राज्यपाल गुरमीत सिंह ने 'द लीडरशिप फनल' और 'थॉट टू इंक' पुस्तकों का किया लोकार्पण



सरोज वार्ता/संवाददाता

राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने नई दिल्ली में प्रो. के.पी. सिंह द्वारा संपादित पुस्तकों 'द लीडरशिप फनल' एवं 'थॉट टू इंक' का लोकार्पण किया। यह पुस्तकें राज्यपाल के उत्तराखण्ड की विकास यात्रा, जनसेवा और राष्ट्र प्रथम की भावना को समर्पित हैं। विमोचन के अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि ये पुस्तकें केवल प्रकाशन नहीं, बल्कि उत्तराखण्ड की विकास यात्रा, जनसेवा के संकल्प और राष्ट्रहित के दृष्टिकोण का जीवंत दस्तावेज हैं। उन्होंने कहा कि 'द लीडरशिप फनल' उनके व्यक्तिगत कार्यकाल की नहीं, बल्कि उत्तराखण्ड के युवाओं, महिलाओं, सैनिकों, शिक्षकों, वैज्ञानिकों और कर्मयोगियों की सामूहिक यात्रा को प्रतिबिंबित करती है। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना में चार दशकों से अधिक सेवा और राज्यपाल के रूप में दायित्व निर्वहन के दौरान 'राष्ट्र प्रथम' उनके जीवन का मूल आधार रहा है। राज्यपाल ने कहा कि विकसित भारत का मार्ग विकसित राज्यों से होकर गुजरता है और उत्तराखण्ड को शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, पर्यटन, संस्कृति एवं आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। राज्यपाल ने कहा कि 'थॉट टू इंक' केवल विचारों का संग्रह नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण, शिक्षा, युवा सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता और जनभागीदारी से जुड़े



विषयों पर सार्थक संवाद का प्रयास है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ये पुस्तकें युवाओं, शोधार्थियों, प्रशासकों और समाज के विभिन्न वर्गों को प्रेरित करेंगी। राज्यपाल ने प्रो. के.पी. सिंह, प्रकाशक श्री संदीप जैन एवं अटल प्रकाशन की टीम को इस उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई देते हुए उनके शोध, समर्पण और परिश्रम की सराहना की।

एनबीसीसी की कुल आय पहली बार वित्त वर्ष 2025-26 में एकल आधार पर 10,000 करोड़ रुपये के पार पहुँची

वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में वित्तीय प्रदर्शन

सरोज वार्ता/ब्यूरो

अब तक का उच्चतम	कुल आय एकल 10,055.45 करोड़ रुपये, 12.43% की वृद्धि तथा समेकित 13,195.89 करोड़ रुपये, 7.52% की वृद्धि हुई
	लाभ (एकल) 703.29 करोड़ रुपये। पीएटी/पीबीटी में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर क्रमशः 47.72%/45.00% की वृद्धि हुई।
	वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 270 करोड़ रुपये का लाभांश।

एनबीसीसी की कुल आय 3965.05 करोड़ रुपये रही, जिसमें वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में 3260.54 करोड़ रुपये की तुलना में 21.61% की वृद्धि हुई। पीबीटी 293.34 करोड़ रुपये रहा, जो 186.23 करोड़ रुपये की तुलना में 57.51% की वृद्धि को दर्शाता है। पीएटी 220.06 करोड़ रुपये रहा, जो 137.19 करोड़ रुपये की तुलना में 60.41% की वृद्धि को दर्शाता है। एनबीसीसी की कुल आय वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही के 4700.86 करोड़ रुपये की तुलना में 4618.60 करोड़ रुपये रही। पीबीटी 342.29 करोड़ रुपये रहा, जो 249.05 करोड़ रुपये की तुलना में 37.44% की वृद्धि दर्शाता है। पीएटी 253.51 करोड़ रुपये रहा, जो 182.67 करोड़ रुपये की तुलना में 38.78% की वृद्धि दर्शाता है।

● वित्त वर्ष 2026 में वित्तीय प्रदर्शन: एनबीसीसी की कुल आय 10055.45 करोड़ रुपये रही, जिसमें वित्त वर्ष 2025 में 8943.71 करोड़ रुपये की तुलना में 12.43% की वृद्धि हुई। पीबीटी 913.13 करोड़ रुपये रहा, जो 629.76 करोड़ रुपये की तुलना में 45.00% की वृद्धि को दर्शाता है। पीएटी 703.29 करोड़ रुपये रहा, जो 476.11 करोड़ रुपये की तुलना में 47.72% की वृद्धि को दर्शाता है। एनबीसीसी की कुल आय 13,195.89 करोड़ रुपये रही, जो वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में 12,273 करोड़ रुपये की तुलना में 7.52% अधिक है। पीबीटी 991.32 करोड़ रुपये रहा, जो 755.02 करोड़ रुपये की तुलना में 31.30% की वृद्धि दर्शाता है। पीएटी 742.45 करोड़ रुपये रहा, जो 557.42 करोड़ रुपये की तुलना में 33.19% की वृद्धि दर्शाता है।

● वित्त वर्ष 25-26 की प्रमुख उपलब्धियां

● अर्जित व्यवसाय:

1 वित्त वर्ष 25-26 में 18,780 करोड़ रुपये (समेकित) और 15,390 करोड़ रुपये (एकल)

● ऑर्डर बुक (31.03.2026 को):

1 एकल स्तर - 1,13,004 करोड़ रुपये और समेकित स्तर - 1,27,820 करोड़ रुपये

● प्रदत्त कार्य

1 वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कंपनी को एकल आधार पर तथा समेकित आधार पर क्रमशः 9,768 और 11,546 करोड़ रुपये रुपये के कार्य प्रदान किए गए।

● भावी दृष्टिकोण:

एनबीसीसी ने वर्ष दौरान हासिल की गई कई महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बल पर मजबूत व्यावसायिक गति के साथ वित्त वर्ष 2026-27 में प्रवेश किया है। कंपनी ने लंबे समय से लंबित कई कार्यनीतिक और कानूनी माइलस्टोन को सफलतापूर्वक पार कर लिया है, जिसमें उच्चतम न्यायालय द्वारा समर्थित सुपरटेक परियोजना का समाधान भी शामिल है जिससे आगामी तिमाहियों में भावी ऑर्डर इनफ्लो और निष्पादन पाइपलाइन में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है। गुरुग्राम में 37-डी ग्रीन व्यू परियोजना जैसी प्रमुख रियल एस्टेट परिसंपत्तियों में हुई प्रगति और दिल्ली में लंबे समय से लंबित घिटोरनी भूमि विवाद के समाधान से एनबीसीसी की रियल एस्टेट कार्यक्षमता और अधिक मजबूत होगी। एनबीसीसी की अन्य प्रमुख पुनर्विकास परियोजनाएं भी तीव्र गति से आगे बढ़ रही हैं, जिनमें 7 जीपीआरए पुनर्विकास परियोजनाएं (अधिकांश पैकेज पहले ही अवार्ड किए जा चुके हैं), चरण-II आम्रपाली परियोजनाएं (सभी परियोजनाएं अवार्ड की जा चुकी हैं), राजस्थान मंडपम परियोजना (मुख्य निविदाएं आमंत्रित), सैटेलाइट सिटी, जम्मू और कश्मीर का प्रथम चरण (अनुमोदन प्राप्त) और गोवा पुनर्विकास परियोजनाएं (मुख्य निविदाएं आमंत्रित) शामिल हैं। कंपनी ने पुनर्विकास परियोजनाओं में रिकार्ड बिक्री, मार्केटिंग और वाणिज्यिक मुद्रीकरण भी प्राप्त किया, जिसमें लगभग 6,125 करोड़ रुपये की बिक्री के साथ भारत बिजनेस पार्क और लगभग 9,398 करोड़ रुपये मूल्य वाली चरण-II एफएआर आम्रपाली परियोजनाएं शामिल हैं, जो एनबीसीसी के पुनर्विकास और तनावग्रस्त परिसंपत्ति मुद्रीकरण मॉडल में मजबूत बाजार विश्वास को दर्शाता है। इसके साथ ही, एनबीसीसी ने दुबई, यूएई, सेशल्स और अन्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कार्यनीतिक विदेशी समझौता ज्ञापनों और साझेदारियों के माध्यम से अपनी वैश्विक उपस्थिति का विस्तार किया। इन घटनाक्रमों से परियोजना प्रबंधन परामर्श और अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय वृद्धि हेतु नए अवसर सृजित होने की उम्मीद है। एनबीसीसी रूपांतरणकारी अवसंरचना और पुनर्विकास पहलों के माध्यम से विकसित भारत @ 2047 के दृष्टिकोण में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है। यह प्रतिबद्धता नई दिल्ली में पुनर्विकसित डब्ल्यूएचओ-एसईएआरओ मुख्यालय के उद्घाटन सहित दिल्ली में 7 जीपीआरए कॉलोनियों के पुनर्विकास के अंतर्गत प्रमुख आवासीय एवं कार्यालय अवसंरचना परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास में परिलक्षित हुई, जिसका उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया। एनबीसीसी अपने परियोजनाओं में गृहा/आईजीबीसी मानकों के अनुरूप सतत निर्माण पद्धतियों को अपनाते हुए तथा निर्माण कार्यों में उन्नत प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से हरित एवं पर्यावरण-अनुकूल विकास को भी बढ़ावा दे रहा है। इसी प्रयास के अंतर्गत एनबीसीसी द्वारा कोरापुट, ओडिशा में नेट जीरो कैंपस का विकास किया जा रहा है। डॉ. के. पी. महादेवास्वामी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड ने कहा 'वित्त वर्ष 2025-26 में उत्कृष्ट परिणामों, मजबूत ऑर्डर बुक, सुदृढ़ निष्पादन पाइपलाइन, कार्यनीतिक मुद्रीकरण पहलों और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय विस्तार के साथ, एनबीसीसी आगामी वर्षों में निरंतर विकास के लिए अच्छी स्थिति में है।

एनबीसीसी ने समग्र कॉर्पोरेट वेतन पैकेज के लिए भारतीय स्टेट बैंक के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए



डॉ. प्रभलीन सिंह

एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड ने दिनांक 15 मई, 2026 को भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के साथ कंपनी के कर्मचारियों को एक समग्र कॉर्पोरेट वेतन पैकेज (सीएसपी) प्रदान करने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन पर श्री अंजीव कुमार जैन, निदेशक (वित्त), श्री अश्विन पी. कुलकर्णी, उप महाप्रबंधक और दोनों संगठनों के वरिष्ठ अधिकारीगणों की उपस्थिति में श्रीमती ज्योत्सना रानी मोहाराना, उप महाप्रबंधक (एसबीआई) और श्री संजीव कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.प्र), एनबीसीसी द्वारा हस्ताक्षर किए गए। यह करार व्यक्तिगत एवं दुर्घटना बीमा, स्थायी/अस्थायी दिव्यांगता समूह सावधि जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, टॉप-अप सुविधाएं, ऋण सुविधा में छूट आदि सहित वित्तीय सुरक्षा हितलाभ भी प्रदान करता है।

डॉ. अर्चना गुप्ता ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन से की शिष्टाचार भेंट

सरोज वार्ता/ब्यूरो

भारतीय जनता पार्टी हरियाणा की नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अर्चना गुप्ता ने नई दिल्ली में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर डॉ. गुप्ता ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को महाराजा अग्रसेन की मूर्ति तथा पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका आभार व्यक्त किया। भेंट के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने डॉ. अर्चना गुप्ता को नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दी और उनके सफल, प्रभावी एवं प्रेरणादायक कार्यकाल की कामना की। उन्होंने विश्वास जताया कि डा. अर्चना गुप्ता के नेतृत्व में हरियाणा भाजपा संगठन और अधिक सशक्त होगा तथा पार्टी के विस्तार को नई गति मिलेगी। भेंट के दौरान दोनों नेताओं के बीच संगठन की मजबूती, आगामी राजनीतिक एवं संगठनात्मक कार्यक्रमों तथा पार्टी के विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक और सकारात्मक चर्चा हुई। साथ ही कार्यकर्ताओं को संगठन से जोड़ने, बूथ स्तर तक पार्टी को मजबूत बनाने तथा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने को लेकर भी विचार-विमर्श किया गया। डॉ. अर्चना गुप्ता ने राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा उन पर जताए गए विश्वास के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह संगठन को और अधिक मजबूत बनाने तथा कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेंगी।



योगी सरकार की शिक्षा क्रांति से बदल रही बच्चों की तकदीर



सरोज वार्ता/ब्यूरो

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे सकारात्मक बदलावों का असर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने जेईई मेंस, जेईई एडवांस्ड और बोर्ड परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। योगी सरकार की निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की विशेष तैयारी की व्यवस्था आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए नए अवसरों के द्वार खोल रही है। इस साल 11 विद्यार्थी जेईई मेंस में सफल रहे। समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि मिर्जापुर (मड़िहान) स्थित जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय को डॉ. अरुण कुमार तिवारी ट्रस्टी एक्स नवोदयन फाउंडेशन और टाटा एआईजी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी के सीएसआर सहयोग से जेईई/नीट की निःशुल्क तैयारी हेतु 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' के रूप में विकसित किया गया है। इस वर्ष कुल 11 विद्यार्थी जेईई मेंस में सफल रहे। इनमें मड़िहान की छात्राओं दामिनी पटेल, अंवाला वर्मा, सृष्टि, शिवानी और रागिनी ने जेईई मेंस में सफलता प्राप्त की, जबकि प्रीति ने जेईई एडवांस्ड के लिए भी क्वॉलीफाई किया। साथ ही प्रीति और दामिनी आईआईटी मंडी के बीबीए व एमबीए कार्यक्रम के लिए भी शॉर्टलिस्ट हुईं। वहीं मेहरौना



(देवरिया) के विकास यादव और अंकित सिंह, तीरगांव (बाराबंकी) के अभिषेक मिश्रा, जोगियाटप्पा भानपुर (बस्ती) के अमित कुमार व परसिया (मिर्जापुर) के ऋषिकेश भारती ने भी जेईई मेंस में बाजी मारी।

●बोर्ड परीक्षाओं में रहा दबदबा, हुआ सम्मान: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में बोर्ड परीक्षाओं में जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालयों के छात्रों का दबदबा देखने को मिला है। यूपी बोर्ड से संबद्ध जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय निडौरी (गाजियाबाद) की छात्राओं अंजलि पुंडीर और अंशिका ने जनपद स्तर पर क्रमशः चौथा और छठा स्थान प्राप्त किया। उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 31 हजार और 21 हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र व मेडल देकर कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा और सीडीओ कुमार सौरभ द्वारा सम्मानित किया गया।

●सफल विद्यार्थियों को मंत्री असीम अरुण ने दी बधाई: समाज कल्याण राज्य मंत्री असीम अरुण ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि सरकार का लक्ष्य प्रदेश के प्रत्येक प्रतिभाशाली छात्र को आगे बढ़ने का अवसर देना है। सर्वोदय विद्यालयों की यह सफलता मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की शिक्षा सुधार और सामाजिक समावेशन की नीति की एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखी जा रही है, जो आने वाले वर्षों में प्रदेश के हजारों युवाओं के भविष्य को नई दिशा देगी।

●103 आवासीय विद्यालय गढ़ रहे नए भारत के निर्माता: प्रदेश में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित 103 आवासीय सर्वोदय विद्यालय आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को कक्षा 6 से 12 तक निःशुल्क शिक्षा, आवास, भोजन और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी उपलब्ध करा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की शिक्षा-केंद्रित नीतियों के कारण इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को वह अवसर मिल रहे हैं जो कभी केवल बड़े शहरों और महंगी कोचिंग संस्थानों तक सीमित थे। यही कारण है कि आज सर्वोदय विद्यालयों से निकलने वाले छात्र आईआईटी, मेडिकल और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

योगी सरकार के ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था लक्ष्य को नई गति देगा उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो का चौथा संस्करण



सरोज वार्ता/ब्यूरो

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश को ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम के रूप में यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो (यूपीआईटीएस) 2026 का आयोजन किया जा रहा है। पिछले तीन संस्करणों की सफलता के बाद यह आयोजन अब उत्तर प्रदेश के उत्पादों, सेवाओं, तकनीक और नवाचारों को वैश्विक बाजार से जोड़ने वाला एक प्रमुख मंच बन चुका है। इसके माध्यम से प्रदेश के उद्योग, एमएसएमई, स्टार्टअप और निर्यात क्षेत्र को नए अवसर मिलने की उम्मीद है।

● **4.50 लाख आम नागरिकों की उपस्थिति का अनुमानः** यूपीआईटीएस-2026 में 2400 से अधिक प्रदर्शकों के भाग लेने का अनुमान है, जबकि 85 देशों से 550 से अधिक अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के आने की संभावना है। इसके अलावा 1.50 लाख से अधिक घरेलू बी-टू-बी खरीदार और लगभग 4.50 लाख आम नागरिकों की उपस्थिति का अनुमान लगाया गया है। यह आयोजन प्रदेश के उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाने के साथ-साथ निवेश और व्यापारिक साझेदारियों को भी नई ऊंचाई देगा।

● **4000 से अधिक एमओयू होने की संभावनाः** ट्रेड शो के दौरान 4000 से अधिक समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर होने की संभावना है, जिनका अनुमानित मूल्य 3200 करोड़ से अधिक हो सकता है। इसके अतिरिक्त 13,500 करोड़ से अधिक के संभावित व्यापारिक लीड और पूछताछ उत्पन्न होने का अनुमान है। इससे प्रदेश के एमएसएमई, ओडीओपी इकाइयों, निर्यातकों और उद्यमियों को व्यापक लाभ मिलने की उम्मीद है।

● **औद्योगिक, निर्यात और निवेश प्रोत्साहन नीतियों का प्रदर्शनः** करीब 1.10 लाख वर्गमीटर प्रदर्शनी क्षेत्र में आयोजित होने वाला यह मेगा आयोजन योगी सरकार की औद्योगिक, निर्यात और निवेश प्रोत्साहन नीतियों का प्रदर्शन भी करेगा। विभागीय अधिकारियों के अनुसार यह आयोजन प्रदेश को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के लिए और अधिक आकर्षक बनाने के साथ-साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के विजन को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।



पीआर और मीडिया जगत ने पीएफसी के कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन के प्रमुख एस. श्रीनिवासा राव को सेवानिवृत्ति पर सम्मानित किया



सरोज वार्ता/ब्यूरो

पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी, दिल्ली के सदस्यों के साथ-साथ वरिष्ठ मीडिया, ब्रांडिंग और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन पेशेवरों ने कल पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन के मुख्य महाप्रबंधक (जनसंपर्क) श्री एस. श्रीनिवासा राव को 30 से अधिक वर्षों के शानदार करियर के बाद उनकी सेवानिवृत्ति पर सम्मानित करने के लिए एक मिलन समारोह का आयोजन किया। इस विदाई समारोह में पीआर के वरिष्ठ सदस्यों और पत्रकारों की भारी उपस्थिति देखी गई, जिन्होंने श्री राव को उनके असाधारण योगदान, नेतृत्व और पेशे के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिए सम्मानित किया और अपनी शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों में पीआर सोसाइटी, दिल्ली के चेयरमैन श्री जी.एस. बावा; पीआर दिग्गज श्री ओम प्रकाश, श्री के म प्रशांत , श्रीमती रामा विजय, श्री रजत गुप्ता, श्री विपिन खरबंदा, श्री जे.पी. शर्मा और श्री जे.पी. दौंडियाल; और वरिष्ठ कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन लीडर्स श्री ए.के. सिंह, श्री गौरव आनंद और डॉ. अक्षत चोपड़ा शामिल थे। मीडिया और पीआर जगत में एक अत्यंत सम्मानित श्री राव को पत्रकारों और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन पेशेवरों के प्रति उनके मददगार स्वभाव और सहयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उन्होंने हैदराबाद में इंडियन एक्सप्रेस समूह के साथ अपने कॉर्पोरेट सफर की शुरुआत की थी, और इसी विशेषज्ञता ने बाद में राष्ट्रीय राजधानी में उनकी पेशेवर सफलता को परिभाषित किया। तीन दशक से अधिक समय तक, उन्होंने पीएफसी के मीडिया संबंधों, प्रेस विज्ञप्तियों और सार्वजनिक मामलों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया, जिससे सार्वजनिक क्षेत्र और मीडिया उद्योगों में उन्हें एक विशिष्ट प्रतिष्ठा मिली। पीएफसी ने एक आधिकारिक सोशल मीडिया पोस्ट में उनके पेशेवर रुख को कंपनी के विकास का एक महत्वपूर्ण योगदान बताया और इस बात का विशेष रूप से उल्लेख किया कि जनसंपर्क में उनके रणनीतिक नेतृत्व ने पिछले तीन दशकों में निगम की सार्वजनिक दृश्यता को काफी बढ़ाया और हितधारकों के साथ जुड़ाव को मजबूत किया। कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन में श्री राव के प्रभावी योगदान ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी बेहतरीन पहचान दिलाई है। उन्हें पब्लिक रिलेशंस काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा प्रतिष्ठित 'हॉल ऑफ फेम' में शामिल किया गया था। इसके अलावा, वह पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी के दिल्ली चैप्टर के चेयरमैन के रूप में भी विशिष्ट रूप से अपनी सेवाएं दे चुके हैं, जहाँ उन्होंने युवा कम्युनिकेशन्स प्रोफेशनल्स का सक्रिय रूप से मार्गदर्शन दिया और संगठित किया। उनके सेवानिवृत्ति के इस पड़ाव पर, पीआर समुदाय, मीडिया पेशेवरों और पूरे पीएफसी परिवार ने उनकी स्थायी विरासत के लिए गहरा आभार व्यक्त किया और उनके अच्छे स्वास्थ्य, सुख और निरंतर संतुष्टि से भरे भविष्य की कामना की।

●मीडिया और पीआर जगत में एक अत्यंत सम्मानित श्री राव को पत्रकारों और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन पेशेवरों के प्रति उनके मददगार स्वभाव और सहयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उन्होंने हैदराबाद में इंडियन एक्सप्रेस समूह के साथ अपने कॉर्पोरेट सफर की शुरुआत की थी, और इसी विशेषज्ञता ने बाद में राष्ट्रीय राजधानी में उनकी पेशेवर सफलता को परिभाषित किया।

हुडको ने वित्त वर्ष 2026 में रिकॉर्ड प्रदर्शन के साथ विकास की गति को बरकरार रखा है



सरोज वार्ता/ब्यूरो

भारत सरकार के आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय के अधीन नवरत्न सीपीएसई और एनबीएफसी-आईएफसी (इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग कंपनी) हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचयूडीसीओ) विकसित भारत 2047 के विजन के अनुरूप बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लगातार बेहतर वित्तीय प्रदर्शन और तिमाही दर तिमाही निरंतर वृद्धि के बल पर, एचयूडीसी भारत के बुनियादी ढांचे के विस्तार और शहरी परिवर्तन में अपना योगदान और मजबूत करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान, एचयूडीसी ने 4,034.37 करोड़ का अब तक का उच्चतम शुद्ध लाभ दर्ज किया, साथ ही साथ ऋण स्वीकृति, वितरण और ऋण संग्रह में भी अब तक की उच्चतम वृद्धि दर्ज की।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के वित्तीय परिणामों की मुख्य बातें:

- ऋण स्वीकृति 1,64,757.79 करोड़ के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गई, जो वार्षिक आधार पर 29% की वृद्धि दर्शाती है।
- 51,194.21 करोड़ का अब तक का सबसे अधिक ऋण वितरण हुआ, जो वार्षिक आधार पर 28% की वृद्धि है।
- वर्ष के दौरान परिचालन से राजस्व 13,150.40 करोड़ रहा, जो मजबूत व्यावसायिक गति और परिचालन प्रदर्शन को दर्शाता है।
- ऋण पुस्तिका बढ़कर 1,60,724.30 करोड़ हो गई, जो 29% की वृद्धि दर्ज करती है, साथ ही परिसंपत्ति की गुणवत्ता को उत्कृष्ट बनाए रखा गया है।
- उधार की कुल लागत में 27 बीपीएस की कमी आई।
- 70,000 करोड़ की वार्षिक उधार योजना को मंजूरी दी गई।
- शेयरधारकों की स्वीकृति के अधीन, 60.50% का अब तक का उच्चतम कुल लाभांश भुगतान, यानी ?6.05 प्रति शेयर, जिसमें 1.50 प्रति शेयर का अंतिम लाभांश शामिल है।
- वित्त वर्ष 2025 में 0.25% से वित्त वर्ष 2026 में एनपीए में उल्लेखनीय कमी होकर 0.05% हो गया है, जिससे शून्य शुद्ध एनपीए वाली कंपनी बनने के लक्ष्य की ओर निरंतर प्रगति हो रही है। हुडको के सीएमडी श्री संजय कुलश्रेष्ठ ने त्रैमासिक परिणामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कंपनी ने वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में ही 1.50 लाख करोड़ के ऋण संग्रह के अपने बाजार लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। उन्होंने आगे कहा कि हुडको अपनी विकास गति को बनाए रखने के लिए संगठनात्मक सुधार करना जारी रखे हुए है और बाजार के घटनाक्रमों पर बारीकी से नजर रख रही है। इस प्रदर्शन में योगदान देने वाली प्रमुख पहलों में नीतिगत सुधार, संसाधन आधार का विविधीकरण, पहली बार स्थायी बांड जारी करना, केंद्रित तनावग्रस्त परिसंपत्ति समाधान, ईएसजी ढांचा, उत्तराधिकार योजना, ईआरपी और ई-ऑफिस जैसी डिजिटल पहल और बेहतर शासन एवं वित्तीय नियंत्रण शामिल हैं। हुडको की विकासात्मक पहलों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भारत सरकार के शहरी चुनौती कोष (यूसीएफ) और विकसित भारत के विजन के अनुरूप, हुडको ने शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) को टिकाऊ और ऋणयोग्य शहरी अवसंरचना परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने में सहायता प्रदान करने के लिए शहरी निवेश विंडो (यूआईविन) की शुरुआत की है, विशेष रूप से टियर-2 और टियर-3 शहरों में। उन्होंने आगे कहा कि हुडको ने पांच प्रमुख क्षेत्रों - सड़क, रियल एस्टेट, ऊर्जा, हवाई अड्डे और बंदरगाह - में पीपीपी वित्तपोषण खोलकर अपने ऋण पोर्टफोलियो का विस्तार किया है, जिससे देश की बढ़ती अवसंरचना आवश्यकताओं के लिए समर्थन मजबूत हुआ है। हुडको सतत दीर्घकालिक विकास को समर्थन देने और सभी हितधारकों के लिए बेहतर मूल्य सृजित करने के लिए क्षमता निर्माण, अनुसंधान और विकास, रणनीतिक साझेदारी और प्रतिभा अधिग्रहण में निरंतर निवेश के लिए प्रतिबद्ध है।

हुडको के सीएमडी संजय कुलश्रेष्ठः दूरदर्शी नेतृत्व से नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ता हुडको

सरोज वार्ता/ब्यूरो



भारत के शहरी विकास और बुनियादी ढाँचा वित्तपोषण क्षेत्र में आज यदि किसी सार्वजनिक उपक्रम का नाम सबसे अधिक चर्चा में है, तो वह है Housing and Urban Development Corporation Limited (हुडको)। इस संस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में इसके अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक संजय कुलश्रेष्ठ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके नेतृत्व में हुडको ने वित्तीय प्रदर्शन, परियोजना वित्तपोषण, शहरी अवसंरचना विकास और संस्थागत विस्तार के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

● **प्रारंभिक जीवन और शिक्षाः** संजय कुलश्रेष्ठ एक अनुभवी पेशेवर और कुशल प्रशासक हैं। वे इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि से आते हैं तथा ऊर्जा और अवसंरचना क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का अनुभव रखते हैं। उन्होंने अपने करियर के प्रारंभिक वर्षों में बिजली उत्पादन, ट्रांसमिशन, सब-स्टेशन निर्माण और परियोजना प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में कार्य किया। बाद में उन्होंने वित्तीय संस्थानों और सार्वजनिक उपक्रमों में नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभाईं।

● **REC से हुडको तक का सफरः** हुडको में आने से पहले संजय कुलश्रेष्ठ ने लगभग 17 वर्षों तक REC Limited में विभिन्न वरिष्ठ पदों पर कार्य किया। REC में उन्होंने परियोजना वित्तपोषण, व्यवसाय विकास, CSR गतिविधियों तथा परामर्श सेवाओं के संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके व्यापक अनुभव और नेतृत्व क्षमता को देखते हुए भारत सरकार ने अक्टूबर 2023 में उन्हें हुडको का पूर्णकालिक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नियुक्त किया। लगभग चार वर्षों के अंतराल के बाद हुडको को स्थायी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक मिला।

● **हुडको में नेतृत्व की नई दिशाः** 16 अक्टूबर 2023 को पदभार ग्रहण करने के बाद संजय कुलश्रेष्ठ ने हुडको को केवल आवास वित्तपोषण संस्था तक सीमित न रखकर उसे एक व्यापक इंफ्रास्ट्रक्चर वित्तीय संस्था के रूप में विकसित करने की रणनीति अपनाई। उनके नेतृत्व में हुडको ने शहरी विकास, स्मार्ट सिटी, परिवहन, जल आपूर्ति, स्वच्छता, औद्योगिक अवसंरचना तथा बंदरगाह विकास जैसे क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति मजबूत की।

● **वर्ष 2025-26 की प्रमुख उपलब्धियाँः** वित्त वर्ष 2025-26 हुडको के इतिहास में सबसे सफल वर्षों में से एक माना जा रहा है। कंपनी ने कई नए रिकॉर्ड स्थापित किए।

● **रिकॉर्ड ऋण स्वीकृतियाँ**

वित्त वर्ष 2025-26 में हुडको ने 1,64,757 करोड़ की ऋण स्वीकृतियाँ दर्ज कीं, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 29 प्रतिशत अधिक हैं। यह कंपनी के इतिहास का सर्वोच्च स्तर है।

● **सर्वाधिक ऋण वितरणः** हुडको ने 2025-26 में ?51,194 करोड़ का ऋण वितरण किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 28 प्रतिशत अधिक रहा। यह भी कंपनी का अब तक का सर्वोच्च प्रदर्शन है।

● **मजबूत वित्तीय प्रदर्शनः** वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही में कंपनी ने राजस्व, लाभ और ऋण पोर्टफोलियो के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। राजस्व में लगभग 31 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि लाभ और प्रति शेयर आय में भी निरंतर सुधार देखा गया।

● **परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधारः** संजय कुलश्रेष्ठ के नेतृत्व में हुडको ने गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त की। सकल NPA और शुद्ध NPA दोनों में उल्लेखनीय कमी आई, जिससे कंपनी की वित्तीय स्थिति और मजबूत हुई। संजय कुलश्रेष्ठ ने हुडको के व्यवसाय को नए क्षेत्रों तक विस्तारित किया है। वर्ष 2025 में हुडको ने देश के प्रमुख बंदरगाह प्राधिकरणों के साथ एक लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के समझौता ज्ञापनों (रूब्रह्य) पर हस्ताक्षर किए। इन समझौतों का उद्देश्य भारत की समुद्री और बंदरगाह अवसंरचना को मजबूत बनाना है।

● **प्रधानमंत्री आवास और शहरी विकास योजनाओं में योगदानः** हुडको लंबे समय से किफायती आवास और शहरी अवसंरचना विकास का प्रमुख वित्तीय सहयोगी रहा है। संजय कुलश्रेष्ठ के नेतृत्व में संस्था ने केंद्र और राज्य सरकारों की विभिन्न परियोजनाओं, विशेष रूप से PMAY 2.0 तथा शहरी विकास कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाई।

● **वैश्विक वित्तीय संसाधनों की खोजः** हुडको ने अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से पूंजी जुटाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहल की। कंपनी ने बहुपक्षीय विकास बैंकों और वैश्विक संस्थानों के साथ वित्तपोषण संभावनाओं पर चर्चा शुरू की, जिससे भविष्य में कम लागत पर अधिक संसाधन उपलब्ध हो सकें।

गेल ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 6,968 करोड़ का पीएटी दर्ज किया

सरोज वार्ता/ब्यूरो

वित्तीय प्रदर्शन (स्टैंडअलोन): GAIL ने वित्त वर्ष 2026 में परिचालन से राजस्व 1,38,697 करोड़ दर्ज किया, जबकि वित्त वर्ष 2025 में यह 1,37,288 करोड़ था। EBITDA 13,119 करोड़ रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 19,168 करोड़ था। वित्त वर्ष 2026 के लिए कर पूर्व लाभ 8,964 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2025 में यह 14,825 करोड़ था। कर पश्चात लाभ 6,968 करोड़ रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 11,312 करोड़ था। क्रमिक आधार पर, वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में परिचालन से राजस्व 34,797 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में यह 34,076 करोड़ था। वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में EBITDA 2,175 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में यह 3,335 करोड़ था। PBT वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में 1,577 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में यह 2,030 करोड़ था। तिमाही के लिए PAT 1,262 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में यह 1,603 करोड़ था। वित्तीय प्रदर्शन (समेकित): समेकित आधार पर, वित्त वर्ष 2026 में परिचालन से राजस्व 1,42,094 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2025 में यह 1,42,290 करोड़ था। EBITDA 14,524 करोड़ रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 20,635 करोड़ था। PBT 9,725 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2025 में यह 16,095 करोड़ था। PAT (अल्पसंख्यक हिस्सेदारी को छोड़कर) 7,582 करोड़ रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 12,450 करोड़ था। वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में, परिचालन से राजस्व 35,705 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में यह ?35,303 करोड़ था। EBITDA 2,703 करोड़ रहा, जबकि पिछली तिमाही में यह 3,610 करोड़ था। पीबीटी (सार्वजनिक लाभ) 1,966 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 26 की तीसरी तिमाही में यह 2,165 करोड़ था। पीएटी (अल्पसंख्यक हिस्सेदारी को छोड़कर) 1,485 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 26 की तीसरी तिमाही में यह 1,756 करोड़ था।

लाभांश

निदेशक मंडल ने आगामी वार्षिक आम बैठक में शेयरधारकों की स्वीकृति के अधीन, वित्त वर्ष 2025-26 के लिए प्रति शेयर 0.50 रुपये (अंकित मूल्य 10 रुपये प्रति शेयर) के अंतिम लाभांश की सिफारिश की है। यह 5.00 रुपये प्रति शेयर के अंतरिम लाभांश के अतिरिक्त है, जिससे वर्ष के लिए कुल लाभांश भुगतान अनुपात 51.90% हो जाता है।

पूंजीगत व्यय

वित्त वर्ष 2026 के दौरान, कंपनी ने अपनी दीर्घकालिक विकास रणनीति के अनुरूप, मुख्य रूप से पाइपलाइन अवसंरचना, पेट्रोकेमिकल परियोजनाओं, परिचालन पूंजीगत व्यय और संयुक्त उद्यमों और सहायक कंपनियों में इक्विटी योगदान के लिए 9,594 करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय किया।

सीएमडी का वक्तव्य: गेल (इंडिया) लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री दीपक गुप्ता ने कहा: 'यह वर्ष चुनौतीपूर्ण और जटिल वैश्विक परिदृश्य से भरा रहा, जिसकी शुरुआत रूस-यूक्रेन संघर्ष से हुई और इसके बाद के वर्षों में पश्चिम एशियाई संकट सहित भू-राजनीतिक घटनाक्रमों में भी बदलाव आया। इन चुनौतियों के बावजूद, सरकार के समयोचित नीतिगत हस्तक्षेपों के समर्थन से, गेल ने मजबूत परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन किया। हमारी टीमें परिचालन निरंतरता, लागत नियंत्रण और आपूर्ति विश्वसनीयता सुनिश्चित करने पर केंद्रित रहीं, जिससे कंपनी अस्थिर बाजार परिवेश में प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सकी। वर्ष के दौरान, हमने लगभग 2,000 किमी पाइपलाइन नेटवर्क जोड़ा और 4.6 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष का अब तक का उच्चतम एलपीजी संचरण हासिल किया। इसके अलावा, गेल जामनगर-लोनी एलपीजी पाइपलाइन की क्षमता को दोगुना करके 6.5 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष कर रहा है। '



"श्री गुप्ता ने आगे कहा, 'जैसे-जैसे हम अपनी रणनीति 2030 और नेट-ज़ीरो प्रतिबद्धताओं की ओर बढ़ रहे हैं, कंपनी भविष्य के लिए तैयार विकास के अवसरों में निवेश करना जारी रखे हुए है। बोर्ड ने प्रमुख नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए निवेश को मंजूरी दे दी है, जिनमें लगभग 700 मेगावाट सौर और लगभग 178 मेगावाट पवन ऊर्जा क्षमता, लगभग 95 टीपीडी की कुल क्षमता वाले 6 सीबीजी संयंत्र शामिल हैं, जो ऊर्जा परिवर्तन, स्थिरता और दीर्घकालिक मूल्य सृजन के प्रति जीएआईएल की प्रतिबद्धता को मजबूत करते हैं।

पावरग्रिड ने डॉ. बी.आर. अंबेडकर की जयंती मनाई

सरोज वार्ता/ब्यूरो

विद्युत मंत्रालय के अधीन एक महारत्न सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड) ने देश भर में फैले अपने सभी प्रतिष्ठानों में भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर की जयंती मनाई। इस अवसर पर, निदेशक (कार्मिक) डॉ. यतींद्र द्विवेदी ने एक सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपी एंड टी) के पूर्व संयुक्त सचिव श्री के.जी. वर्मा, पावरग्रिड के वरिष्ठ अधिकारी और उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे। पुष्प अर्पित कर डॉ. अंबेडकर के स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के आदर्शों के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को दोहराया गया। कर्मचारियों के बच्चों के लिए भाषण और प्रश्नोत्तरी जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिससे भावी पीढ़ी के बीच डॉ. अंबेडकर के आदर्शों का महत्व और भी पुख्ता हो गया। समारोह में राष्ट्र निर्माण में डॉ. अंबेडकर के योगदान पर भी विचार-विमर्श किया गया और विविधता, कर्मचारी कल्याण और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने की संगठन की पहलों पर प्रकाश डाला गया। 31 मार्च 2026 तक, पावरग्रिड ने 291 सब-स्टेशन और 1,84,960 सीकेमी से अधिक ट्रांसमिशन लाइनें तथा 6,24,016 मेगावाट की रूपांतरण क्षमता चालू कर दी है और उनका संचालन कर रहा है। नवीनतम तकनीकी उपकरणों और तकनीकों को अपनाने, स्वचालन और डिजिटल समाधानों के बेहतर उपयोग के साथ, पावरग्रिड 99.84% से अधिक की औसत ट्रांसमिशन सिस्टम उपलब्धता बनाए रखने में सक्षम रहा है।

हडको हैदराबाद को वर्ष 2025-2026 के लिए प्राप्त राजभाषा शील्ड

सरोज वार्ता/ब्यूरो

दिनांक 22-05-2026 को एन आई एम एस एम ई, यूसुफगुडा, हैदराबाद में संपन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 63वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक में हडको, हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय, को वर्ष 2025-2026 के लिए संघ की राजभाषा हिन्दी के उतकृष्ट कार्यान्वयन एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सराहनीय प्रयास के लिए अधिकतम 25 कार्मिक श्रेणी में राजभाषा शील्ड प्राप्त हुआ। श्री अनीश कुमार शर्मा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ई सी आई एल एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में हडको से श्री पी सुभाष रेड्डी, क्षेत्रीय प्रमुख एवं श्री सी रजनी कांत, हिन्दी नोडल सहायक, नै बैठक में भाग लिया एवं शील्ड तथा प्रमाण पत्र प्राप्त किया । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद की 63वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक में श्री अनीश कुमार शर्मा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ई सी आई एल के कर कमलों से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री पी सुभाष रेड्डी,



क्षेत्रीय प्रमुख एवं श्री सी रजनी कांत, हिन्दी नोडल सहायक हडको, हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय।

एचपीसीएल ने वित्त वर्ष 2025-26 में रचा नया कीर्तिमान, मुनाफा 133% बढ़कर 17,175 करोड़ पहुंचा

सरोज वार्ता/ब्यूरो

एचपीसीएल ने वित्त वर्ष 2026 में मजबूत प्रदर्शन दर्ज किया; रिफाइनरी थ्रुपुट, बिक्री वृद्धि एवं वित्तीय स्थिति में सुधार। बोर्ड ने प्रति इक्विटी शेयर 19.25 के अंतिम लाभांश की अनुशंसा की हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) ने 31 मार्च 2026 को समाप्त तिमाही एवं वर्ष के लिए अपने वित्तीय परिणामों की घोषणा की। यह प्रदर्शन मजबूत रिफाइनरी परिचालन, बाजार बिक्री में सतत वृद्धि, स्वस्थ रिफाइनिंग मार्जिन एवं कंपनी की वित्तीय स्थिति को मजबूत करने की दिशा में निरंतर प्रगति को दर्शाता है। यह कंपनी द्वारा उठाए गए अनेक पहलों के लाभ को भी प्रदर्शित करता है तथा टीम एचपीसीएल के उत्कृष्ट प्रदर्शन को रेखांकित करता है।

- स्टैंडअलोन कर पश्चात लाभ में 133% की वृद्धि - वित्त वर्ष 2026 (17,175 करोड़)
- समेकित कर पश्चात लाभ में 168% की वृद्धि - वित्त वर्ष 2026 (18,047 करोड़)
- वित्त वर्ष 2026 में 26.04 एमएमटी का अब तक का सर्वाधिक रिफाइनरी थ्रूपुट, वर्ष-दर-वर्ष 3.0% वृद्धि के साथ
- विपणन क्षेत्र में स्थिर वृद्धि, वित्त वर्ष 2026 में बिक्री मात्रा में 3.3% वृद्धि (51.45 एमएमटी)
- वित्तीय अनुशासन पर निरंतर ध्यान, जिसके परिणामस्वरूप स्टैंडअलोन ऋण-इक्विटी अनुपात 31 मार्च 2025 के 1.38 से घटकर 31 मार्च 2026 को 0.80 हुआ
- वित्त वर्ष 2026 में मजबूत सकल रिफाइनिंग मार्जिन (GRM) US$ 8.79 प्रति बैरल

वित्तीय प्रदर्शन

कंपनी ने वित्त वर्ष 2026 में कर पश्चात लाभ में वर्ष-दर-वर्ष 133% तथा चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026 में 46% की वृद्धि दर्ज की।

- **परिचालन से राजस्व**

वित्त वर्ष 2026: 4,78,543 करोड़ (वित्त वर्ष 2025 में 4,66,346 करोड़)

चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026: 1,23,602 करोड़ (चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2025 में 1,18,334 करोड़)

- **सकल रिफाइनिंग मार्जिन**

वित्त वर्ष 2026: US$ 8.79 प्रति बैरल (वित्त वर्ष 2025 में S$ 5.74 प्रति बैरल)

चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026: US$ 14.27 प्रति बैरल (चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2025 में US$ 8.44 प्रति बैरल)

- **स्टैंडअलोन कर पश्चात लाभ**

वित्त वर्ष 2026: 17,175 करोड़ (वित्त वर्ष 2025 में 7,365 करोड़)

चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026: 4,902 करोड़ (चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2025 में 3,355 करोड़)

- **समेकित कर पश्चात लाभ**

वित्त वर्ष 2026: 18,047 करोड़ (वित्त वर्ष 2025 में 6,736 करोड़)

चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026: 6,065 करोड़ (चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2025 में 3,415 करोड़)

- **लाभांश**

निदेशक मंडल ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 10 अंकित मूल्य वाले प्रति इक्विटी शेयर 19.25 के अंतिम लाभांश की अनुशंसा की है, जो वार्षिक आम बैठक में कंपनी के सदस्यों की स्वीकृति के अधीन होगा। यह अंतिम लाभांश वित्त वर्ष 2025-26 के लिए पूर्व में दिए गए 5.00 प्रति इक्विटी शेयर के अंतरिम लाभांश के अतिरिक्त है।

- **परिचालन प्रदर्शन**



- **रिफाइनिंग प्रदर्शन:**

रिफाइनरियों ने वित्त वर्ष 2026 में 26.04 एमएमटी का अब तक का सर्वाधिक कच्चे तेल का थ्रुपुट दर्ज किया, जो वित्त वर्ष 2025 के 25.27 एमएमटी की तुलना में 3.0% अधिक है। रिफाइनरियों ने वित्त वर्ष 2026 में 75.8% का अब तक का सर्वाधिक डिस्टिलेट यील्ड भी प्राप्त किया।

- विशाख रिफाइनरी ने 16.04 एमएमटी का अब तक का सर्वाधिक कच्चे तेल का थ्रुपुट दर्ज किया, जो इसकी क्षमता का 107% है, तथा वित्त वर्ष 2026 में 74.5% का अब तक का सर्वाधिक डिस्टिलेट यील्ड प्राप्त किया
- मुंबई रिफाइनरी ने वित्त वर्ष 2026 में 10.00 एमएमटी का अब तक का सर्वाधिक कच्चे तेल का थ्रुपुट दर्ज किया, जो इसकी क्षमता का 105% है
- रिफाइनरियों ने चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026 में 6.43 एमएमटी का कच्चे तेल का थ्रूपुट दर्ज किया
- विशाख रिफाइनरी ने 3.89 एमएमटी का कच्चे तेल का थ्रुपुट दर्ज किया, जो इसकी क्षमता का 105% है।
- मुंबई रिफाइनरी ने 2.54 एमएमटी का कच्चे तेल का थ्रुपुट दर्ज किया, जो इसकी क्षमता का 109% है।
- तिमाही के दौरान रिफाइनरियों में कच्चे तेल के 4 (चार) नए ग्रेड का प्रसंस्करण किया गया, जिससे वर्ष में प्रसंस्कृत कुल ग्रेडों की संख्या 52 हो गई।

- **विपणन एवं बिक्री प्रदर्शन: बिक्री मात्रा:**
- वित्त वर्ष 2026 की बिक्री (निर्यात सहित): 51.45 एमएमटी (3.3% वर्ष-दर-वर्ष)
- घरेलू बिक्री वृद्धि: 2.6%
- पेट्रोल (MS) एवं डीज़ल (HSD) की संयुक्त बिक्री: 31.06 एमएमटी (2.4% वर्ष-दर-वर्ष)
- कुल एलपीजी बिक्री: 9.41 एमएमटी (5.2% वर्ष-दर-वर्ष)
- पाइपलाइन थ्रुपुट: 25.54 एमएमटी
- चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026 की बिक्री (निर्यात सहित): 13.0 एमएमटी (2.4% वर्ष-दर-वर्ष)
- घरेलू बिक्री वृद्धि: 2.7%
- पेट्रोल एवं डीज़ल की संयुक्त बिक्री: 7.83 एमएमटी (3.3% वर्ष-दर-वर्ष)
- कुल एलपीजी बिक्री: 2.29 एमएमटी
- पाइपलाइन थ्रुपुट : 6.48 एमएमटी

रणनीतिक निवेश एवं अवसंरचना विकास

- चौथी तिमाही वित्त वर्ष 2026 में पूंजीगत व्यय: ? 4,611 करोड़; वित्त वर्ष 2026 के लिए कुल: 15,705 करोड़ - रिफाइनिंग एवं विपणन अवसंरचना को सुदृढ़ करने पर केंद्रित, जिसमें सहायक एवं संयुक्त उद्यम कंपनियों में निवेश शामिल है ताकि अतिरिक्त क्षमताओं, नए व्यवसाय क्षेत्रों एवं परिचालन दक्षताओं में सुधार किया जा सके।

बीपीसीएल ने पीएटी में 94% की वृद्धि दर्ज की

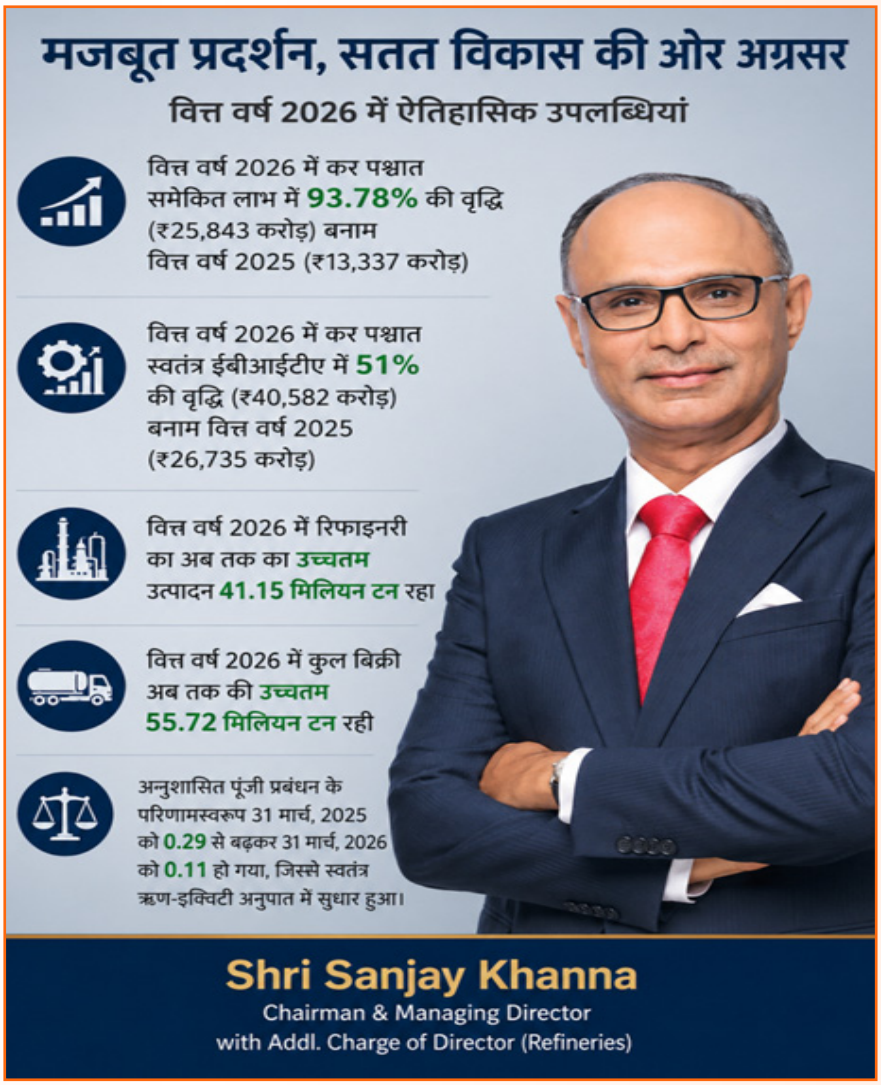
सरोज वार्ता/ब्यूरो

भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल), जो फॉर्च्यून ग्लोबल 500 में शामिल कंपनी और महारत्न सार्वजनिक क्षेत्र की उपक्रम है, ने 31 मार्च, 2026 को समाप्त तिमाही और वित्तीय वर्ष के लिए मजबूत परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन दर्ज किया है। कंपनी ने कच्चे तेल की अस्थिर कीमतों, बदलती आपूर्ति स्थितियों और वैश्विक ऊर्जा बाजारों में निरंतर अनिश्चितता से प्रभावित वर्ष में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। कंपनी ने तिमाही के दौरान अपने शोधन और विपणन व्यवसायों में परिचालन स्थिरता बनाए रखी, जिससे निर्बाध ईंधन आपूर्ति सुनिश्चित हुई और तेजी से बदलते वैश्विक ऊर्जा परिवेश के बीच अपने राष्ट्रव्यापी वितरण नेटवर्क को मजबूत किया। वित्त वर्ष 2026 के दौरान बीपीसीएल का प्रदर्शन घरेलू ऊर्जा मांग में निरंतरता, अनुशासित संचालन और प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों में निरंतर गति को दर्शाता है, जिसे आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती, परिचालन दक्षता और ग्राहक सेवा पर विशेष ध्यान देने से बल मिला। वर्ष के दौरान, कंपनी ने शोधन और विपणन अवसंरचना, पाइपलाइन कनेक्टिविटी, शहरी गैस वितरण और उभरते ऊर्जा अवसरों में निवेश के माध्यम से अपने दीर्घकालिक विकास मानचित्र को आगे बढ़ाया, साथ ही उच्च विकास वाले उपभोग केंद्रों में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया और भविष्य के लिए तैयार ऊर्जा अवसंरचना को सुदृढ़ किया।

- वित्त वर्ष 2026 में कर पश्चात स्वतंत्र लाभ में 75.54% की वृद्धि (23,303 करोड़) बनाम वित्त वर्ष 2025 (13,275 करोड़)
- वित्त वर्ष 2026 में कर पश्चात समेकित लाभ में 93.78% की वृद्धि (25,843 करोड़) बनाम वित्त वर्ष 2025 (13,337 करोड़)
- वित्त वर्ष 2026 में कर पश्चात स्वतंत्र ईबीआईटीए में 51% की वृद्धि (40,582 करोड़) बनाम वित्त वर्ष 2025 (26,735 करोड़)
- वित्त वर्ष 2026 में रिफाइनरी का अब तक का उच्चतम उत्पादन 41.15 मिलियन टन रहा
- वित्त वर्ष 2026 में कुल बिक्री अब तक की उच्चतम 55.72 मिलियन टन रही
- अनुशासित पूंजी प्रबंधन के परिणामस्वरूप 31 मार्च, 2025 को 0.29 से बढ़कर 31 मार्च, 2026 को 0.11 हो गया, जिससे स्वतंत्र ऋण-इक्विटी अनुपात में सुधार हुआ।

मुख्य बातें - वित्त वर्ष 2025-26 की चौथी तिमाही

- **रिफाइनरी उत्पादन:** 118% क्षमता उपयोग के साथ 10.40 मिलियन मीट्रिक टन का उत्पादन हासिल किया गया।



- **घरेलू बाजार बिक्री:** तिमाही घरेलू बिक्री 13.86 MMT दर्ज की गई, जो वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में 13.42 MMT की तुलना में 3.28% की वृद्धि है।

मुख्य बातें - वित्तीय वर्ष 2025-2026

- **रिफाइनरी उत्पादन:** 117% क्षमता उपयोग के साथ 41.15 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) का उत्पादन हासिल किया, जबकि वित्तीय वर्ष 2025 में यह 40.51 मिलियन मीट्रिक टन था।
- घरेलू बाजार में बिक्री: घरेलू बाजार में 54.18 मिलियन मीट्रिक टन की बिक्री दर्ज की गई, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 52.40 मिलियन मीट्रिक टन से 3.40% अधिक है।
- **भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल):** फॉर्च्यून ग्लोबल 500 कंपनियों में शामिल भारत पेट्रोलियम, भारत की दूसरी सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी है और भारत की एकीकृत ऊर्जा कंपनियों में से एक है। यह कच्चे तेल के शोधन और पेट्रोलियम उत्पादों के विपणन में लगी हुई है और तेल एवं गैस उद्योग के अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम दोनों क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति है। कंपनी ने प्रतिष्ठित महारत्न का दर्जा प्राप्त कर लिया है और अब वह उन कंपनियों के समूह में शामिल है जिन्हें अधिक परिचालन और वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त है। मुंबई, कोच्चि और बीना स्थित भारत पेट्रोलियम की रिफाइनरियों की संयुक्त शोधन क्षमता लगभग 35.3 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष है। इसके विपणन अवसंरचना में प्रतिष्ठानों, डिपो, ईंधन स्टेशनों, विमानन सेवा स्टेशनों और एलपीजी वितरकों का एक नेटवर्क शामिल है। इसके वितरण नेटवर्क में 25,300 से अधिक ईंधन स्टेशन, 1000 से अधिक सीएनजी स्टेशन, 6,250 से अधिक एलपीजी वितरक, 440 से अधिक लुब्रिकेंट वितरक, 81 पीओएल भंडारण स्थान, 56 एलपीजी बॉटलिंग संयंत्र, 81 विमानन सेवा स्टेशन, 5 लुब्रिकेंट मिश्रण संयंत्र और 6 क्रॉस-कंट्री पाइपलाइन शामिल हैं।

आईआईएफसीएल की मजबूती और सतत विस्तार से भारत के अवसंरचना विकास को नई रफ्तार

सरोज वार्ता/ब्यूरो



इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री रोहित ऋषि ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन की घोषणा की, जो बुनियादी ढांचा वित्तपोषण गतिविधियों में निरंतर वृद्धि, ऋण पोर्टफोलियो के निरंतर विस्तार, मजबूत परिचालन प्रदर्शन और परिसंपत्ति गुणवत्ता में महत्वपूर्ण मजबूती को दर्शाता है। वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान IIFCL का प्रदर्शन इसके निरंतर संस्थागत सुदृढ़ीकरण, विवेकपूर्ण वित्तीय प्रबंधन और भविष्य के लिए तैयार बुनियादी ढांचा वित्तपोषण संस्थान के रूप में बढ़ते आकार को दर्शाता है। कंपनी भारत की दीर्घकालिक विकास प्राथमिकताओं के साथ दृढ़ता से जुड़ी हुई है और लचीलेपन और निरंतर व्यापार विस्तार के माध्यम से राष्ट्र के बुनियादी ढांचे के विकास की गति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अब तक की सबसे अधिक स्वीकृतियाँ: अवसंरचना वित्तपोषण में बढ़ती भूमिका

IIFCL ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान 57,680 करोड़ की अब तक की सबसे अधिक वार्षिक स्वीकृतियाँ दर्ज कीं, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 13% की वृद्धि दर्शाती हैं। वार्षिक संवितरण में पिछले वर्ष की तुलना में 16% की वृद्धि हुई और यह बढ़कर

32,972 करोड़ हो गया, जो देश भर में अवसंरचना निर्माण के लिए वित्तीय सहायता में निरंतर गति को दर्शाता है।

31 मार्च, 2026 तक कंपनी का संचयी संवितरण लगभग 1.89 लाख करोड़ तक पहुँच गया। समेकित आधार पर, संवितरण ?2.14 लाख करोड़ से अधिक हो गया, जो भारत के अवसंरचना विस्तार के वित्तपोषण में IIFCL के बढ़ते योगदान को रेखांकित करता है। 31 मार्च, 2026 तक IIFCL का स्टैंडअलोन ऋण पोर्टफोलियो बढ़कर 81,715 करोड़ हो गया, जो वित्त वर्ष 2024-25 की तुलना में लगभग 17% की मजबूत वार्षिक वृद्धि दर्शाता है। कंपनी ने संतुलित और विविध पोर्टफोलियो बनाए रखते हुए अवसंरचना क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति को और मजबूत करके अवसंरचना वित्तपोषण में अपनी भूमिका को और सुदृढ़ किया है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं और भारत के अवसंरचना परिदृश्य में उभरते अवसरों के अनुरूप है। मुख्य परिचालन प्रदर्शन लचीला और विस्तार योग्य बना हुआ है। IIFCL ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान अपने प्रमुख वित्तीय परिचालनों में निरंतर मजबूती प्रदर्शित की। कंपनी की परिचालन आय पिछले पांच वर्षों में लगभग दोगुनी हो गई, जो वित्त वर्ष 2021-22 में 3,618 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2025-26 में 6,972 करोड़ हो गई। इसी अवधि के दौरान परिचालन लाभ में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 1,168 करोड़ से बढ़कर 2,197 करोड़ हो गया। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान 1,984 करोड़ का कर-पूर्व लाभ और 1,379 करोड़ का कर-पश्चात लाभ दर्ज किया। बढ़ी हुई शुद्ध संपत्ति और विवेकपूर्ण पूंजी प्रबंधन से विकास क्षमता को मजबूती मिलती है। वित्त वर्ष 2025-26 में IIFCL की शुद्ध संपत्ति पिछले वर्ष के 16,395 करोड़ से बढ़कर 17,898 करोड़ हो गई, जो कंपनी के पूंजी आधार और ऋण देने की क्षमता में निरंतर मजबूती को दर्शाती है। 31 मार्च, 2026 तक IIFCL ने पूंजी से जोखिम भारित परिसंपत्तियों का अनुपात 20.53% बनाए रखा - जो नियामक आवश्यकताओं से काफी ऊपर है। यह मजबूत पूंजी स्थिति भारत की अवसंरचना वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में कंपनी के विवेकपूर्ण वित्तीय प्रबंधन और दीर्घकालिक लचीलेपन को रेखांकित करती है। प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, आईआईएफसीएल के प्रबंध निदेशक श्री रोहित ऋषि ने कहाः 'वित्त वर्ष 2025-26 आईआईएफसीएल के लिए मजबूत परिचालन प्रगति और संस्थागत सुदृढ़ीकरण का एक और वर्ष है। हमारे रिकॉर्ड स्तर पर स्वीकृत ऋण, ऋण पुस्तिका में निरंतर विस्तार, निवल मूल्य, सुदृढ़ परिचालन प्रदर्शन और परिसंपत्ति गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार हमारे मुख्य वित्तपोषण व्यवसाय और हमारी दीर्घकालिक रणनीतिक दिशा की मजबूती को दर्शाते हैं। एसआईएफटीआई द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को हटाने के बाद, आईआईएफसीएल को अधिक वित्तपोषण लचीलेपन और विभिन्न क्षेत्रों में अवसंरचना परियोजनाओं में व्यापक भागीदारी के माध्यम से मजबूत वृद्धि देखने की उम्मीद है। इस महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव से नए और अभिनव ऋण उत्पादों के माध्यम से तेजी से ऋण विस्तार संभव हो पाता है। जैसे-जैसे भारत अवसंरचना-आधारित आर्थिक विकास के परिवर्तनकारी चरण में प्रवेश कर रहा है, आईआईएफसीएल जिम्मेदार, अभिनव और टिकाऊ वित्तपोषण समाधानों के माध्यम से राष्ट्र की विकास प्राथमिकताओं का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है। एक मजबूत और बढ़ती हुई बैलेंस शीट, विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन ढांचा और बढ़ती क्षेत्रीय उपस्थिति के साथ, कंपनी भविष्य के लिए तैयार अवसंरचना वित्तपोषण संस्थान के रूप में विकास के अपने अगले चरण के लिए अच्छी स्थिति में है। '

तृण तृण बिखरती तृणमूल

सरोज वार्ता/ब्यूरो

जब 4 मई 2026 को बंगाल जनता ने ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल सरकार की विदाई का जनादेश सुनाया तब किसी ने भी सपने नहीं सोचा था कि इस हार के बाद तृणमूल कांग्रेस तृण तृण होकर बिखरने लगेगी। बंगाल विधानसभा में तृणमूल के 80 विधायक जीतकर आए थे जिनमें से पहले 58 विधायक अलग हुए फिर उनकी संख्या बढ़कर 64 हो गई, नेता प्रतिपक्ष भी उन्होंने अपने मन का बना लिया। लोकसभा में 19 सांसदों ने बागी होकर अलग गुट बना लिया है, बागियों की संख्या आगे भी बढ़ सकती है। राज्यसभा सांसदों के त्यागपत्र भी आ रहे हैं। राज्यसभा सांसद सुखेदु शेखर रॉय और सुष्मिता देव तथा प्रकाश चिक बराईक इस्तीफा दे चुके हैं। आश्चर्यजनक रूप से ममता के सबसे करीबी कल्याण बनर्जी भी बगावती तेवर दिखा रहे हैं। जिला और पंचायत स्तर पर भी पार्टी की यही स्थिति है। मात्र एक महीना पहले तक यही सांसद और विधायक ममता दीदी के साथ साए की तरह लगे रहते थे। जैसे ही बंगाल की जनता ने सत्ता बदली इन नेताओं का रुख बदल गया। आज ये नेता जिन विषयों पर ममता और अभिषेक बनर्जी को कोस रहे हैं सत्ता में रहते हुए कभी उन विषयों पर मुंह नहीं खोला, आर.जी. कर और संदेशखाली तक ये लोग मुंह में दही जमाए थे। राजनैतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि इनमें से कई लोग ऐसे भी हैं जिनके ऊपर कोई न कोई केस चल रहा है और सत्ता जाने के बाद ममता दीदी में इनको बचाने का सारथ्य नहीं रहे तो ये भविष्य में किसी जांच और सजा से बचने के लिए ऐसा कर रहे हैं। तृणमूल सांसदों व विधायकों की लगातार बगावत से यह संकेत भी जा रहा है कि क्या ममता दीदी का अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी के प्रति अधिक झुकाव उनकी पार्टी की इस हालत का कारण है। इससे तृणमूल के बागी नेताओं के स्वार्थी चरित्र की भी पोल खुल रही है। दल में तानाशाही इनको तब दिखाई दी जब सत्ता की मलाई छीन गई, यदि अभिषेक बनर्जी की अगुआई में पार्टी जीत गई होती और इनका लूट खसोट का धंधा चलता रहता तो इनकी आज जागी हुई आत्मा सोई पड़ी रहती। आज जो सांसद बगावती तेवर अपना रहे हैं उनमें से दस पहली बार चुनकर आए हैं। ये तृणमूल नेताओं की वो पीढ़ी है जिसे ममता बनर्जी ने बीजेपी के खिलाफ लड़ाई का नया चेहरा बनाकर आगे बढ़ाया था। अब यही लोग अपना भविष्य सुधारने के लिए ममता दीदी के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं, क्योंकि ये जानते हैं बंगाल में सत्ता में आई पार्टियाँ कम से कम डेढ़-दो दशक सत्ता में रहती हैं, इस तरह आने वाले 15-20 वर्षों तक इनका कोई भविष्य नहीं होगा। तृणमूल नेताओं के



● जिला और पंचायत स्तर पर भी पार्टी की यही स्थिति है। मात्र एक महीना पहले तक यही सांसद और विधायक ममता दीदी के साथ साए की तरह लगे रहते थे। जैसे ही बंगाल की जनता ने सत्ता बदली इन नेताओं का रुख बदल गया। आज ये नेता जिन विषयों पर ममता और अभिषेक बनर्जी को कोस रहे हैं सत्ता में रहते हुए कभी उन विषयों पर मुंह नहीं खोला, आर.जी. कर और संदेशखाली तक ये लोग मुंह में दही जमाए थे। राजनैतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि इनमें से कई लोग ऐसे भी हैं जिनके ऊपर कोई न कोई केस चल रहा है और सत्ता जाने के बाद ममता दीदी में इनको बचाने का सारथ्य नहीं रहे तो ये भविष्य में किसी जांच और सजा से बचने के लिए ऐसा कर रहे हैं।

प्रति जनता के गुस्से का आलम ये है कि चुनाव में पार्टी को धूल चटाने के बाद भी उसका मन नहीं भरा है। आए दिन तृणमूल नेताओं की सड़कों पिटाई की जा रही है। तृणमूल नेता जहां भी जाते हैं जनता उन्हें चोर-चोर कहकर पुकारती है और उन पर टमाटर-अंडे फेंकती है। अभिषेक बनर्जी और कल्याण बनर्जी जैसे नेताओ तक पर अंडे टमाटर फेंके जा चुके हैं और पिटाई हो चुकी है। यह भी संभव कि बंगाल की जनता में व्याप्त इस भयंकर आक्रोश से बचने के लिए भी तृणमूल नेता बगावती हो रहे हों। तृणमूल के जिला स्तरीय नामचीन नेता इस्तीफा दे रहे हैं। कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम, चंदन नगर के मेयर राम चक्रवर्ती, बिधान नगर के मेयर कृष्णा चक्रवर्ती और कटवा म्युनिसिपलिटी चेयरमैन कमलकांता चक्रवर्ती ने सौ से अधिक पार्षदों सहित इस्तीफा दे दिया है। राज्यभर से तृणमूल से लगातार इस्तीफों व बगावत के समाचार आ रहे हैं। हुगली, नादिया, मुर्शिदाबाद और उत्तर व दक्षिण -24 परगना जैसे गढ़ों में प्रतिदिन पंचायत सदस्यों के पाला बदलने की ख़बरें आ रही हैं। टीएमसी में बगावत व इस्तीफों के बाद कोलकाता नगर निगम ही भंग कर दिया गया है। बंगाल में यह भी दावा किया जा रहा है कि इनमें से बहुत से लोग जेल जाने से बचने के लिए यह तरीका अपना रहे हैं। अभिषेक बनर्जी के डायमंड हार्बर मॉडल का कुख्यात चेहरा और चुनावों के दौरान अपने आप को पुष्पा कहने वाला फाल्टा विधानसभा चुनाव का उम्मीदवार जहाँगीर खां के जेल जाने से अफरा तफरी का माहौल है। तृणमूल नेताओं के पाप जैसे उतरा रहे हैं। बंगाल पुलिस को संदेशखाली के तालाब से बड़ी मात्रा में हथियार मिले हैं, एक खेत से करोड़ों का कैश और हथियार मिले हैं। बमों व अन्य हथियारों की फैक्ट्रियां मिल रही हैं। हजारों की संख्या में सफ़ेद साड़ियाँ मिली हैं जो तृणमूल ने चार मई के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं की विधवाओं को देने के लिए रखी थीं यदि गलती से भी तृणमूल जीत जाती तो यही लोग जो आज इस्तीफा देकर भाग रहे हैं भाजपा कार्यकर्ताओं के नर संहार का नेतृत्व करते। अपराधों की जो फेहरिस्त है उसे देखकर लगता है कि ममता दीदी और उनके चाटुकारों का शेष जीवन अब कोर्ट कचहरी का चक्कर लगाने या फिर जेल में ही बीतने वाला है। एक समय वाराणसी लोकसभा से पीएम नरेंद्र मोदी को हराने और दिल्ली आकर इंडी गठबंधन का नेतृत्व करने वाली ममता दीदी के लिए अपनी पार्टी का अस्तित्व बचा कर रखना भी मुश्किल हो चुका है।

- मृत्युंजय दीक्षित

मुख्यमंत्री ने नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल बैठक में आरडीजी सहित हिमाचल हितों के मुद्दे प्रमुखता से उठाए



सरोज वार्ता/ब्यूरो

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित नीति आयोग की 11वीं गवर्निंग काउंसिल बैठक में भाग लिया। बैठक का विषय 'विकसित भारत के लिए समावेशी मानव विकास' था। बैठक में देशभर में समावेशी विकास सुनिश्चित करने तथा विकसित भारत के दृष्टिकोण को ठोस परिणामों में परिवर्तित करने की रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा की गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने हिमाचल प्रदेश के समक्ष मौजूदा वित्तीय चुनौतियों को प्रमुखता से उठाते हुए प्रधानमंत्री से राज्य के लिए एक उच्चस्तरीय समिति गठित करने का आग्रह किया, जो राजस्व घाटा अनुदान की समाप्ति, प्राकृतिक आपदाओं से हुए नुकसान, जलविद्युत परियोजनाओं में मुफ्त बिजली के हिस्से में कमी तथा जीएसटी व्यवस्था से उत्पन्न राजस्व हानि का आकलन कर सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश की प्रगति में हिमाचल प्रदेश महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है, लेकिन उक्त परिस्थितियों के कारण राज्य को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने उच्च स्तरीय समिति की रिपोर्ट के आधार पर केंद्र सरकार राज्य को उसका न्यायोचित हिस्सा प्रदान करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि राजस्व घाटा अनुदान की समाप्ति से प्रदेश की अर्थव्यवस्था बहुत प्रभावित हुई है। राज्य को प्रदान किए गए 25,000 करोड़ रुपये इस नुकसान की भरपाई के लिए पर्याप्त नहीं हैं। उन्होंने विकास गतिविधियों को सुचारू रूप से जारी रखने के लिए इस राशि को बढ़ाकर 50,000 करोड़ रुपये करने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश देश का 'ग्रीन फ्रंटियर' है और विकसित भारत के लक्ष्य को वास्तविक रूप देने के लिए केंद्र सरकार को राज्य की विशेष आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय वन प्रबंधन संस्थान के एक अध्ययन के अनुसार हिमाचल प्रदेश देश को प्रतिवर्ष लगभग 90,000 करोड़ रुपये मूल्य की पारिस्थितिकीय सेवाएं प्रदान करता है, लेकिन इसके अनुरूप राज्य को कोई पर्याप्त आर्थिक प्रतिपूर्ति नहीं मिल रही है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में लगभग 13,000 मेगावाट विद्युत उत्पादन होने के बावजूद राज्य को मुफ्त बिजली का उचित हिस्सा नहीं मिल रहा है। इसके अतिरिक्त भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) से राज्य को लगभग 7,000 करोड़ रुपये की बकाया राशि भी प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं का सबसे अधिक प्रभाव झेलने के बावजूद प्रदेश को केंद्र द्वारा घोषित 1,500 करोड़ रुपये की विशेष सहायता राशि का अभी भी इंतजार है। उन्होंने कहा कि वर्तमान जीएसटी व्यवस्था के कारण पिछले आठ वर्षों में राज्य को लगभग 25,000 करोड़ रुपये के राजस्व नुकसान का सामना करना पड़ा है। मुख्यमंत्री ने मानव विकास सूचकांकों में प्रदेश की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश वर्ष 2025 में पूर्ण साक्षर घोषित हुआ तथा वर्ष 2026 में स्कूल शिक्षा प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक में राज्य में छठा स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2022 में उनकी सरकार के कार्यभार संभालने के समय राज्य इस सूचकांक में 21वें स्थान पर था। उच्च शिक्षा में प्रदेश का सकल नामांकन अनुपात 43 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय औसत से 28.4 प्रतिशत अधिक है। उन्होंने राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण में भी राज्य के उत्कृष्ट प्रदर्शन का उल्लेख किया। श्री सुक्खू ने कहा कि सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, पंप स्टोरेज तथा बैटरी स्टोरेज जैसी पहलों के माध्यम से हिमाचल प्रदेश हरित ऊर्जा के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने चंद्रभागा-रावी-ब्यास लिंक परियोजना के क्रियान्वयन के दौरान राज्य के हितों की रक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह भी किया। उन्होंने 'मुख्यमंत्री अपना परिवार सुखी परिवार' योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि इस योजना का उद्देश्य राज्य के लगभग 1.5 लाख निर्धन परिवारों की पहचान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। मुख्यमंत्री ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बेहतर हवाई संपर्क की आवश्यकता पर बल देते हुए गग्गल हवाई अड्डे के विस्तार और विकास का मुद्दा उठाया, ताकि हिमाचल प्रदेश को 'वन स्टेट, वन इंटरनेशनल डेस्टिनेशन' के रूप में विकसित किया जा सके। उन्होंने बच्चों के पोषण कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास तथा शिक्षा विभागों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के बीच डेटा साझाकरण को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित, सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित तथा साक्ष्य-आधारित निगरानी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

> ***मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार द्वारा नशे के विरुद्ध चलाए जा रहे व्यापक अभियान की भी जानकारी दी। उन्होंने खुफिया तंत्र को सुदृढ़ बनाने और विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय के लिए केंद्र सरकार से सहयोग का आग्रह किया। बैठक में विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री, उप-राज्यपाल, केंद्रीय मंत्री, विशेष आमंत्रित सदस्य, नीति आयोग के उपाध्यक्ष, सदस्य व मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव के.के. पंत भी उपस्थित थे।***

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में नीति आयोग की शासी परिषद की बैठक

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने साझा किया विकसित राजस्थान-2047 का रोडमैप



- **'युवा शक्ति व निवेश संवर्धन से प्रदेश बनेगा 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था'**
- **'किसानों की समृद्धि व महिला सशक्तीकरण राज्य सरकार की प्राथमिकता'**
- **'राज उन्नति, संपर्क पोर्टल एवं ग्राम विकास चौपाल से आकार ले रहा राजस्थान का सुशासन मॉडल'**

सरोज वार्ता/ब्यूरो

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित नीति आयोग की शासी परिषद् की 11वीं बैठक में शामिल हुए। उन्होंने राजस्थान के विकास के विजन, उपलब्धियों एवं भावी कार्ययोजना को प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश आत्मनिर्भरता, सुशासन, नवाचार और समावेशी विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है तथा राजस्थान विकसित भारत-2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री की मंशा अनुरूप राज्य सरकार गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति को राज्य सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों के केंद्र में रखकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के युवाओं की शक्ति के उपयोग के मंत्र को आत्मसात करते हुए राज्य सरकार प्रदेश की 63 प्रतिशत युवा आबादी को विकास का प्रमुख आधार बनाने की दिशा में कार्य कर रही है।

निवेश एवं औद्योगिक विकास को नई गतिः मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश में 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' को बढ़ावा मिला है तथा व्यापारिक माहौल को सरल एवं निवेश अनुकूल बनाने के लिए अनेक सुधार किए गए हैं। इसी दिशा में राज्य सरकार ने निवेश प्रोत्साहन के लिए 35 से अधिक नई नीतियां लागू की हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 35 लाख करोड़ रुपये के निवेश संबंधी एमओयू हस्ताक्षरित हुए हैं, जिनमें से 9 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्तावों की ग्राउंड ब्रेकिंग हो चुकी है। साथ ही, प्रदेश को 9 एमएमटीपीए क्षमता की आधुनिक रिफाइनरी की सौगात मिली है, जो राजस्थान के औद्योगिक विकास में मील का पत्थर साबित होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2029 तक राजस्थान को 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। वर्तमान में राज्य की जीएसडीपी वृद्धि दर 10.24 प्रतिशत है, जो इस लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में सकारात्मक संकेत है।

युवाओं के लिए अवसरों का विस्तारः मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा प्रारंभ किया गया 'माय भारत' अभियान युवाओं को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का सशक्त माध्यम बन रहा है। राजस्थान में इस अभियान को व्यापक समर्थन मिला है तथा 18 लाख पंजीकृत युवाओं के साथ राज्य देश में दूसरे स्थान पर है। उन्होंने कहा कि कौशल भारत मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना तथा राष्ट्रीय युवा नीति के अनुरूप राजस्थान कौशल नीति-2025, राजस्थान युवा नीति-2025 एवं राजस्थान रोजगार नीति-2026 लागू की गई हैं। इसके अतिरिक्त सहकारिता, डेयरी विकास एवं एक जिला-एक उत्पाद जैसी पहलों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं।

कृषि और किसान कल्याण में अग्रणी राजस्थानः मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार किसानों को उत्पादक से ऊर्जा उत्पादक एवं उद्यमी बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत 2 करोड़ 19 लाख बीमा पॉलिसियां जारी की गई हैं तथा पीएम-कुसुम योजना (कम्पोनेंट-ए) के तहत 723 मेगावाट क्षमता की 496 सौर ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित की गई हैं। इन दोनों क्षेत्रों में राजस्थान देश में प्रथम स्थान पर है। उन्होंने कहा कि पीएम धन-धान्य कृषि योजना के प्रभावी क्रियान्वयन से बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, पाली, नागौर, जालौर, चूरू एवं जोधपुर जैसे मरुस्थलीय जिलों में दलहन, तिलहन एवं बागवानी फसलों के क्षेत्रफल और उत्पादन में वृद्धि हुई है, जिससे किसानों की आय एवं कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ है।

महिला सशक्तीकरण को प्राथमिकताः मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के 'नारी शक्ति' विजन के अनुरूप राज्य सरकार महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'लखपति दीदी' एवं 'ड्रोन दीदी' कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री पोषण



योजना के अंतर्गत राजस्थान लगातार दो वर्षों से देश में प्रथम स्थान पर रहा है, जबकि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में राज्य दूसरे स्थान पर है।

सुशासन एवं जन शिकायत निवारण में नवाचार: मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा विकसित 'प्रगति' प्लेटफॉर्म से प्रेरणा लेकर राज्य सरकार ने 'राज उन्नति' प्लेटफॉर्म प्रारंभ किया है। इसके माध्यम से अब तक 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक लागत की 42 महत्वपूर्ण परियोजनाओं की समीक्षा की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाते हुए भ्रष्ट लोकसेवकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई कर रही है। जन शिकायतों के समाधान हेतु संचालित 'संपर्क पोर्टल' के माध्यम से शिकायतों के निस्तारण की औसत अवधि 28 दिन से घटकर 14 दिन रह गई है तथा 98 प्रतिशत से अधिक शिकायतों का प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया गया है।

ग्राम विकास और आकांक्षी क्षेत्रों पर विशेष फोकस: मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के 'ग्राम विकास एवं विरासत' के विजन से प्रेरित होकर राजस्थान में ग्राम विकास चौपालों का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें ग्रामीणों से सीधा संवाद किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि नीति आयोग की वर्ष 2025-26 की तृतीय तिमाही रैंकिंग में नीमराना ब्लॉक ने राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है, जबकि दौसा जिले के रामगढ़ पचवारा तथा जैसलमेर जिले के फतेहगढ़ ब्लॉक ने विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत स्तर तक जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाने के लिए ग्राम पंचायत स्तर तक ग्राम विकास रथ भिजवाए गए। इसके माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से 51 लाख सहित कुल 2 करोड़ लोग जुड़े। उन्होंने राज्य की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का उल्लेख करते हुए कहा कि शेखावाटी हवेली संरक्षण योजना के माध्यम से झुंझुनूं, चूरू एवं सीकर में 660 से अधिक



हवेलियों को आर्थिक सहायता देकर पर्यटन इकाई के रूप में विकसित किया जा रहा है।

पर्यावरण एवं जल संवर्धन के प्रभावी प्रयास: मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से प्रेरित होकर राज्य सरकार ने पांच वर्षों में 50 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। अब तक लगभग 20 करोड़ पौधों का रोपण किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि 'कैच द रेन', 'जल संचय जनभागीदारी' तथा 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियानों के माध्यम से जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल हुई हैं तथा कई क्षेत्रों में भूजल स्तर में वृद्धि दर्ज की गई है। राज्य में 2 लाख 66 हजार पीएनजी कनेक्शन जारी किए गए हैं, जिससे एलपीजी पर निर्भरता कम हुई है।

विकसित राजस्थान-2047 के लिए प्रतिबद्ध सरकार: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान युवा शक्ति, महिला सशक्तीकरण, कृषि समृद्धि, हरित ऊर्जा, तकनीकी नवाचार और सुशासन के समन्वित मॉडल के साथ विकास की नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में राजस्थान सरकार 'विकसित राजस्थान-2047' के संकल्प को पूर्ण समर्पण के साथ साकार करेगी तथा विकसित भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाएगी।

मोदी युग के बारह वर्ष: विकास, विश्वास और विराट का उदय



ललित गर्ग

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में कुछ कालखंड केवल शासन परिवर्तन के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण के लिए याद किए जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते बारह वर्षों का दौर ऐसा ही एक कालखंड है। यह केवल एक प्रधानमंत्री के लंबे कार्यकाल की कहानी नहीं है, बल्कि उस भारत की कहानी है जिसने स्वयं को नए आत्मविश्वास, नई ऊर्जा और नई वैश्विक पहचान के साथ स्वयं को स्थापित किया है। नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के लगातार सबसे लंबे समय तक निर्वाचित प्रधानमंत्री रहने के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। यह उपलब्धि केवल राजनीतिक सफलता नहीं है, बल्कि जनता के उस विश्वास का प्रमाण है जो बार-बार लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्त हुआ है। भारत जैसा विशाल, बहुभाषी, बहुधार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं से भरा देश किसी नेतृत्व को लगातार तीन बार राष्ट्रीय जनादेश दे, यह अपने आप में असाधारण एवं ऐतिहासिक घटना है। मोदी युग की सबसे बड़ी विशेषता केवल विकास नहीं, बल्कि विकास और विश्वास का समन्वय है। नेहरू युग को आधुनिक भारत के निर्माण का काल कहा गया, तो मोदी युग को उस भारत के आत्मविश्वास के पुनर्जागरण का काल कहा जा सकता है। मोदी ने केवल सड़कों, पुलों, हवाई अड्डों और डिजिटल नेटवर्क का निर्माण नहीं किया, बल्कि करोड़ों भारतीयों के मन में यह विश्वास भी जगाया कि भारत किसी से कम नहीं है और वह विश्व मंच पर नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकता है। मोदी की सबसे विलक्षण विशेषता यह रही कि उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता संचालन का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे जनभावनाओं और राष्ट्रीय आकांक्षाओं से जोड़ा। वे उन विरले नेताओं में हैं जिन्होंने सरकारी योजनाओं को केवल प्रशासनिक दस्तावेज नहीं रहने दिया, बल्कि उन्हें जनआंदोलन का स्वरूप दिया। स्वच्छ भारत अभियान इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। सफाई का विषय जो कभी सरकारी विभागों तक सीमित था, उसे राष्ट्रीय चरित्र और सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ दिया गया। मोदी युग को भारत की गुम होती सांस्कृतिक अस्मिता की पुनर्स्थापना के लिए भी याद किया जाएगा। सदियों से उपेक्षित राष्ट्रीय प्रतीकों, तीर्थस्थलों और सांस्कृतिक विरासत को नई गरिमा मिली। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण केवल एक धार्मिक घटना नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की सांस्कृतिक चेतना के सम्मान का प्रतीक बना। काशी विश्वनाथ धाम, महाकाल लोक, केदारनाथ पुनर्निर्माण और सोमनाथ जैसे तीर्थों का विकास यह संकेत देता है कि आधुनिकता और परंपरा एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकती हैं। मोदी की एक और विशेषता यह है कि उन्होंने भारत की विदेश नीति को आत्मविश्वास का नया आयाम दिया। कभी विश्व शक्तियों के बीच संतुलन साधने वाला भारत आज वैश्विक विमर्श को प्रभावित करने वाला राष्ट्र बनकर उभरा है। रूस-यूक्रेन युद्ध हो, पश्चिम एशिया का संकट हो, जी-20 का नेतृत्व हो अथवा वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की आवाज उठाने का प्रश्न- भारत ने निर्णायक भूमिका निभाई है। यह वही भारत है जिसे कभी विकासशील देशों की कतार में खड़ा माना जाता था, लेकिन आज दुनिया उसकी ओर समाधान प्रदाता राष्ट्र के रूप में देख रही है। इन बारह वर्षों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी है कि शासन के केंद्र में पहली बार अंतिम व्यक्ति को रखने का गंभीर प्रयास दिखाई दिया। जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना, मुफ्त राशन योजना

तथा प्रत्यक्ष लाभ अंतरण जैसी योजनाओं ने करोड़ों गरीबों के जीवन में बदलाव लाने का काम किया। शासन की पारदर्शिता बढ़ी और बिचौलियों की भूमिका सीमित हुई। डिजिटल इंडिया अभियान ने तकनीक को केवल महानगरों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि गांव-गांव तक पहुंचाया। नरेंद्र मोदी की नेतृत्व शैली का एक विशिष्ट पक्ष उनका संकल्पबोध है। वे बड़े लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उन्हें राष्ट्रीय अभियान का स्वरूप देते हैं। चाहे 370 का उन्मूलन हो, तीन तलाक पर रोक हो, जीएसटी लागू करना हो, महिला आरक्षण विधेयक हो अथवा नक्सलवाद और आतंकवाद के विरुद्ध कठोर नीति-इन सभी निर्णयों में राजनीतिक जोखिम था, लेकिन उन्होंने जोखिम उठाने का साहस दिखाया। यही साहस उन्हें सामान्य राजनेताओं से अलग करता है। हालांकि, किसी भी लोकतांत्रिक शासन की तरह चुनौतियां भी कम नहीं हैं। बेरोजगारी, महंगाई, कृषि संकट, शिक्षा और स्वास्थ्य की बढ़ती लागत, सामाजिक विषमताएं तथा आर्थिक अवसरों का असमान वितरण ऐसे प्रश्न हैं जिनका समाधान अभी अपेक्षित है। भारत यदि 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है तो केवल आर्थिक वृद्धि पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुलभ चिकित्सा, रोजगार सृजन और भ्रष्टाचारमुक्त प्रशासन को भी समान प्राथमिकता देनी होगी। मोदी सरकार के आगामी वर्षों से सबसे बड़ी अपेक्षा यही है कि वह भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपने अभियान को और अधिक प्रभावी बनाए। भारत को ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जहां ईमानदारी अपवाद नहीं, सामान्य व्यवहार बने। शिक्षा और स्वास्थ्य को व्यावसायिक माफियाओं के प्रभाव से मुक्त कर आम नागरिक की पहुंच में लाना भी समय की मांग है। साथ ही उद्यमिता को बड़े औद्योगिक घरानों तक सीमित रखने के बजाय गांवों, युवाओं और महिलाओं तक पहुंचाना होगा ताकि प्रत्येक नागरिक रोजगार खोजने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बन सके। प्रधानमंत्री

मोदी युग की सबसे बड़ी उपलब्धि शायद आंकड़ों, परियोजनाओं या चुनावी जीतों में नहीं, बल्कि उस मनोवैज्ञानिक परिवर्तन में है जो भारत के जनमानस में दिखाई देता है। नरेंद्र मोदी ने बारह वर्षों में विकास की संरचनाएं खड़ी की हैं, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने करोड़ों भारतीयों के भीतर भविष्य के भारत की एक आकांक्षा जगाई है। 2047 के विकसित भारत का उनका संकल्प तभी साकार होगा जब विकास के साथ विश्वास, समृद्धि के साथ समान अवसर और शक्ति के साथ संवेदनशीलता भी जुड़ेगी। यदि यह संतुलन बना रहता है, तो इतिहास मोदी युग को केवल एक लंबे राजनीतिक कार्यकाल के रूप में नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैश्विक उदय के युग के रूप में याद करेगा।

नरेंद्र मोदी से मुझे अनेक अवसरों पर मिलने और उन्हें निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वर्ष 2007 में, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब गुजरात के आदिवासी अंचल कवांट में पूज्य आदिवासी जैन संत गणि राजेंद्र विजयजी के सान्निध्य में आयोजित एक विराट आदिवासी सम्मेलन में उनसे विस्तृत संवाद का अवसर मिला। उस सम्मेलन में वे केवल औपचारिक अतिथि के रूप में नहीं आए थे, बल्कि अपने संपूर्ण मंत्रिमंडल के साथ उपस्थित होकर आदिवासी समाज के विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया था। उसी अवसर पर उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों के शैक्षिक उत्थान हेतु एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय को हमारे सुखी परिवार फाउंडेशन को संचालित करने के लिए प्रदान किया तथा आदिवासी विकास की दिशा में ऐतिहासिक 15,000 करोड़ रुपये की वनबंधु कल्याण योजना की घोषणा की। यह उनकी दूरदृष्टि और समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने की सोच का प्रमाण था। इसी सम्मेलन के दौरान एक अत्यंत रोचक और ऐतिहासिक प्रसंग भी सामने आया। गणि राजेंद्र विजयजी ने नरेंद्र मोदी से कहा- 'अब आपको दिल्ली जाना चाहिए और देश की बागडोर संभालनी चाहिए।' उस समय मोदीजी ने सहज मुस्कान के साथ उत्तर दिया- 'मुझे दिल्ली कौन ले जाएगा?' किंतु संतों की वाणी में एक विशेष शक्ति होती है। जो बात उस समय एक साधारण संवाद प्रतीत हुई, वही कुछ वर्षों बाद भविष्यवाणी के रूप में सत्य सिद्ध हुई। उन दिनों गुजरात सचिवालय में भी अनेक बार जाने और मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने का अवसर मिला। वहां जो सबसे अधिक प्रभावित करने वाली बात थी, वह उनकी कार्यसंस्कृति का प्रभाव था। सचिवालय में बड़े से बड़े आईएएस अधिकारी भी आत्मानुशासन, समयपालन और स्वावलंबन का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते थे। अपने छोटे-छोटे कार्य स्वयं करना, अनावश्यक तामझाम से दूर रहना, समय का सदुपयोग करना और जिम्मेदारी को सर्वोपरि मानना वहां की प्रशासनिक संस्कृति का हिस्सा बन चुका था। स्पष्ट महसूस होता था कि यह कार्यशैली शीर्ष नेतृत्व की प्रेरणा से विकसित हुई है। नरेंद्र मोदी केवल आदेश देने वाले प्रशासक नहीं हैं, बल्कि अपने आचरण से व्यवस्था को दिशा देने वाले नेतृत्वकर्ता हैं। भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा आबादी है। यदि इस ऊर्जा को कौशल, नवाचार और उद्यमिता से जोड़ा गया तो भारत केवल विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो सकता है। इसी प्रकार महिला शक्ति को विकास की मुख्यधारा में पूर्ण भागीदारी देकर राष्ट्र निर्माण की गति को कई गुना बढ़ाया जा सकता है।



टूटते भरोसे के वेंटिलेटर पर देश की परीक्षा व्यवस्था



सरोज वार्ता/ब्यूरो

भारत में परीक्षा अब केवल योग्यता का आकलन नहीं रह गई है बल्कि यह करोड़ों सपनों की निर्णायक कसौटी बन चुकी है लेकिन जब यही कसौटी बार-बार संदिग्ध हो जाए, जब मेहनत और ईमानदारी की जगह 'जुगाड़' और 'माफिया नेटवर्क' हावी हो जाएं, तब यह केवल परीक्षा का संकट नहीं बल्कि राष्ट्र के भविष्य का संकट बन जाता है। पेपर लीक के चलते नीट-यूजी 2026 परीक्षा का रद्द होना, सीबीएसई की ऑन स्क्रीन मार्किंग (ओएसएम) प्रणाली पर उठे गंभीर सवाल और एसएससी जीडी परीक्षा में धांधली, ये घटनाएं मिलकर यह साबित करती हैं कि भारत की परीक्षा प्रणाली अब गहरे संस्थागत संकट में फंस चुकी है और भारत की परीक्षा प्रणाली अब वेंटिलेटर पर है। नीट-यूजी 2026 का घटनाक्रम तो इस विफलता की सबसे भयावह तस्वीर पेश करता है। लगभग 22.79 लाख छात्रों की मेहनत, उनके परिवारों के त्याग और वर्षों की तैयारी एक झटके में शून्य हो गई। यह केवल एक परीक्षा का रद्द होना नहीं था बल्कि उस विश्वास का टूटना था, जिस पर पूरी शिक्षा व्यवस्था टिकी हुई है। इससे भी अधिक चिंताजनक तथ्य यह है कि इस बार मामला केवल बाहरी गिरोहों तक सीमित नहीं रहा बल्कि जांच में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) के भीतर तक मिलीभगत के आरोप सामने आए। सीबीआई की जांच और संसदीय समिति की

> ● भारत की परीक्षा प्रणाली का ढांचा ही कई स्तरों पर कमजोर है। प्रश्नपत्रों की छपाई से लेकर वितरण तक की प्रक्रिया में निजी एजेंसियों और आउटसोर्स कर्मचारियों की बड़ी भूमिका रहती है। यही वह जगह है, जहां से माफिया नेटवर्क अपनी जड़ें जमाता है। जब प्रश्नपत्र परीक्षा केंद्र तक पहुंचने से पहले ही स्कैन होकर डिजिटल रूप में फैल सकता है तो यह स्पष्ट संकेत है कि सुरक्षा तंत्र केवल कागजों पर मजबूत है, जमीन पर नहीं।

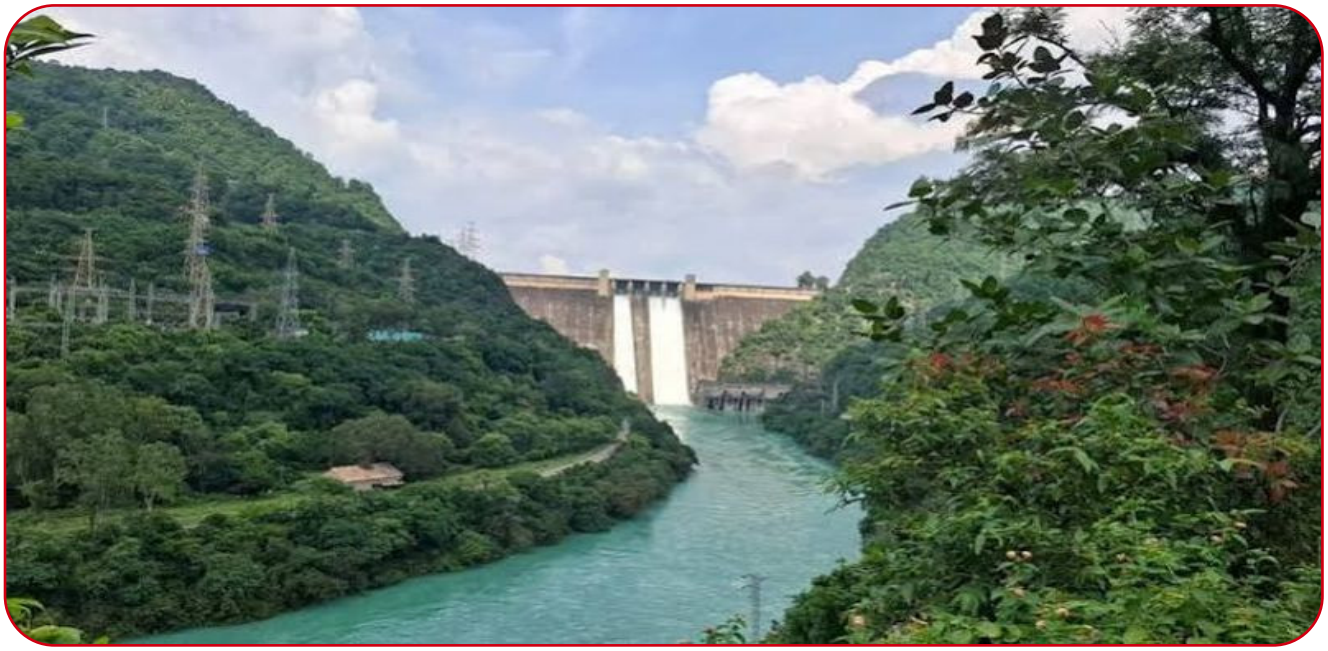
पूछताछ में यह संकेत मिले हैं कि प्रश्नपत्र तैयार करने और परीक्षा प्रबंधन से जुड़े कुछ अधिकारियों ने मोटी रकम लेकर चुनिंदा छात्रों तक प्रश्नपत्र पहुंचाने का काम किया। यदि ये आरोप सही हैं तो यह केवल भ्रष्टाचार नहीं बल्कि संस्थागत विश्वासघात है। जिस संस्था को निष्पक्षता की गारंटी देनी थी, वही यदि धांधली का हिस्सा बन जाए तो पूरी व्यवस्था का नैतिक आधार ही खत्म हो जाता है। नीट पेपर लीक की प्रकृति भी सामान्य नहीं थी। 'गेस पेपर' के नाम पर लगभग 150 से अधिक प्रश्नों का हूबहू मिल जाना, परीक्षा से पहले 600 अंकों तक के सवालों का प्रसार, व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स पर खुलेआम प्रश्नपत्र का घूमना, ये सब किसी संयोग का परिणाम नहीं हो सकते। यह एक संगठित, बहुस्तरीय और तकनीकी रूप से सक्षम नेटवर्क का संकेत है, जो परीक्षा प्रणाली की हर कमजोर कड़ी को भेद चुका है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि 2024 में पेपर लीक के बाद भी कोई ठोस सुधार क्यों नहीं हुआ? सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों, जांच समितियों और सिफारिशों के बावजूद 2026 में स्थिति और बदतर कैसे हो गई? इसका सीधा अर्थ है कि समस्या तकनीकी कम और इच्छाशक्ति की अधिक है। भारत की परीक्षा प्रणाली का ढांचा ही कई स्तरों पर कमजोर है। प्रश्नपत्रों की छपाई से लेकर वितरण तक की प्रक्रिया में निजी एजेंसियों और आउटसोर्स कर्मचारियों की बड़ी भूमिका रहती है। यही वह जगह है, जहां से माफिया नेटवर्क अपनी जड़ें जमाता है। जब प्रश्नपत्र परीक्षा केंद्र तक पहुंचने से पहले ही स्कैन होकर डिजिटल रूप में फैल सकता है तो यह स्पष्ट संकेत है कि सुरक्षा तंत्र केवल कागजों पर मजबूत है, जमीन पर नहीं। दूसरी ओर, कोचिंग उद्योग का अनियंत्रित विस्तार इस संकट को और गहरा कर रहा है। मेडिकल और इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाएं अब हजारों करोड़ रुपये का बाजार बन चुकी हैं। इस बाजार में 'सफलता' एक उत्पाद है, जिसे खरीदने के लिए छात्र और

अभिभावक किसी भी हद तक जाने को मजबूर हैं। इसी मानसिकता का फायदा उठाकर एजुकेशन माफिया 'सीक्रेट पेपर', '100 प्रतिशत सलेक्शन गारंटी' और 'इनसाइडर एक्सेस' जैसे झूठे वादों के जरिए पूरे सिस्टम को खोखला कर रहा है। यदि नीट प्रकरण परीक्षा प्रणाली की सुरक्षा पर सवाल खड़ा करता है तो सीबीएसई का ओएसएम विवाद मूल्यांकन प्रणाली की विश्वसनीयता पर गंभीर चोट करता है। डिजिटल मूल्यांकन को पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से लागू किया गया था लेकिन इसके परिणाम उलटे दिखाई दिए। पास प्रतिशत में गिरावट, मेधावी छात्रों को अपेक्षा से कम अंक मिलना और स्कैन की गई कॉपियों में भारी गड़बड़ियां, ये सब इस बात के संकेत हैं कि तकनीक को बिना पर्याप्त तैयारी और परीक्षण के लागू किया गया। कई छात्रों ने शिकायत की कि उनकी कॉपियां धुंधली थी, कुछ को गलत उत्तर पुस्तिकाएं मिली और कुछ मामलों में तो पूरी कॉपी ही किसी और की थी। यह स्थिति केवल तकनीकी त्रुटि नहीं मानी जा सकती बल्कि यह सरासर गंभीर प्रशासनिक लापरवाही है। यदि एक छात्र की मेहनत को किसी दूसरे की कॉपी से बदल दिया जाए तो यह केवल गलती नहीं है बल्कि उस छात्र के भविष्य के साथ सीधा खिलवाड़ है। शिक्षा मंत्रालय और बोर्ड भले ही इन खामियों को सीमित मामलों तक बताकर पल्ला झाड़ने की कोशिश करें लेकिन छात्रों में बढ़ता असंतोष इस बात का प्रमाण है कि समस्या व्यापक है। तीसरी बड़ी घटना, एसएससी कांस्टेबल जीडी परीक्षा में धांधली, इस बात को और स्पष्ट करती है कि यह संकट किसी एक परीक्षा या संस्था तक सीमित नहीं है। उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में पेपर लीक, तकनीकी खराबी और प्रशासनिक अव्यवस्था के कारण परीक्षा रद्द करनी पड़ी। ग्रेटर नोएडा में यूपी एसटीएफ द्वारा पकड़े गए रैकेट ने इस धांधली के आधुनिक रूप को उजागर किया। प्रॉक्सी सर्वर, स्क्रीन शेयरिंग ऐप्स और डमी कैंडिडेट्स के जरिए परीक्षा में हेरफेर किया जा रहा था। यह पारंपरिक नकल या पेपर लीक से कहीं अधिक खतरनाक है क्योंकि इसमें तकनीक का इस्तेमाल कर पूरी प्रणाली को भीतर से हैक किया जा रहा है। इन तीनों घटनाओं को एक साथ देखें तो एक भयावह तस्वीर उभरती है, एक ऐसी व्यवस्था, जहां प्रश्नपत्र सुरक्षित नहीं, मूल्यांकन विश्वसनीय नहीं और परीक्षा प्रक्रिया पारदर्शी नहीं है। सबसे अधिक पीड़ित वह छात्र है, जो ईमानदारी से मेहनत करता है। ग्रामीण क्षेत्रों के हजारों छात्र, जिनके माता-पिता ने कर्ज लेकर या जमीन गिरवी रखकर उन्हें कोचिंग दिलाई, आज सबसे ज्यादा निराश हैं। एक परीक्षा रद्द होने का मतलब केवल दोबारा परीक्षा देना नहीं होता बल्कि यह मानसिक तनाव, आर्थिक बोझ और आत्मविश्वास के टूटने का कारण बनता है। इस पूरे संकट का एक और खतरनाक पहलू है व्यवस्था के प्रति बढ़ता अविश्वास। जब छात्र यह मानने लगें कि सफलता मेहनत से नहीं बल्कि 'सेटिंग' से मिलती है तो यह केवल शिक्षा का नहीं बल्कि सामाजिक नैतिकता का भी पतन है। अब सवाल यह है कि समाधान क्या है? क्या हर बार जांच, गिरफ्तारी और बयानबाजी से काम चल जाएगा? स्पष्ट है कि नहीं। सबसे पहले परीक्षा प्रणाली में पूर्ण डिजिटल और एन्क्रिप्टेड मॉडल लागू करना होगा। प्रश्नपत्रों को परीक्षा से कुछ मिनट पहले तक सुरक्षित सर्वर में रखा जाए और सीधे केंद्रों पर डिजिटल रूप में उपलब्ध कराया जाए। इससे छपाई और परिवहन से जुड़ी कमजोरियां समाप्त होंगी। दूसरा, आउटसोर्सिंग व्यवस्था को सीमित करना होगा। संवेदनशील कार्यों में केवल प्रशिक्षित और जवाबदेह सरकारी कर्मचारियों की नियुक्ति होनी चाहिए। तीसरा, पेपर लीक को संगठित आर्थिक अपराध घोषित कर इसके लिए गैर-जमानती कठोर कानून बनाए जाएं। जब तक अपराधियों को कठोर सजा नहीं मिलेगी, तब तक यह धंधा बंद नहीं होगा। चौथा, साइबर निगरानी को मजबूत करना होगा। टेलीग्राम, डार्क वेब और एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय नेटवर्क को ट्रैक करने के लिए विशेष एजेंसियां बनाई जानी चाहिए। पांचवां, तकनीक को लागू करने से पहले उसका व्यापक परीक्षण और प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाए। सीबीएसई ओएसएम विवाद ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बिना तैयारी के लागू की गई तकनीक समाधान नहीं बल्कि नई समस्या बन सकती है।

● सबसे महत्वपूर्ण है राजनीतिक और प्रशासनिक इच्छाशक्ति। जब तक सरकार इस समस्या को 'राष्ट्रीय आपदा' की तरह नहीं देखेगी, तब तक आधे-अधूरे समाधान ही सामने आएंगे। नीट-यूजी 2026, सीबीएसई ओएसएम विवाद और एसएससी परीक्षा धांधली, ये घटनाएं चेतावनी हैं। यदि अब भी कठोर और स्थायी सुधार नहीं किए गए तो आने वाले समय में हर परीक्षा संदेह के घेरे में होगी। तब सबसे बड़ी त्रासदी यह नहीं होगी कि पेपर लीक हुआ बल्कि यह होगी कि देश के युवाओं का विश्वास पूरी तरह टूट जाएगा।



भाखड़ा का जल स्तर



सरोज वार्ता/ब्यूरो

हमारे नीति-नियंता आमतौर पर तब जागते हैं जब समस्या सिर पर आ जाती है। यदि समय रहते तंत्र, सजगता और सतर्कता से आसन्न संकट को महसूस करते हुए तत्काल रणनीति बनाकर कार्रवाई करता है, तो जन-धन की हानि को टाला जा सकता है। निस्संदेह, भाखड़ा ब्यास मैनेजमेंट बोर्ड यानी बीबीएमबी ने पंजाब और हरियाणा को भाखड़ा जलाशय से ज्यादा पानी निकालने की सलाह दी है। निश्चित रूप से इस सलाह को उत्तर भारत क्षेत्र में पानी के प्रबंधन से जुड़ी बढ़ती मुश्किलों के प्रति एक चेतावनी के रूप में देखी जानी चाहिए। निस्संदेह, यह सलाह रोजमर्रा के परिचालन से जुड़ा मामला भी नहीं है। इसे व्यापक संदर्भों में देखें तो लगातार बढ़ती जलवायु की अनिश्चितता, खेती से जुड़े ऐसे तौर-तरीकों, जिनका दीर्घकालीन उपयोग नहीं किया जा सकता है, के बाबत यह सलाह चेताती है। निश्चित रूप से यह सलाह यह भी बताती है कि पंजाब व हरियाणा में पानी के बेहतर उपयोग को लेकर सहमति न बनने से भी इस तरह की स्थितियां पैदा होती हैं। बांध प्रबंधन से जुड़े सूत्र बताते हैं कि भाखड़ा जलाशय का जलस्तर फिलहाल पिछले साल में इसी अवधि के दौरान के जलस्तर के मुकाबले 21 फीट अधिक है। वहीं दूसरी ओर जलाशय के अधिकतम जलस्तर तक पहुंचने में अब सिर्फ 102 फीट की जगह ही बची है। निश्चित रूप से इस दिशा में समय रहते ही अविलंब कार्रवाई करनी होगी। अन्यथा मानसून के आने के साथ वैकल्पिक उपायों की गुंजाइश भी लगातार कम होती जाती है। जलवायु परिवर्तन के

•यह विडंबना ही है कि यह चुनौती पंजाब में ऐसे समय में आ रही है, जब धान की रोपाई का मौसम चल रहा है। हालांकि, राज्य में सरकार ने पानी के बेहतर इस्तेमाल के मद्देनजर धान की खेती का कैलेंडर एक जून तक के लिये आगे बढ़ा दिया था। यह भी गौरतलब है कि आज भी पंजाब के बड़े इलाकों में खेती काफी हद तक भूजल पर ही निर्भर है।

गहरे होते प्रभावों के चलते हिमालयी पर्वत श्रृंखला में अधिक बर्फ के पिघलने की बढ़ती गति और बारिश के पैटर्न में लगातार आ रहे बदलाव के कारण ही जलाशय के जलस्तर में तेजी से बदलाव आने की आशंका भी बनी रहती है। यही वजह है कि इन तमाम आशंकाओं के मद्देनजर ही अविलंब नीतिगत फैसले लेने की सख्त जरूरत है। यह विडंबना ही है कि यह चुनौती पंजाब में ऐसे समय में आ रही है, जब धान की रोपाई का मौसम चल रहा है। हालांकि, राज्य में सरकार ने पानी के बेहतर इस्तेमाल के मद्देनजर धान की खेती का कैलेंडर एक जून तक के लिये आगे बढ़ा दिया था। यह भी गौरतलब है कि आज भी पंजाब के बड़े इलाकों में खेती काफी हद तक भूजल पर ही निर्भर है। जिस सीमा तक नहरों के नेटवर्क का अधिकतम उपयोग होना चाहिए था, वह अभी भी नहीं हो पा रहा है। निस्संदेह, जब तक सतही पानी का सही तरीके से बंटवारा नहीं होता है तब तक जलाशयों में ज्यादा पानी जमा करके रखना पड़ेगा। जिसके चलते अचानक आने वाले पानी को संभालने के लिये जरूरी बाढ़ बचाव क्षमता कम हो जाती है। हमें वर्ष 2023 में पंजाब में आई विनाशकारी बाढ़ से मिले सबक को नहीं भूलना चाहिए। तब पानी छोड़ने में कथित देरी और जलाशयों के संचालन को लेकर हुए तमाम विवादों ने राजनीतिक कड़वाहट को बढ़ाया ही था। साथ ही सरकार की बाढ़ से निबटने की तैयारियों को लेकर गंभीर सवाल भी खड़े हुए थे। जब बांध प्रबंधन की बात करते हैं तो इसका मकसद सिर्फ बिजली उत्पादन ही नहीं हो सकता। तब बाढ़ को नियंत्रित करना भी उतना ही जरूरी मकसद होना चाहिए। ऐसे वक्त में हमें जरूरी कामों की प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। सिंचाई विभाग को सुनिश्चित करना ही होगा कि नहर का पानी किसानों को समय पर मिले। खासकर उन किसानों को जिनके खेत नहर के अंतिम छोर पर स्थित हैं। इससे हमारी जमीन के ऊपर मौजूद पानी के स्रोतों पर निर्भरता ज्यादा बढ़ेगी। साथ ही इन कदमों से जमीन के भीतर के पानी के भंडारों पर दबाव भी कम हो सकेगा। इसके साथ ही, सहयोगी राज्यों के साथ जलाशयों के कामकाज में पारदर्शिता और दूरदर्शिता के साथ तालमेल बैठाना होगा। पानी की भरपूर उपलब्धता से मुश्किल हालात का सामना करने की क्षमता बढ़नी चाहिए, न कि जोखिम को बढ़ावा दिया जाए। आज जलाशयों में जगह खाली करना भविष्य में मौसम से जुड़ी अनिश्चितताओं से निबटने के लिये सबसे अच्छा उपाय साबित हो सकता है।

राजनीतिक सोच की गरीबी का त्रास झेलता पंजाब



प्रोफेसर सुखदेव सिंह

पंजाब में पिछले कुछ सालों में राजनीति मुनाफा कमाने का एक ऐसा धंधा बन गया है, जिसमें लोगों के लिए काम करने की जगह व्यक्तिगत फायदे के लिए राजनीतिक दल बदली एक आम प्रक्रिया हो गई है। चुनाव जीतने के लिए किसी राजनीतिक प्रेरणा या पॉलिसी के बजाय पैसे, पावर और सरकारी मशीनरी का गलत इस्तेमाल आम हो गया है। अपने नुमाइंदे चुनते समय, राजनीतिक पार्टियां उसकी राज्य में जलवायु परिवर्तन, संसाधन क्षरण, बिगड़ती शहरी सेवाओं, हेल्थ और एजुकेशन को सही दिशा देने के लिए लोगों के हित में एक ठोस पॉलिसी बनाने की क्षमता के बजाय चुनाव क्षेत्र में उसके परिवार के कंट्रोल और पैसे खर्च करने की उसकी क्षमता और सहमति को प्राथमिकता दे रही हैं। आज़ादी के बाद से लंबे समय तक पंजाब में कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल सत्ता की अदला-बदली करते रहे हैं, लेकिन 2022 से पॉलिटिकल पावर का कंट्रोल आम आदमी पार्टी के पास है; जबकि भविष्य में भाजपा राज्य की बागडोर संभालने के लिए बेचैन हो रही है। सरकार द्वारा पंजाब को आर्थिक कर्ज़ से आज़ाद करने और लोगों को रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं, सुरक्षा और दूसरी सुविधाएं देने के लिए कोई पक्का प्रोग्राम बनाने के बजाय, राज्य में मुफ़्त आटा, दाल, मुफ़्त बिजली, मुफ़्त बस यात्रा, मुफ़्त तीर्थयात्रा और महिलाओं को हर महीने 1000 रुपये मुफ़्त देने वगैरह का लालच देकर थोड़े समय की लोकप्रियता हासिल की जा रही है। टिकाऊ सुधारों के बजाय तुरंत चुनावी फ़ायदे को तरजीह दी जा रही है, लेकिन न्यूनतम मज़दूरी बढ़ाने से बचा जा रहा है। पंजाब के 'दस उंगलियों से काम करने और बांटकर खाने' वाले उसूल को कमज़ोर किया जा रहा है और लोगों को बेकार बनाया जा रहा है। दूसरी तरफ़, भाजपा के नेता 'डबल इंजन सरकार' का नारा लगा रहे हैं। लोगों से कह रहे हैं कि अगर उन्हें देश के खाते से कुछ पाना है, तो राज्य में उसी पार्टी को चुना जाए, जिसकी केंद्र में सरकार हो। यानी भाजपा केंद्र से आर्थिक सहायता का लालच देकर पंजाब में 2027 के विधानसभा चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश में है। भाजपा वादा कर रही है कि अगर वह चुनाव जीतती है, तो राज्य में धर्म परिवर्तन के ख़िलाफ़ क़ानून बनाएगी। कुछ समय पहले भाजपा ने राज्य में कांग्रेस के फ्रंटलाइन नेताओं का पार्टी परिवर्तन कर के अपनी पार्टी में शामिल किया था, वहीं हाल ही में उसने आप के 6 राज्यसभा सदस्यों को तोड़कर भाजपा में शामिल करवा लिया। गौरतलब है कि राज्यसभा सदस्यों के पार्टी परिवर्तन से कुछ दिन पहले ही उनमें से एक सदस्य के घर पर केंद्र सरकार की फाइनेंशियल गड़बड़ियों की जांच करने वाली एजेंसी ईडी ने छापा मारा था और अगले ही दिन उन की पार्टी परिवर्तन की घटना हो गई। दूसरी तरफ आप में पंजाब के 6 में से 2 पार्टी परिवर्तन वाले सदस्य गैर पंजाबी हैं। राजनीति में अनजान और कच्ची समझ रखने वाले, लेकिन उस समय आप ने राघव चड्ढा और संदीप पाठक को हीरो की तरह पेश करके, उन्हें पंजाब में बिना किसी संवैधानिक दायित्व के बहुत ज़्यादा पावर, राज्य के खर्च पर सिक्योरिटी देकर, और फिर उन्हें पंजाब से राज्यसभा मेंबरशिप के लिए नॉमिनेट करके अपनी पॉलिटिकल नादानी दिखाई है। अगर हम पंजाब के बारे केंद्र सरकार की पॉलिसी देखें, तो हमें वहां भी राजनीतिक गुरबत ही दिखाई देती है। भाजपा की केंद्र सरकार, लोगों की भलाई से ज़्यादा कॉर्पोरेट के फ़ायदे के लिए, पंजाब में खेती को इंडस्ट्रिलाइज़ेशन करने और इसमें लगी 35-40 फीसदी आबादी के एक बड़े हिस्से को खेती के पेशे से हटाने का इरादा रखती है, लेकिन इस आबादी के लिए एक विकल्प के तौर पर एक ठोस और सम्मानजनक काम के लिए कोई भरोसेमंद पॉलिसी लाने में कोई सीरियस नहीं दिखती। राज्य में बेरोजगारी और असमानता दूर करने हेतु संरचनात्मक समाधान पेश करने, जलवायु परिवर्तन प्रभावों और घटते भूजल स्तर को रोकने, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गिरती गुणवत्ता को सुधारने और अन्य धार्मिक-सांस्कृतिक मुद्दों को संबोधित करने के बजाय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भाजपा नेताओं द्वारा 'डबल इंजन सरकार' और 'धर्मांतरण विरोधी कानून' की पेशकश भी राज्य में राजनीतिक नासमझी को दर्शाती है। आप के राज्यसभा मेंबरों ने अपने दलबदल को यह कहकर सही ठहराया है कि पार्टी में उनका दम घुट रहा था। लेकिन सच तो यह है कि उनके पास न तो कोई लोगों का एजेंडा था, न सोच और न ही पक्का यकीन और न ही लोगों के हित में कुछ कहने का दम; अगर कुछ था, तो वह था पद और पावर की भूख। लालच और डर के कारण, दलबदल करने से उनका दम घुटना तो रुक गया, लेकिन लोगों के भरोसे का दम ज़रूर घुट गया। भाजपा उनके कंधों पर सवार होकर 2027 का चुनाव जीतने की उम्मीद कर रही है। ऐसी सोच पॉलिटिकल गरीबी का ही एक नमूना है। राजनीतिक गुरबत का एक और उदाहरण यह है कि पंजाब में कांग्रेस पार्टी दूसरी पार्टियों की नाकामियों के भरोसे अपनी जीत पक्की मान रही है, और उसके सभी नेता मुख्यमंत्री पद के लिए अपनी दावेदारी जताते हुए एक-दूसरे से ही मुकाबले में हैं। ऐसे में, पंजाब के राजनेताओं का 'तूफान और दहाड़' और उनकी 'तू-तू, मैं-मैं' किसी भी सैद्धांतिक राजनीति से खाली है, जिसकी वजह से पंजाब राजनीतिक गरीबी की ओर बढ़ता दिख रहा है।

पहले आम को राहत



सरोज वार्ता/ब्यूरो

आज वैश्विक आर्थिक परिदृश्य तेजी से अनिश्चितता के भंवर में फंसता नजर आ रहा है। अमेरिका-इस्राइल व ईरान के बीच जारी संघर्ष से उपजा भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि, बाधित व्यापार मार्ग से प्रभावित आपूर्ति श्रृंखला भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये नई चुनौतियां खड़ी कर रही है। ऐसे में देश के लिये प्राथमिकता केवल विकास की गति बनाये रखना ही नहीं होनी चाहिए। सरकार का दायित्व है कि आम लोगों को महंगाई की मार से बचाने के लिये व्यावहारिक कदम भी उठाये। दरअसल, भारत के सामने केवल मध्यपूर्व में जारी संघर्ष से उपजा संकट ही नहीं है, बल्कि अंदरूनी मोर्चे पर भी कई तरह की दिक्कतें पैदा हो रही हैं। हाल ही में केंद्रीय बैंक ने देश में मानसून में कमी की आशंका जतायी है। ऐसा अल-नीनो के प्रभाव के चलते पैदा होने वाले विषम हालातों के चलते कहा गया है। जिसके चलते आगामी कुछ माह में खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि की आशंका भी व्यक्त की जा रही है। ऐसे में महंगाई में कमी आने की सूरत नजर नहीं आती। देश के कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि फिलहाल सरकार की प्राथमिकता आर्थिक विकास में वृद्धि ही है। जिसके चलते आशंका जतायी जा रही है कि इससे नागरिकों पर महंगाई का दबाव बढ़ सकता है। निस्संदेह, अर्थव्यवस्था में सुधार होना चाहिए, लेकिन वक्त की नजाकत को देखते हुए आम आदमी को महंगाई से राहत देना बेहद जरूरी है। अन्यथा आम लोगों का जीवन-यापन और अधिक कष्टकारी भी हो सकता है। यही वजह है कि कुछ अर्थशास्त्री मानते हैं कि सरकार आर्थिक विकास की प्राथमिकताओं व महंगाई नियंत्रण के प्रयासों के बीच संतुलन साधने का प्रयास करे। लेकिन पिछले दिनों पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में कई बार की वृद्धि के बाद व्यावसायिक व घरेलू एलपीजी के दामों का बढ़ना, लोगों की चिंता बढ़ाने वाला है। जाहिर बात है कि इस वृद्धि से पहले ही महंगाई से जूझते लोगों का बजट और गड़बड़ा जाएगा। निस्संदेह, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमत में वृद्धि के बाद कुकिंग गैस के दामों की वृद्धि आम आदमी का बजट बिगाड़ने वाली है। फलतः लोगों की क्रय शक्ति कम हो रही है। वहीं आर्थिकी में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ने की आशंका है। इस उथल-पुथल भरे वैश्विक परिदृश्य में कुछ कारक देश की अर्थव्यवस्था को संबल देने वाले भी हैं। देश में घरेलू मांग मजबूत है, संरचनात्मक विकास में निवेश जारी है। वहीं तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था हमारी ताकत भी है। जिससे हम एक सीमा तक वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं। लेकिन एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें हमारे आयात बिलों पर दबाव बढ़ा रही हैं। जिसका प्रभाव रुपये पर भी बढ़ते दबाव के रूप में सामने आया है। हालांकि, विदेशी संस्थागत निवेशकों को लुभाने के लिये केंद्रीय बैंक प्रयासरत है, लेकिन बाजार के पटरी पर आने में कुछ वक्त अवश्य लगेगा। आरबीआई का विश्वास है कि निवेश नियमों में ढील से पूंजी के प्रवाह को प्रोत्साहन मिलेगा। केंद्रीय बैंक की प्राथमिकताओं में आर्थिक स्थिरता कायम करना, रुपये को संबल देना और देश की वित्तीय प्रणाली में पर्याप्त तरलता बनाये रखना भी है। बैंक की कोशिश है कि विकास को प्रभावित किए बिना ही आर्थिक स्थिरता लाने का प्रयास हो। निस्संदेह, नीति-नियंताओं के सामने आर्थिक विकास को गति देने के साथ मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना भी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिये दोनों में संतुलन बनाने की जरूरत है। हम विकास और रोजगार को संरक्षण देते हुए महंगाई को नियंत्रित करने का प्रयास करें। जिसके लिये राजकोषीय विवेक, कमजोर वर्ग के लोगों को संबल तथा संरचनात्मक सुधार प्राथमिकता हों। तभी आर्थिक विकास और महंगाई में संतुलन बनाने में सफलता मिल सकती है। इसके लिये सरकार को अतिरिक्त कदम उठाने होंगे। वह महसूस करे कि आम आदमी की जेब पर महंगाई दबाव बनाने लगी है। जिससे अर्थव्यवस्था का प्रभावित होना लाजमी है। जिसके चलते केंद्रीय बैंक ने देश की आर्थिक वृद्धि दर में न केवल कमी की है बल्कि खुदरा महंगाई दर में वृद्धि के भी संकेत दिए हैं। विश्वास करें कि सरकार मौजूदा संकट से मुकाबले हेतु विस्तृत व्यावहारिक कदम उठाएगी।

● निस्संदेह, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमत में वृद्धि के बाद कुकिंग गैस के दामों की वृद्धि आम आदमी का बजट बिगाड़ने वाली है। फलतः लोगों की क्रय शक्ति कम हो रही है। वहीं आर्थिकी में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ने की आशंका है। इस उथल-पुथल भरे वैश्विक परिदृश्य में कुछ कारक देश की अर्थव्यवस्था को संबल देने वाले भी हैं। देश में घरेलू मांग मजबूत है, संरचनात्मक विकास में निवेश जारी है। वहीं तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था हमारी ताकत भी है।

राष्ट्र निर्माण की अदृश्य आधारशिला का मूल्यांकन

डॉ. रितु सारस्वत

हाल ही में देश की सर्वोच्च अदालत ने 'शिशुपाल उर्फ शिशराम एवं अन्य बनाम सुरजीत एवं अन्य' मामले में एक महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए भारतीय समाज के समक्ष उपस्थित एक ऐसे प्रश्न को पुनः केंद्र में ला खड़ा किया है, जिस पर लंबे समय से पर्याप्त गंभीरता से विचार नहीं किया गया। न्यायालय ने गृहिणियों को 'राष्ट्र निर्माता' की संज्ञा देते हुए कहा कि उनके द्वारा किया जाने वाला घरेलू श्रम केवल परिवार के संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। न्यायालय ने निर्देश देते हुए कहा कि 'जब कोई मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, उच्च न्यायालय अथवा यह न्यायालय किसी ऐसे मामले पर विचार कर रहा हो, जिसमें एक गृहिणी की मृत्यु हुई हो, तब मुआवजे की गणना में गृहिणियों के साथ होने वाली उस अंतर्निहित असमानता को दूर करने के लिए, जो उनकी अनुमानित आय के अत्यंत रूढ़िवादी आकलन के कारण उत्पन्न होती है, 'घरेलू देखभाल की हानि' के अंतर्गत 30,000 रुपये प्रतिमाह की एक समेकित राशि जोड़ी जानी चाहिए।' न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि इस राशि में प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर संचयी रूप से 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी। प्रथम दृष्टया यह निर्णय मोटर दुर्घटना मुआवजा दावों में क्षतिपूर्ति निर्धारण से संबंधित एक सामान्य न्यायिक आदेश प्रतीत हो सकता है, किन्तु वास्तव में इसका महत्व इससे कहीं अधिक व्यापक है। यह निर्णय केवल 30,000 रुपये प्रतिमाह की राशि निर्धारित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उस दृष्टिकोण में परिवर्तन का प्रतीक है, जिसके माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय ने घरेलू श्रम के सामाजिक और आर्थिक मूल्य को स्वीकार किया है। लंबे समय तक भारतीय समाज में घर के भीतर किए जाने वाले कार्यों को प्रेम, कर्तव्य और पारिवारिक दायित्व के रूप में देखा जाता रहा, जबकि उनके आर्थिक महत्व पर अपेक्षित गंभीरता से विचार नहीं किया गया। निःसंदेह, किसी भी परिवार का सुचारु संचालन केवल आर्थिक आय पर निर्भर नहीं करता। भोजन की व्यवस्था, बच्चों का पालन-पोषण, वृद्धजनों की देखभाल, परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं का समन्वय, घर का प्रबंधन तथा भावनात्मक संतुलन बनाए रखने जैसे असंख्य कार्य प्रतिदिन किए जाते हैं, जिनके लिए कोई वेतन निर्धारित नहीं होता। विडंबना यह है कि जिन कार्यों के बिना परिवार की संरचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती, वही कार्य लंबे समय तक आर्थिक मूल्यांकन की प्रक्रिया से बाहर रहे। उक्त निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय ने आगे कहा कि 'यह विडंबनापूर्ण है कि गृहिणी को परिवार के कमाने वाले सदस्यों पर आश्रित बताया



जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि परिवार की पूरी व्यवस्था और सुचारु संचालन काफी हद तक गृहिणी पर ही निर्भर करता है।' वास्तव में यह टिप्पणी भारतीय समाज में लंबे समय से प्रचलित उस धारणा को चुनौती देती है, जिसके अनुसार आर्थिक आय अर्जित करने वाला व्यक्ति ही परिवार का मुख्य योगदानकर्ता माना जाता है। यदि किसी परिवार की आय उसके आर्थिक आधार को सुदृढ़ करती है, तो घर के भीतर किया जाने वाला श्रम उस आधार को स्थायित्व प्रदान करता है। दोनों में से किसी एक के अभाव में परिवार की संरचना पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए घरेलू श्रम को केवल एक पारिवारिक दायित्व मानना उसके वास्तविक महत्व को कम करके आंकना होगा। न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी रेखांकित किया कि 'गृहिणियों का योगदान केवल बच्चों के जन्म और पालन-पोषण तक सीमित नहीं है। वे उस मानव पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिस पर किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक प्रगति आधारित होती है।' यह निर्विवादित है कि किसी भी समाज का भविष्य केवल उसके उद्योगों, संस्थानों अथवा आर्थिक नीतियों से निर्मित नहीं होता, बल्कि उन मानवीय मूल्यों, संस्कारों और क्षमताओं से भी निर्मित होता है, जिनका विकास परिवार के भीतर होता है। वर्तमान निर्णय का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने क्षतिपूर्ति निर्धारण के संबंध में विकसित हो रहे न्यायशास्त्र को भी आगे बढ़ाया है। इस संदर्भ में न्यायालय ने 'नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम प्रणय सेठी एवं अन्य' के ऐतिहासिक निर्णय का उल्लेख किया, जिसमें क्षतिपूर्ति निर्धारण के लिए कुछ पारंपरिक मदों, जैसे संपत्ति की हानि, साहचर्य की हानि तथा अंत्येष्टि व्यय को मान्यता प्रदान की गई थी। 'शिशुपाल उर्फ शिशराम एवं अन्य बनाम सुरजीत एवं अन्य' मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने इस न्यायिक दृष्टिकोण का विस्तार करते हुए 'घरेलू देखभाल की हानि' को भी एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्वीकार किया है। यह परिवर्तन केवल विधिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत अर्थपूर्ण है। किसी गृहिणी की मृत्यु के पश्चात परिवार को केवल भावनात्मक आघात ही नहीं पहुंचता, बल्कि वर्षों से संचालित हो रही देखभाल, मार्गदर्शन, संरक्षण और घरेलू प्रबंधन की वह व्यवस्था भी प्रभावित होती है, जिसका कोई प्रत्यक्ष आर्थिक मूल्य निर्धारित नहीं किया जाता। न्यायालय ने वस्तुतः इसी अदृश्य हानि को पहचानने और उसका न्यायसंगत मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। इस निर्णय का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष वह व्यापक आर्थिक दृष्टिकोण है, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने अपनाया है। न्यायालय ने स्वीकार किया कि महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक घरेलू एवं देखभाल संबंधी कार्य का आर्थिक मूल्य भारत की सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 15 से 17 प्रतिशत के समतुल्य आंका गया है। इसके बावजूद यह श्रम न तो औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा माना जाता है और न ही उसे वह सामाजिक तथा आर्थिक मान्यता प्राप्त होती है, जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी है। वस्तुतः यह स्थिति भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के उस महत्वपूर्ण योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करती है, जो प्रतिदिन किया तो जाता है, किंतु प्रायः औपचारिक गणनाओं और नीतिगत विमर्श में पर्याप्त स्थान नहीं पाता। निश्चय ही यह निर्णय उस व्यापक सामाजिक परिवर्तन की ओर भी संकेत करता है, जिसमें पारिवारिक भूमिकाओं को पारंपरिक रूढ़ धारणाओं से परे जाकर समझने की आवश्यकता है। बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में घर तथा परिवार की देखभाल का दायित्व केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रह गया है। आज अनेक परिवारों में पुरुष भी बच्चों के पालन-पोषण, घरेलू प्रबंधन तथा परिवार की दैनिक आवश्यकताओं के निर्वहन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। ऐसी स्थिति में 'होम मेकर' की अवधारणा को केवल किसी एक लिंग से जोड़कर देखना न तो सामाजिक यथार्थ के अनुरूप है और न ही न्याय के व्यापक सिद्धांतों के। घरेलू श्रम का मूल्य उसके स्वरूप और योगदान में निहित है, न कि उसे करने वाले व्यक्ति के लिंग में। संभवतः यही कारण है कि सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में 'गृहिणी' के प्रश्न पर विचार करते हुए भी घरेलू देखभाल और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के महत्व को अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया है। निस्संदेह किसी गृहिणी के योगदान का पूर्ण मूल्यांकन किसी धनराशि में नहीं किया जा सकता।

कॉकरोच पार्टी के मुद्दे और पंजाब में उनकी प्रासंगिकता



निर्मल संधू

भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा की गई एक टिप्पणी, शायद गैर-इरादतन, के परिणामस्वरूप 'कॉकरोच जनता पार्टी' का अप्रत्याशित उद्भव हुआ है, पहले डिजिटल स्वरूप में और अब साक्षात रूप में भी। इसने युवाओं को अपनी ओर खींचा है, खासकर उन्हें जो शिक्षा में हुई धांधलियों से नाराज हैं या जो बेरोजगार हैं या जो कम तन्खवाह की नौकरियों में जीवन निर्वाह के लिए जूझ रहे हैं। पंजाब को ज़्यादा चिंता करनी चाहिए क्योंकि अक्तूबर-दिसंबर 2025 के अवधिक श्रम सर्वे के मुताबिक, सूबे की युवा बेरोज़गारी दर 19 फीसदी के साथ काफ़ी अधिक है। चिंतनीय, कि यह अखिल भारतीय औसत (14.8 प्रतिशत) से ज़्यादा है। इसकी तुलना में, हरियाणा में बेरोज़गारी दर घटकर 12.4 फीसद रह गई। ऐसा क्यों है, यह सवाल पंजाबी पूछ सकते हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान, जिन्हें मीडिया की सुर्खियों में रहना पसंद है और जो अकसर अकाली और कांग्रेस विरोधियों का मज़ाक उड़ाते हैं, शायद इसका जवाब न दे पाएं। वे करीब

> **अगर सीमित साधनों का इस्तेमाल समझदारी से विकास करने पर किया जाए, तो राजनीतिक फ़ायदा होने में समय अवश्य लग सकता है लेकिन मिलता जरूर है। केवल अर्थपूर्ण एवं गुणवत्ता वाली कारगुजारी ही समृद्धि व कर-वसूली बढ़ा सकती है, जिससे राज्य को ज़रूरतमंदों की मदद करने में सहायता मिल सकती है। कर्ज लेकर भलाई कार्य करना सामान्य समझ से परे है। सबको मुफ्त में रेवड़ी बांटना अकर्मयण्ता को बढ़ावा देता है। खाते-पीते पंजाबी भी राज्य पर निर्भर होकर आत्म-सम्मान खो रहे।**

66,000 नौकरियां देने की शेखी बघारते हैं, लेकिन उस दौरान सेवानिवृत्त हुए लोगों की वजह से पैदा रिक्तियों की बात नहीं करते। नौकरियां तब पैदा होती हैं, जब विकास हो। पंजाब की 6.1 विकास दर राष्ट्रीय औसत 7.4 फीसदी से नीचे है। जबकि रिजर्व बैंक ने पिछले हफ्ते भारत की सकल घरेलू उत्पाद दर को घटाकर 6.6 फीसदी किया है। खाद की कमी और महंगे हुए वाहन ईंधन की वजह से खेती और उद्योगों पर पड़ने वाले प्रभाव से पंजाब को बड़ा नुकसान हो सकता है। महंगाई दर बढ़ने से सामाजिक चिंताएं बढ़ेंगी। युवाओं के लिए स्थिति कुल मिलाकर बदतर होती जा रही है। डॉलर के मुकाबले गिरता रुपया जहां विदेश यात्रा और पढ़ाई को मध्य वर्ग की पहुंच से बाहर कर रहा वहीं विदेश जाकर बसने के लिए कनाडा व अमेरिका जैसे उनके पसंदीदा देश आप्रवासियों के लिए द्वार बंद कर रहे हैं। ब्रेन ड्रेन के नुकसान को एक तरफ रखें तो अगर इन देशों ने महत्वाकांक्षी युवा पंजाबियों को पलायन के बेहतर रास्ते मुहैया न कराए होते तो पंजाब में गंभीर सामाजिक उथल-पुथल देखने को मिल सकती थी। बिगड़ते आर्थिक माहौल और सिकुड़ती विदेशी राहों के असर का अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं। लेकिन क्या पंजाब इस उभरती कड़वी सच्चाई का सामना करने को तैयार है? अपने भविष्य को लेकर उम्मीदें खोकर, युवा नशीले पदार्थों की ओर रुख करते हैं या कभी-



कभार बंदूक उठा लेते हैं। नशा और गैंगस्टर रूपी समस्याएं समाज-व्यवस्था में व्याप्त सड़न की ओर इशारा करती हैं। सरकारी एजेंसियां सिर्फ लक्षणों से जूझ रही हैं। वही नेता, जिनके पास पुराने समाधान हैं, समस्याओं का निदान नहीं कर सकते। बीते शनिवार दिल्ली के जंतर-मंतर पर 'कॉक्रोच जनता पार्टी'के धरने ने राजनीतिक वर्ग के प्रति युवाओं का अविश्वास दर्शाया। ऐसे लोकतांत्रिक आंदोलन कभी-कभी नूतन विचार युक्त नए नेता उभारते हैं। 'कॉक्रोच जनता पार्टी' की लोकप्रियता सियासी दलों को पुराने नेताओं की जगह नए होनहार चेहरे लाने को मजबूर कर सकती है। युवाओं के मुद्दे अभी न तो पंजाब में विपक्षी दलों की चुनाव नीति में शामिल हैं और न ही सत्ताधारी 'आप' की। अधिकांशतः काम चलाऊ फौरी समाधानों के भरोसे रहकर भगवंत मान बड़ी गलती कर रहे हैं। मुफ्त की रेवड़ियां लुटाकर, वे भविष्य की जलधारा में छिपे हिम-शैलों को नज़रअंदाज़ कर, नाजुक किश्ती पर सवार हैं। वोटरों पर लुटाया जाने वाला पैसा,ठप पड़े उद्योगों, ठहरी हुई खेती और खराब सेवाओं में फिर से जान फूंकने में खर्च किया जाना चाहिए। अगर सीमित साधनों का इस्तेमाल समझदारी से विकास करने पर किया जाए, तो राजनीतिक फ़ायदा होने में समय अवश्य लग सकता है लेकिन मिलता जरूर है। केवल अर्थपूर्ण एवं गुणवत्ता वाली कारगुजारी ही समृद्धि व कर-वसूली बढ़ा सकती है, जिससे राज्य को ज़रूरतमंदों की मदद करने में सहायता मिल सकती है। कर्ज लेकर भलाई कार्य करना सामान्य समझ से परे है। सबको मुफ्त में रेवड़ी बांटना अकर्मयण्ता को बढ़ावा देता है। खाते-पीते पंजाबी भी राज्य पर निर्भर होकर आत्म-सम्मान खो रहे । कांग्रेस सांसद धर्मवीर गांधी ने इस बिंदु को ज़ोर देकर उठाया है। लगता है, सियासी दल अतीत से कुछ नहीं सीख रहे। उदार सब्सिडी और करदाताओं के पैसे का भारी मात्रा में इस्तेमाल खुद के प्रचार, वीआईपी सुरक्षा और हेलीकॉप्टर पर करने के बावजूद, पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल और कैप्टन अमरिंदर सिंह,दोनों ही, चुनाव हार गए थे। हालिया निकाय चुनाव सबूत हैं कि 2027 के विधानसभा संग्राम में असल मुकाबला आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच होगा। यदि भाजपा पंजाब के लिए कोई भरोसेमंद आर्थिक मॉडल प्रस्तुत कर पाए, तभी सत्ता की गंभीर दावेदार बन सकती है। पंजाब में नए भाजपा प्रदेशाध्यक्ष केवल सिंह ढिल्लों, उद्योग और उसकी समस्याएं- जिस विषय की समझ उन्हें ज्यादा हो सकती है- पर बोलने के बजाय, जब राजनीतिक बयानबाज़ी और महाराजा रणजीत सिंह के खालसा राज की बातें करते हैं, तो यह उनका जमीनी हकीकत से कटे होना दर्शाता है। अंदरूनी कलह से पीड़ित कांग्रेस को ठोस दलील पेश करनी होगी कि उसे सत्ता क्यों सौंपी जाए, जबकि उसका हर वरिष्ठ नेता सर्वोच्च पद के लिए 'पहले मैं' का खेल खेल रहा है। राहुल गांधी, बेशक, 'कॉकरोचों'के मुद्दे उठा रहे हैं, लेकिन क्या उनके दल के पास युवाओं के लिए कोई स्पष्ट योजना है? एआई से नौकरियों को खतरा बन गया है। क्या उनकी पार्टी ने इस मुद्दे पर गंभीर विचार किया? कौन सा नेता ज्यादा वोट दिला सकता है इस हेतु पता लगाने को सर्वे करना काफी नहीं। पंजाब में पार्टी की डाल और जड़ स्तर पर कारगुजारी का पुनरावलोकन करने की ज़रूरत है। आजमाए-असफल नेताओं की जगह उन लोगों को लाए, जिनके पास नज़रिया हो, ऊर्जा से लबरेज़ हों और पंजाब के पुनः विकास में मददगार हो सकें। सत्ताधारी दल होने के नाते, आम आदमी पार्टी उच्च पायदान पर है। लेकिन कुछ चमक खो चुकी है। 'आप' सरकार इस कदर प्रचार-चालित है कि उसकी हर उपलब्धि पर संशय करना पड़ रहा है। उसके बहु प्रचारित नशा-निरोधक अभियान की सफलता जमीन पर महसूस नहीं हो रही। जहां यह श्रेय वाकई भगवंत मान सरकार को जाता है कि स्टेडियम बनवाए और खेलों को बढ़ावा दे रही वहीं सबसे बड़ी उपलब्धि शिक्षा क्षेत्र में पाई है। नीति आयोग ने अपनी नवीनतम स्कूली शिक्षा व्यवस्था रिपोर्ट में पंजाब को प्रथम स्थान दिया। यह वर्ष 2020 के 27वें स्थान से एक बड़ी छलांग है । इस सफलता का श्रेय प्रचारबाज़ी शिक्षा मंत्री हरजोत बैंस के अलावा 'आप' के केंद्रीय नेता मनीष सिसोदिया को भी जाता है। हालांकि, कॉलेज-यूनिवर्सिटी स्तर की शिक्षा में चुनौतियां बरकरार हैं। विगत की सरकारों ने निजी शिक्षा संस्थानों की तरक्की की एवज़ में सरकारी यूनिवर्सिटी और कॉलेजों को फंड से वंचित रखा। नतीजन, खर्च में भारी बढ़ोतरी ने उच्च शिक्षा को निम्न-मध्य वर्ग के छात्रों की पहुंच से दूर कर दिया। स्वास्थ्य क्षेत्र हो, शिक्षा या फिर रोजगार, नुकसान में ज्यादातर ग्रामीण युवा रहता है। जीवनयापन की बढ़ती लागत के चलते युवा और किसान का कभी-कभी रोष उजागर होता है। हालांकि, बेरोज़गारों को परजीवी ठहरा कर उपहास उड़ाने की प्रतिक्रिया हो सकती है। राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सरकारों को युवाओं की समस्याओं को गंभीरता से न लेने के जोखिमों से सतर्क हो जाना चाहिए। रोष बढ़ने से रोकने में त्वरित उपाय मददगार होंगे।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मध्यप्रदेश में आम उत्पादन की बढ़ती संभावनाएँ और 'मैंगो फेस्टिवल 2026'

अनिल वशिष्ठ



भारत कृषि प्रधान देश होने के साथ उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में भी विश्व स्तर पर अपनी मजबूत पहचान रखता है। फलों, फूलों और सब्जियों के उत्पादन के माध्यम से देश की कृषि अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिल रही है। इसी क्रम में मध्यप्रदेश ने उद्यानिकी क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित करते हुए देश के अग्रणी राज्यों में अपना स्थान बनाया है। विशेष रूप से फल उत्पादन के क्षेत्र में प्रदेश देश में चौथे स्थान पर है। भारतवर्ष में कुल लगभग 1176 लाख मीट्रिक टन फलों का उत्पादन होता है, जिसमें से लगभग 102 लाख मीट्रिक टन उत्पादन मध्यप्रदेश में किया जा रहा है। यह उपलब्धि प्रदेश के किसानों की मेहनत, अनुकूल जलवायु और राज्य सरकार की योजनाओं का प्रतिफल है। फल उत्पादन की दृष्टि से यदि किसी एक फल की लोकप्रियता और आर्थिक महत्व की चर्चा की जाए तो आम का नाम सबसे पहले आता है। आम को 'फलों का राजा' कहा जाता है, मध्यप्रदेश में इसका उत्पादन निरंतर बढ़ रहा है। पिछले चार वर्षों के आंकड़ों का अध्ययन करें तो प्रदेश में आम उत्पादन में लगभग 72 हजार मैट्रिक टन की वृद्धि दर्ज की गई है। यह वृद्धि इस बात का स्पष्ट संकेत है कि प्रदेश के किसान अब पारंपरिक खेती के साथ-साथ उद्यानिकी फसलों, विशेषकर आम उत्पादन की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। मध्यप्रदेश की जलवायु और भौगोलिक परिस्थितियाँ आम उत्पादन के लिए अत्यंत अनुकूल सिद्ध हो रही हैं। प्रदेश के विभिन्न अंचलों में अलग-अलग किस्मों के आम का उत्पादन किसानों को बेहतर आय उपलब्ध करा रहा है। यही कारण है कि राज्य सरकार द्वारा आम उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। इसी दिशा में 13 जून 2026 को प्रदेश की राजधानी भोपाल में 'मैंगो फेस्टिवल 2026' अर्थात 'आम महोत्सव' आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। यह आयोजन केवल एक प्रदर्शनी या उत्सव नहीं होगा, बल्कि प्रदेश के आम उत्पादक किसानों, उद्यानिकी विशेषज्ञों, व्यापारियों और उपभोक्ताओं के बीच संवाद और विपणन का महत्वपूर्ण मंच बनेगा। महोत्सव के माध्यम से प्रदेश की विभिन्न किस्मों के आमों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही किसानों को आधुनिक तकनीक, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन संबंधी जानकारी भी उपलब्ध कराई जाएगी। इस वर्ष प्रदेश के प्रमुख जिलों – अलीराजपुर, रीवा, शहडोल, सीधी, सतना, नर्मदापुरम, अनूपपुर और नरसिंहपुर में लगभग 3200 हेक्टेयर क्षेत्र में आम उत्पादन विस्तार की कार्ययोजना तैयार की गई है। यह योजना किसानों को उद्यानिकी आधारित खेती की ओर प्रेरित करेगी और प्रदेश में आम उत्पादन का दायरा और अधिक विस्तृत होगा। प्रदेश के लिए गौरव का विषय यह भी है कि सुंदरजा आम को अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त हुई है। रीवा जिले के प्रसिद्ध सुंदरजा आम को जीआई टैग मिलने से न केवल इसकी विशिष्टता को वैश्विक पहचान मिली है, बल्कि इससे स्थानीय किसानों को आर्थिक लाभ और बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त होने की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं। सुंदरजा आम अपनी मिठास, सुगंध और विशिष्ट स्वाद के कारण देश-विदेश में लोकप्रिय हो रहा है। भारत सरकार की प्राथमिकता छोटे और सीमांत किसानों को पारंपरिक खेती से आगे बढ़ाकर नकदी फसलों, फल, फूल एवं सब्जी उत्पादन की ओर प्रोत्साहित करना है। उद्यानिकी फसलें किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि इनकी बाजार में मांग निरंतर बनी रहती है और उत्पादन से अपेक्षाकृत अधिक लाभ प्राप्त होता है। आम जैसी फसलें किसानों को दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता प्रदान कर सकती हैं। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को 'कृषि वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय भी इसी सोच को आगे बढ़ाने वाला कदम है। कृषि एवं उद्यानिकी क्षेत्र को सशक्त बनाने के उद्देश्य से अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। किसानों को गुणवत्तायुक्त पौधे, तकनीकी प्रशिक्षण, सिंचाई सुविधाएँ और विपणन सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। इससे प्रदेश में उद्यानिकी फसलों के प्रति किसानों का विश्वास और उत्साह बढ़ा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक खेती और मूल्य संवर्धन के माध्यम से आम उत्पादन को और अधिक बढ़ावा दिया जाए। यदि किसानों को प्रसंस्करण इकाइयों, निर्यात सुविधाओं और बेहतर बाजार व्यवस्था से जोड़ा जाए तो मध्यप्रदेश देश ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आम उत्पादन का महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है। 'मैंगो फेस्टिवल' 2026' इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध होगा। यह आयोजन न केवल प्रदेश की उद्यानिकी क्षमता को प्रदर्शित करेगा, बल्कि किसानों की आय वृद्धि, कृषि विविधीकरण और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी मील का पत्थर साबित होगा। मध्यप्रदेश में आम उत्पादन के प्रति बढ़ता रुझान यह दर्शाता है कि आने वाले समय में प्रदेश उद्यानिकी क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगा और 'फलों के राजा' आम के माध्यम से किसानों की समृद्धि का नया अध्याय लिखा जाएगा।

डिजिटल दीदी पूनम खेल-खेल में संवार रही नौनिहालों का भविष्य





सरोज वार्ता/ब्यूरो

डिजिटल प्लेटफॉर्म का सही इस्तेमाल अगर समाज को बदलने के लिए किया जाए, तो परिणाम कितने सुखद हो सकते हैं, इसकी मिसाल पेश की है मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले की एक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने। परासिया परियोजना के वार्ड क्रमांक 12 की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पूनम चौरसिया आज सोशल मीडिया पर एक चर्चित नाम बन चुकी हैं। पूनम अपनी आंगनवाड़ी के बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाने और उनके संपूर्ण विकास के लिए अनूठे प्रयोग कर रही हैं। पूनम चौरसिया के यूट्यूब चैनल '@parasi-awalipoonam' की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस चैनल पर 71 हजार 600 से अधिक सब्सक्राइबर्स जुड़ चुके हैं। खेल-खेल में प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल और शिक्षा गतिविधियों को सिखाते हुए पूनम अब तक 6 हजार 800 से ज्यादा वीडियो अपलोड कर चुकी हैं, जिन्हें 7 करोड़ 48 लाख से अधिक बार देखा जा चुका है। यूट्यूब ही नहीं, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर भी उनकी वीडियो खूब पसंद किए जा रहे हैं।

● **स्थानीय संसाधनों से शिक्षा को बनाया मजेदार:** एम.कॉम शिक्षित पूनम साल 2020 से आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में सेवाएं दे रही हैं। वे भारत सरकार के 48 सप्ताह के 'आधारशिला पाठ्यक्रम' को रटाने के बजाय बेहद मनोरंजक तरीके से बच्चों को सिखाती हैं। पूनम बच्चों के लिये पाठ्यक्रम को इतना आसान और मजेदार बना देती हैं कि बच्चे खुद व खुद पढ़ाई की ओर खिचें चले आते है। खास बात यह है कि इन गतिविधियों के लिए वे किसी महंगे सामान का इस्तेमाल नहीं करतीं, बल्कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों जैसे कंकड़, पत्थर, रंग-बिरंगे कागज और घरेलू वस्तुओं के जरिए बच्चों को अक्षर ज्ञान, रंगों की पहचान, शेप और शैडो (आकृतियां और परछाईं) जैसी पेचीदा चीजें सहजता से सिखा देती हैं।

● **पढ़ाई भी और पोषण भी: आंगनवाड़ी बनी 'स्मार्ट क्लास':** मध्यप्रदेश के 98 हजार से अधिक आंगनवाड़ी केंद्रों में 30 लाख से अधिक बच्चों को पोषण, स्वास्थ्य और शाला पूर्व शिक्षा दी जा रही है। आंगनवाड़ी देश का एकमात्र ऐसा संस्थान है जहां पोषण के साथ पढ़ाई भी होती है। पूनम ने इस अवधारणा को पूरी तरह धरातल पर उतारा है। उन्होंने भारत सरकार के 'पोषण भी-पढ़ाई भी' अभियान के तहत प्रथम चरण का प्रशिक्षण लिया और उत्कृष्ट कार्य के चलते दूसरे चरण में वे 'स्टार चैंपियन कार्यकर्ता' के रूप में चुनी गईं। इसके बाद उन्होंने 'निपसिड' से मास्टर ट्रेनर के रूप में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्तमान में उनके केंद्र में 3 से 6 आयु वर्ग के 43 बच्चे दर्ज हैं, जिनमें से 22 बच्चे नियमित रूप से शाला पूर्व शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

● **अभिभावकों में बढ़ा भरोसा, निजी स्कूलों को मिल रही टक्कर:** पूनम के इस अभिनव प्रयास का सबसे बड़ा असर स्थानीय समाज पर पड़ा है। क्षेत्र के अभिभावक निजी स्कूलों को छोड़कर अपने बच्चों को पूनम की आंगनवाड़ी केंद्र में भेज रहे हैं। माता-पिता स्वयं बच्चों को केंद्र पर छोड़ने और लेने आते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि पूनम ने आंगनवाड़ी के पारंपरिक ढर्रे को बदलकर उसे एक आधुनिक शिक्षा केंद्र का रूप दे दिया है। स्थिति यह है कि जब यहां के बच्चे आगे चलकर प्राथमिक स्कूलों में प्रवेश लेते हैं, तो अभिभावक गर्व से कहते हैं कि 'ये पूनम की आंगनवाड़ी से पढ़कर आए हैं।'

● **अन्य कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्त्रोत**

पूनम चौरसिया की यह अनूठी पहल अन्य आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिये प्रेरणा है। डिजिटल माध्यमों का सही उपयोग कर सरल गतिविधियों और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों से बच्चों को शिक्षा के प्रति आकर्षित किया जा सकता है।

सुशासन से संवरता छत्तीसगढ़- विकसित भारत का नया रोल मॉडल



विष्णु वर्मा, सहायक संचालक

छत्तीसगढ़ की माटी में इन दिनों विकास और सुशासन की एक नई बयार बह रही है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य ने प्रगति की एक ऐसी छलांग लगाई है, जो न केवल छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदल रही है, बल्कि इसे देश के नक्शे पर विकसित भारत का एक चमकता हुआ रोल मॉडल भी बना रही है। केंद्र की दूरदर्शी नीतियों और राज्य सरकार की मजबूत इच्छाशक्ति के मेल से छत्तीसगढ़ में आज डबल इंजन की सरकार धरातल पर साफ महसूस की जा रही है। विकास की इस नई इबारत में समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति की खुशहाली सबसे ऊपर है।

● गरीब का अपना घर: पहली प्राथमिकता, ठोस कदम

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने सत्ता संभालते ही सबसे पहला और ऐतिहासिक फैसला समाज के सबसे कमजोर तबके के हक में लिया किया वह था हर गरीब को अपना पक्का मकान देना। सरकार बनते ही प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) को जो रफ्तार मिली, उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। हाल ही में मुख्यमंत्री के विशेष प्रयासों से एक ही क्लिक में 3 लाख लाभार्थियों के खातों में 1,200 करोड़ रुपये की राशि सीधे ट्रांसफर की गई। सिर्फ गाँव ही नहीं, बल्कि PMAY× 2-0 के जरिए शहरी और मध्यम आय वर्ग के परिवारों को भी बड़ी राहत दी गई है। पुरानी विसंगतियों और तकनीकी खामियों को दूर करने के लिए पूरी व्यवस्था में MIS Integration (प्रशासनिक और तकनीकी सुधार) लागू किया गया है, ताकि बिना किसी बिचौलिए और देरी के हर हकदार को उसका घर मिल सके।

● केंद्र का साथ और छत्तीसगढ़ को ऐतिहासिक सौगात

मुख्यमंत्री साय के रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर केंद्र सरकार ने भी अपनी मुहर लगाई है। बेहतर वित्तीय प्रबंधन और पारदर्शी शासन का ही नतीजा है कि केंद्र ने छत्तीसगढ़ को 4,400 करोड़ रुपये की विशेष सहायता मंजूर की है, जो देश के किसी भी राज्य को मिली अब तक की सबसे बड़ी प्रोत्साहन राशि है। इसके साथ ही, केंद्रीय बजट 2026-27 में छत्तीसगढ़ के लिए करीब 52 हजार करोड़ रुपये के भारी-भरकम वित्तीय सहयोग की घोषणा की गई है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 4,500 करोड़ रुपये अधिक है। यह भारी आवंटन राज्य के बुनियादी ढांचे के कायाकल्प के लिए गेम-चेंजर साबित होने वाला है।

● इंफ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल कनेक्टिविटी का स्वर्णिम युग

छत्तीसगढ़ आज सड़कों, ऊर्जा और डिजिटल क्रांति के एक नए दौर से गुजर रहा है। राज्य में सड़कों का जाल बिछता जा रहा है। राज्य में 3,153 किलोमीटर लंबे राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण तेजी से चल रहा है। लगभग 4,500 करोड़ रुपये की लागत से रायपुर-विशाखापत्तनम और रायपुर-रांची जैसे इकोनॉमिक कॉरिडोर पर काम युद्ध स्तर पर जारी है। साथ ही केंद्रीय सड़क निधि से 664 करोड़ रुपये की लागत से जिला मार्गों को सुधारा जा रहा है।

● ऊर्जा और डिजिटल हाईवे

दूरदराज के अंचलों में सौर ऊर्जा और माइक्रो-ग्रिड के माध्यम से निर्बाध बिजली पहुँचाई जा रही है। वहीं, डिजिटल इंडिया के तहत बस्तर जैसे संवेदनशील और सुदूर क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड और बीएसएनएल नेटवर्क का जाल बिछाया गया है, जिससे गाँवों में भी शिक्षा, बैंकिंग और ई-कॉमर्स की सुविधाएं आम हो गई हैं।

● राष्ट्रीय पटल पर छत्तीसगढ़ का गौरव

साय सरकार के जमीन से जुड़े कामकाज की गूंज देश की राजधानी तक सुनाई दे रही है। राज्य को उसकी उत्कृष्ट योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। पंचायती राज मंत्रालय द्वारा छत्तीसगढ़ को एक साथ 12 राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार दिए गए हैं, जिनमें प्रतिष्ठित 'दीनदयाल उपाध्याय पंचायत सशक्तीकरण पुरस्कार' भी शामिल है। मनरेगा, स्वास्थ्य और लघु वनोपज संग्रहण जैसे क्षेत्रों में शानदार प्रदर्शन के लिए राज्य ने 10 अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार अपने नाम किए हैं। स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करते हुए आयुष्मान भारत योजना को और प्रभावी बनाया गया है, साथ ही राज्य के 5 जिलों में नए मेडिकल कॉलेजों के जरिए



चिकित्सा तंत्र को आधुनिक रूप दिया जा रहा है।

● निवेश, उद्योग और युवाओं की नई उड़ान

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की उद्योग-अनुकूल नीतियों और सिंगल-विंडो सिस्टम ने निवेशकों में एक नया भरोसा जगाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा राज्य को 34,427 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की सौगात दी गई है। स्टील और माइनिंग के पारंपरिक उद्योगों के साथ-साथ अब छत्तीसगढ़ में खाद्य-प्रसंस्करण और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में भारी निवेश आ रहा है। यह नया औद्योगिक माहौल राज्य के युवाओं के लिए केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि उनके हुनर के मुताबिक कौशल-युक्त और स्थायी रोजगार के नए रास्ते खोल रहा है।

● एक समृद्ध और आत्मनिर्भर छत्तीसगढ़

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ आज सिर्फ खनिज और उद्योगों की रीढ़ नहीं रह गया है, बल्कि यह अंत्योदय (अंतिम व्यक्ति के उदय) की भावना को सच करने वाला राज्य बन चुका है। तमाम प्रशासनिक चुनौतियों को मात देते हुए साय सरकार ने ग्रामीण आत्मनिर्भरता, शहरी आधुनिकता और युवाओं के सपनों को एक नया आसमान दिया है। केंद्र सरकार के मजबूत सहयोग और मुख्यमंत्री की दृढ़ इच्छाशक्ति के दम पर छत्तीसगढ़ आत्मविश्वास के साथ विकसित भारत के अग्रणी राज्य के रूप में अपनी पहचान मजबूत कर रहा है।

खाक हुई जिंदगियां



सरोज वार्ता/ब्यूरो

दिल्ली में मालवीय नगर स्थित एक होटल में हुए अग्निकांड के बाद भले ही गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया हो, लेकिन सवाल है कि अग्निकांड में मरे लोगों का जीवन कौन लौटाएगा? आखिर देश की राजधानी में अकसर होने वाले अग्निकांडों का सिलसिला कब और कैसे खत्म होगा? क्या इस आपराधिक लापरवाही की जवाबदेही तय होगी? एक बार फिर अंधे लालच और आंख मूंदे तंत्र की लापरवाही से बुधवार को एक होटल में लगी भीषण आग में 21 लोगों की मौत हो गई। अभी भी कई लोग जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे हैं। मरने वालों का आंकड़ा बढ़ने की आशंका भी जतायी जा रही है। घटना ने एक बार फिर होटल, गेस्टहाउस और रेस्तरां संचालन की निगरानी करने वाली व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। विडंबना देखिए कि मरने वालों में अधिकांश विदेशी लोग भी हैं, जो सस्ता इलाज कराने भारत आए थे। एक ही परिवार के आठ लोगों के अग्निकांड का शिकार होना बेहद दुखद है। विडंबना देखिए कि जिस एक मंजिला भवन को छह कमरों का गेस्ट हाउस चलाने की अनुमति मिली थी, वहां शासन-प्रशासन की नाक के नीचे एक छह मंजिला होटल बना दिया गया, जिसमें 26 कमरे और रेस्टोरेंट संचालित किया जा रहा था। जिसमें अस्सी से सौ लोगों की मौजूदगी बतायी जा रही है। निश्चित रूप से यह महज आग से जुड़ा हादसा नहीं है बल्कि होटल संचालन से जुड़े नियमों की अनदेखी, निगरानी करने वाले विभागों की लापरवाही और तंत्र की विफलता का परिचायक है। लेकिन गाहे-बगाहे होने वाले अग्निकांडों के बावजूद तंत्र की काहिली बदस्तूर जारी है। जांच के दायरे में घटना के बाद फरार होटल मालिक ही नहीं, बल्कि वे अधिकारी भी जिम्मेदार हैं जिन्होंने इसको संचालित करने के नियमों का अनुपालन नहीं किया और भवन निर्माण की स्वीकृति व उपयोग की अनुमति दी। यह जानते हुए भी कि होटल में निकासी का मार्ग बेहद संकरा है और अग्निशमन की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध नहीं हैं। दिल्ली के होटल में हुए अग्निकांड के बारे में बताते हैं कि आपातकालीन निकासी के अभाव व सुरक्षा मानकों का पालन न होने से ज्यादा मौतें हुई। धुंआ निकलने की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण भी ज्यादा लोग दम घुटने से मौत के मुंह में समा गए। आखिर प्रशासन के अधिकारियों ने यह क्यों नहीं देखा कि स्वीकृत क्षमता से चार गुना विस्तार कर लिया गया है। गेस्ट हाउस के निर्माण में तमाम लाइसेंस शर्तों का घोर उल्लंघन हुआ। आपातकालीन निकासी की व्यवस्था न होने के कारण लोग अपनी जान बचाने के लिये, बदहवासी में ऊपरी मंजिलों से कूदते नजर आए। होटल के बाहर फैले बिजली के तार और अग्निकांड में हुई व्यापक क्षति बताती है कि विद्युत सुरक्षा मानकों का भी पालन ठीक से नहीं हुआ। जाहिर बात है कि गेस्ट हाउस से होटल बनाने से, उपयोग में हुए बदलाव की निगरानी की जिम्मेदारी स्थानीय नगर निकाय की होती है। यदि वर्षों से यह अवैध रूप से संचालित था, तो जांच व कार्रवाई क्यों नहीं की गई। यदि इसकी अग्नि सुरक्षा को लेकर एनओसी जारी की भी गई थी तो उसके बाद निरीक्षण व नियमों का अनुपालन क्यों सुनिश्चित नहीं किया गया? जाहिर बात है कि लाइसेंस प्राप्त करने वाले होटलों व रेस्टोरेंट की नियमित जांच करके इनके मालिकों की जवाबदेही भी सुनिश्चित की जानी चाहिए थी। क्यों किसी भी विभाग ने निरीक्षण व कार्रवाई की जहमत नहीं उठायी? क्या निरीक्षण करने वाले अधिकारी ले-देकर खामोश होकर बैठ गए? विडंबना देखिए कि बेसमेंट में कमरे,किचन बना दिए गए, लेकिन वेंटिलेशन व इमरजेंसी एग्जिट का कोई प्रावधान नहीं था। जिससे होटल धुंआ निकासी की चिमनी बनकर रह गया और तमाम लोगों की दम घुटने से मौत हो गई। बताते हैं कि आरोपी होटल मालिक आसपास में ही कुछ पार्टनरों के साथ मिलकर तीन होटल संचालित कर रहा था और सब ही जगह आपराधिक लापरवाही नजर आई। मोटे मुनाफे के लिये लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ किया जा रहा था। लेकिन स्थानीय प्रशासन व जवाबदेह विभाग बेपरवाह बने रहे। निश्चय ही यह स्थिति सख्त कार्रवाई के बाद बदलनी चाहिए।

पंजाब में कानून व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक : सीएम नायब सैनी



सरोज वार्ता/ब्यूरो

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी आपस में मिली हुई हैं और दोनों की विचारधारा एक जैसी है। पंजाब में हुए निकाय चुनावों में जिस प्रकार कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ाई गईं, उसने लोकतांत्रिक व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने कहा कि बैलट पेपर से चुनाव करवाकर पंजाब सरकार ने यह साबित कर दिया कि वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपनी हार से डरी हुई थी। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी कपूरथला पहुंचे, जहां उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि पंजाब सरकार ने जनता से बड़े-बड़े वादे किए, लेकिन उन्हें पूरा करने में विफल रही। जनता अब समझ चुकी है कि केवल घोषणाएं करने और सब्जबाग दिखाने से विकास नहीं होता। मुख्यमंत्री ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार को जनता को यह बताना चाहिए कि चुनावों के दौरान किए गए वादों में से आखिर कितने वादे पूरे किए गए। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य में विकास कार्यों के नाम पर अपेक्षित कार्य नहीं हुए और

● उन्होंने कहा कि बैलट पेपर से चुनाव करवाकर पंजाब सरकार ने यह साबित कर दिया कि वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपनी हार से डरी हुई थी। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी कपूरथला पहुंचे, जहां उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि पंजाब सरकार ने जनता से बड़े-बड़े वादे किए, लेकिन उन्हें पूरा करने में विफल रही।

कानून व्यवस्था की स्थिति लगातार खराब हुई है। पंजाब में गैंगस्टरवाद को बढ़ावा मिला, जिससे आम नागरिकों में असुरक्षा की भावना बढ़ी है। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार द्वारा नशे के खिलाफ चलाई गई 'युद्ध नशे विरुद्ध' मुहिम भी अपेक्षित परिणाम देने में असफल रही है। युवाओं को नशे से बचाने और नशे की समस्या को खत्म करने के लिए ठोस कार्रवाई की बजाय केवल प्रचार पर अधिक ध्यान दिया गया। सरकार को इस दिशा में गंभीर प्रयास करने चाहिए थे, लेकिन धरातल पर अपेक्षित परिणाम दिखाई नहीं दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा में डबल इंजन सरकार ने जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों तक सुविधाएं पहुंचाने का कार्य किया है। केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना के साथ राज्य सरकार की चिरायु योजना को जोड़कर प्रदेश के लाखों परिवारों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ दिया गया है। गरीब और जरूरतमंद लोगों को मुफ्त इलाज उपलब्ध कराने की दिशा में सरकार ने प्रभावी कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब की जनता अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और विकासपरक नीतियों पर विश्वास जता रही है तथा आने वाले समय में पंजाब में कमल खिलाने का कार्य करेगी। जनता विकास, सुशासन और जवाबदेही की राजनीति चाहती है तथा केवल वादों से अब संतुष्ट नहीं होगी।

हरियाणा सरकार गुरुग्राम में 'मेक इन हरियाणा' पॉलिसी और 9 नई सेक्टरल पॉलिसी करेगी लॉन्च



सरोज वार्ता/ब्यूरो

हरियाणा सरकार 1 जून, 2026 को गुरुग्राम में आयोजित होने वाले एक बड़े उद्योग एवं निवेश कार्यक्रम में अपनी फ्लैगशिप 'मेक इन हरियाणा' पॉलिसी के साथ 9 नई सेक्टरल पॉलिसियों का शुभारंभ करेगी। यह कार्यक्रम मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी और उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित होगा। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिकारी, उद्योग जगत के प्रतिनिधि, निवेशक, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, विदेशी प्रतिनिधिमंडल तथा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हितधारक भाग लेंगे। सरकारी प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि नई पॉलिसी रूपरेखा हरियाणा को देश के अग्रणी विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) और निवेश गंतव्य के रूप में और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में तैयार की गई है। इन नीतियों का उद्देश्य औद्योगिक विकास को गति देना, क्षेत्र-विशिष्ट औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना, एमएसएमई को प्रोत्साहन देना, रोजगार के अवसर सृजित करना, कारोबार सुगमता को बढ़ावा देना तथा भविष्य उन्मुख औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करना है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षेत्रों की अग्रणी कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापनों (रूब्हाह्य) का आदान-प्रदान भी किया जाएगा, जो हरियाणा की औद्योगिक प्रगति और भविष्य की विकास दृष्टि में निवेशकों के मजबूत विश्वास को दर्शाता है। प्रवक्ता ने बताया कि नई नीति व्यवस्था तेज़ और प्रभावी प्रशासन, उद्योगों के साथ मजबूत साझेदारी, सुदृढ़ औद्योगिक तंत्र तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप विकास के प्रति हरियाणा सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। मजबूत कनेक्टिविटी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तक राजनीतिक पहुंच, विश्वस्तरीय अवसंरचना, परिपक्व औद्योगिक आधार तथा तेजी से विकसित हो रहे लॉजिस्टिक्स नेटवर्क के कारण हरियाणा ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फूड प्रोसेसिंग, एडवांस मैन्युफैक्चरिंग, डेटा सेंटर, AVGC, फार्मास्युटिकल एवं मेडिकल डिवाइस, खिलौना एवं खेल सामग्री निर्माण, ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में निवेश के लिए पसंदीदा गंतव्य के रूप में उभर रहा है। कार्यक्रम के दौरान राज्य में औद्योगिक विकास और निवेशक सुविधा को और अधिक सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कुछ महत्वपूर्ण नई घोषणाएं भी की जाएंगी। राज्य सरकार ने सक्रिय प्रशासन, निवेशक-केंद्रित सुविधा तंत्र और उद्योगोन्मुख सुधारों के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

● सरकारी प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि नई पॉलिसी रूपरेखा हरियाणा को देश के अग्रणी विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) और निवेश गंतव्य के रूप में और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में तैयार की गई है।

आप सभी का धन्यवाद

सरोज वार्ता के बढ़ते कदम

सरोज के सफल 12 वर्ष का सफ़र



सरोज वार्ता

आप सभी सुधी पाठक, विज्ञापनदाताओं का हार्दिक आभार प्रकट करता है जिन्होने सरोज वार्ता का हर कदम पर साथ दिया

यूपी का विधाता अन्नदाता



3.12 करोड़ किसानों को
प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि
₹99 हजार करोड़+
की राशि अंतरित

रिकॉर्ड गन्ना मूल्य भुगतान
₹3.15 लाख करोड़+
गन्ना मूल्य ₹315 से बढ़ाकर
₹400 प्रति क्विंटल

बिचौलिया मुक्त बाजार
ई-मंडी में 6.42 करोड़+ पर्चियां

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
3.53 करोड़+ किसानों
को क्षतिपूर्ति

किसानों को कार्बन क्रेडिट धनराशि वितरित करने वाला
प्रथम राज्य

पीएम कुसुम योजना के अंतर्गत
86 हजार+
सोलर पंपों की स्थापना

निःशुल्क बाजार भाव एवं मौसम की जानकारी हेतु
'उत्तर प्रदेश मंडी भाव'
मोबाइल ऐप

86 लाख+
लघु/सीमांत किसानों का फसल ऋण माफ



विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

Coming Soon

Kavya Fashion Products





www.kavyafashionproducts.com





